बाइनरी जेन्डर व्यवस्था को तोड़ते हुए

जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित क्वीयर व्यक्तियों की अनेक जेन्डर पहचानों में जी गई वास्तविकताओं और मुद्दों को समझने का एक प्रयास

लेबिया – एक क्वीयर नारीवादी एल बी टी संगठन द्वारा एक अध्ययन

जून 2014

PUBLISHED BY: LABIA - A QUEER FEMINIST LBT COLLECTIVE

CONTACT FOR COPIES: STREE.SANGAM@GMAIL.COM

WWW.LABIACOLLECTIVE.ORG

PRINTED BY: IMPRESSION GRAPHICS; 203, HARIPAD SOCIETY, MUMBAI 400099.

SUGGESTED CONTRIBUTION: Rs 100

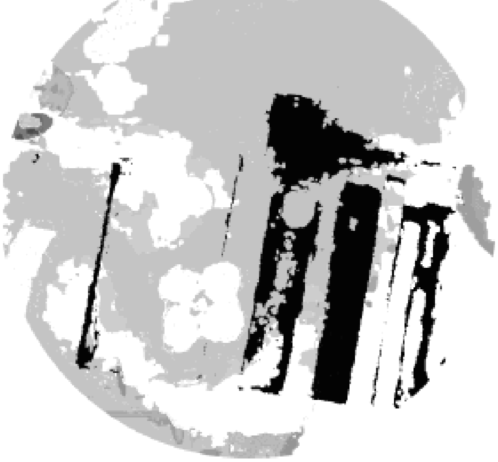

अध्ययन समूह

चयनिका शाह
जॉर्जीना मॅडॉक्स
हसीना खान
क्रांति
मीना गोपाल
मीनू पांडे
राज
सबला
शालिनी महाजन
श्रुति चक्रवर्ती
स्मृति नेवटिया

विश्लेषण और लेखन टीम

चयनिका शाह
राज
शालिनी महाजन
स्मृति नेवटिया

हिंदी अनुवाद

निधि अग्रवाल
नलिनी भनोट

डिज़ाइन

वाणी सुब्रमणियन

दीपू के लिए (1988–2012)

जो हमारे लिए गाता "धागे तोड़ लाओ चांदनी से नूर के", जिसके स्वर दहलीज़ पर खड़ी अपनी ज़िंदगी के धागों को हर उपलब्ध भाषा में तलाश करते; जो पूरी तरह अर्थ न समझते हुए भी जज़्बे को यूं पकड़ लेता कि लफ़्ज़ों के सारे मायने रोशन हो जाते, जो खुद को बस अभिव्यक्त करना चाहता था। उन स्वरों में जिनसे केवल विसंगतियां देख–सुन पाने वाली दुनिया में फिर सुर–ताल का मेल हो सके।

गाने के आगे के बोल हैं "बोल न हल्के हल्के"; और इस युवक की जीवन कथा आज भी हमसे धीमे स्वरों में बातें करती है, हमारी यादों में, इस रिपोर्ट के पन्नों में। साथ ही यह कहानी एक ज़ोरदार मांग भी पेश करती है कि उसे सुना जाए, ना कि तुच्छ समझ कर नकारा जाय, या भुला दिया जाय, ताकि बेबुनियाद सीमाओं को पार करने वाले अन्य लोगों का दिल ना टूटे और संकीर्ण विचारों से टकराकर वे भी दम न तोड़ दें।

बहुत शुक्रिया,
बड़ी मेहरबानी

हमारे क्वीयर और नारीवादी सहभागियों व मित्रों ने इस परियोजना का खुले दिल से समर्थन किया, जिसके बिना इतना बड़ा कार्य कभी संभव नहीं हो पाता। सबसे पहले हम उन साहसी, जोशपूर्ण आन्दोलनों और कार्यकर्ताओं का शुक्रिया करना चाहते हैं, जिनके साथ हम एक मत हैं।

विशेष रूप से हम उन समूहों और व्यक्तियों के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने हमें हमारे उत्तरदाताओं से परिचित कराया, उनसे बात करने के लिए जगह दी और अपने अनुभव हमारे साथ बांटे। सॅफ़ो फॉर इक्वालिटी, लेस्बिट, संगमा, सहयात्रिका, सम्पूर्णा, डब्लू एच ए क्यू (वी आर हीअर एंड क्वीयर) जैसे समूह और अलग–अलग शहरों में रहने वाले दोस्तों के सहयोग के बिना यह अध्ययन असंभव था।

उत्तरदाताओं के प्रति हमारी अनेक भावनाओं को व्यक्त करना कठिन है, क्योंकि यह प्यार, कृतज्ञता, आदर, एकता, निराषा, आशा और रक्षात्मक भाव का उलझा हुआ मिश्रण है। हमारे ऊपर भरोसा करते हुए, सबनेबड़े साहस के साथ अपने विचार और जीवन के अनुभव हमारे साथ बांटे। सभी को हमारा सलाम और धन्यवाद!

हमारा सबसे गहरा संबंध उन 11 व्यक्तियों से है, जो इस रिसर्च टीम का हिस्सा थे। मिलजुलकर हमने एक दूसरे को स्नेहपूर्ण सहारा दिया, चर्चा की गरमागर्मी ने हमें अलग करने के बदले हमारी सोच और समझ को और मज़बूत बनाया, चाय और कॉफ़ी के अनगिनत प्याले पीते हुए हर मुद्दे पर हमने बारीकी से नज़र डाली, जिससे कि कुछ छूट न जाए, और हर कदम पर सवाल उठाये। हम पूरी टीम का हार्दिक शुक्रिया अदा करते हैं।

इस अध्ययन के लिए हमें कार्तीनी एशिया/ट्रांस साइन नेटवर्क द्वारा एक्टिविस्ट रिसर्च ग्रांट के रूप में सहयोग मिला (यह संयुक्त रूप से राइक स्टीन्स्ट्रा फण्ड, फोर्ड फाउंडेषन, हिवोस और मामा कॅश द्वारा दिया गया)। रिपोर्ट तैयार करने के लिए और उसके प्रचार के लिए ग्लोबल फण्ड फॉर विमन से सहयोग मिला। ऐसे काम को बढ़ावा देने के लिए हम उनके आभारी हैं। हमारी साझेदार संस्था, आवाज़–ए–निस्वां के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने तकनीकी सहायता देने के साथ–साथ हमें काम करने के लिए जगह भी दी।

अनुदान की पहली किश्त मिलते ही, हमारी 11 व्यक्तियों की रिसर्च टीम ने जानकारी प्राप्त करने का काम शुरू किया, जो कि जुलाई 2009 और जून 2010 के बीच पूरा हुआ। इस 11 व्यक्तियों की टीम ने आरंभिक विश्लेषण में भी भाग लिया। विश्लेषण और रिपोर्ट लिखने का काम हम चार लोगों ने किया और इस दौरान अध्ययन से जुड़े कुछ अन्य लेख भी प्रकाशित किये।

रिपोर्ट का हिंदी अनुवाद करने के लिए हम निधि और नलिनी के बहुत शुक्रगुज़ार हैं। पारंपारिक जेन्डर प्रणाली में जकड़ी भाषा को जेन्डर के नए ढांचे के अनुरूप बनाना, यह अपने आप में एक कवायद रही और इसमें उन्होंने हमारा पूरा साथ दिया।

अध्ययन का काम काफी हद तक स्वैच्छिक रहा, और हमें खेद है कि समय और पैसे की पाबन्दी के कारण, हम इस रिपोर्ट को पहले नहीं निकाल पाए। आशा है कि रिपोर्ट से कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे उभर कर आएंगे, जो कि समुदाय और एक्टिविस्ट समूहों में होने वाली जेन्डर पर वर्तमान चर्चा को और जोशपूर्ण बनाने में मदद करेंगे।

अंत में हम लेबिया के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देना चाहते हैं। 17 वर्षों से चले आ रहे लेबिया के दृढ़तापूर्वक काम व विकसित हो रही राजनैतिक सोच से ही हमें यह अध्ययन करने का बल मिला।

चयनिका, राज, शालिनी, स्मृति

विषय–सूचि | पेज

सबसे पहले | 10

मुआयना | 12

- परिचय और संदर्भ | 13
- अध्ययन की प्रक्रिया | 19
- हमारे उत्तरदाताओं के बारे में | 26

जी गई वास्तविकताएं | 32

- परिवार | 33
- स्कूल और कॉलेज | 39
- खेल | 43
- निजी रिश्ते, चोरी–छिपे | 45
- अपने शरीर से रिश्ता | 51
- रोज़गार | 56
- सार्वजनिक की (नव)रचना | 61
  - *सड़कें, यातायात और शौचालय* | 61
  - *जन सेवाओं का उपयोग* | 63
- क्वीयर समूहों से संपर्क बनाना | 66

जेन्डर बाइनरी एक काल्पनिक नियम है | 69

अपनी पहचान को नाम देना | 71

शरीर पर लिखा हुआ जेन्डर | 73

इंटरसेक्स विविधताए | 77

हम कैसे दिखते हैं और आप किसे देखते हैं | 78

"लेकिन अब हम कुछ भी पहन सकते हैं" | 78

अपने जेन्डर का देखा–समझा जाना | 80

नज़दीकी रिश्तों में जेन्डर की अभिव्यक्ति | 83

बेटा बनना, बेटी बनना | 83

पति, साथी, प्रेमी, पत्नी | 85

जेन्डर एक सफर है | 89

क्वीयर समूह : एक बढ़ती समझ | 90

समूहों के बारे में | 92

जेन्डर के मुद्दे पर काम | 93

समूह का सदस्य कौन बन सकता है | 95

कुछ जटिल मुद्दे जिन पर अभी भी विवाद जारी है | 97

एक कल्पित भविष्य की ओर | 100

सुराख़दार जेन्डर सीमाओं की ओर | 110

परिशिष्ट | 113

सबसे पहले

पाठक कृपया यहां ध्यान दें, या आगे पढ़ते समय भी यहां दी गई परिभाषाओं पर वापस आ सकते हैं। हमने यहां कुछ ऐसे शब्दों के मतलब दिए हैं, जो अभी आम भाषा में प्रचलित नहीं हैं। इससे हमने रिपोर्ट में जो कुछ कहना चाहा है, उसे समझने में आसानी होगी।

"जेन्डर" की ही तरह अंग्रेज़ी के और भी ऐसे बहुत से शब्द हमारी बोलचाल की ज़ुबान में आम होने लगे हैं जिनका हिंदी/हिंदुस्तानी में कोई प्रचलित, या आसानी से समझ में आने वाला अनुवाद, हम नहीं पाते, यूं भी, हम मानते हैं कि भाषाएं एक दूसरे से प्रभावित होती ही हैं और उनके बीच लेन–देन से उनमें नई जान आती है। यही सोचकर हमने अंग्रेज़ी से कुछ शब्द इस रिपोर्ट के लिए अपनाए हैं। और इसी तरह हमने कुछ शब्द उर्दू से लिए हैं, और कुछ खास तौर पर इजाद किए हैं।

जिंसीयत

"सेक्शुॲलिटी" के लिए "लैंगिकता" और "यौनिकता" जैसे आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले शब्द हम पसंद नहीं करते, क्योंकि इनके मायने शारीरिक अंगों तक और सेक्स के समय व्यवहार तक सीमित हैं। हम इनके बदले "जिंसीयत" शब्द को इस्तेमाल में लाना चाहते हैं, क्योंकि हमें लगता है कि "सेक्शुॲलिटी" में समाए मानसिक और भावनात्मक पहलुओं की ओर, और एक व्यापक व्यक्तिगत पहचान की ओर, "जिंसीयत" बेहतर तरीके से संकेत कर पाता है।

हमजिंसी

जिंसीयत शब्द के चलते ही हमने "होमोसेक्शुअल" या "सेम सेक्स" रिश्तों के लिए "हमजिंसी" शब्द का इस्तेमाल किया।

क्वीयर

हमने इस रिपोर्ट में बहुत ख़ास तरीके से इस शब्द का प्रयोग किया है, उन सभी लोगों के लिए जो भले ही खुद अपनी पहचान "क्वीयर" के रूप में न देते हों, पर वे अपने आप को हेट्रोसेक्शुअल और/या सिसजेन्डर नहीं मानते। इस संदर्भ में, सभी 50 उत्तरदाता – हम सभी 11 अध्ययन करने वालों की तरह ही – क्वीयर जस्जेनिव हैं। हमने उन व्यक्तियों, समूहों, अभियानों और आंदोलनों के लिए भी इस शब्द का प्रयोग एक विशेषण के रूप में किया है, जो खुद को "क्वीयर" कहते हैं, लेकिन संभवतः इसकी जगह, या इसके साथ, एल बी टी/एल जी बी टी या ट्रांसजेन्डर जैसे शब्द भी इस्तेमाल करते हों।

जस्जेनिव

(जन्म पर स्त्री जेन्डर निर्धारित व्यक्ति); जपुजेनिव (जन्म पर पुरुष जेन्डर निर्धारित व्यक्ति): हमारी आपसी चर्चाओं के दौरान और इस अध्ययन के सिलसिले में हमने इन शब्दों की रचना की (और हमें खुशी है कि जेन्डर कार्यकर्ताओं द्वारा व विश्व भर में क्वीयर मुद्दों पर होने वाली चर्चा में इन्हीं से मिलते–जुलते नामों का प्रयोग किया जा रहा है)। हमारा मानना है कि हममें से कोई भी पूर्वनिर्धारित जेन्डर के साथ जन्म नहीं लेता; फिर भी लिंग को, विशेषकर हमारे जननांगों की बनावट को, जेन्डर के साथ जोड़ देने की पारंपरिक प्रथा के चलते जन्म के समय हमारा जेन्डर निर्धारित कर दिया जाता है। ज़रूरी नहीं है कि यह निर्धारित जेन्डर व्यक्ति के अपने जेन्डर की पहचान व अहसास से मेल खाता हो। इस अध्ययन में शामिल सभी उत्तरदाता जस्जेनिव हैं, हालांकि वे सभी अपने आप को औरत या "स्त्री जेन्डर" वाले व्यक्ति नहीं मानते, उसी तरह जैसे कि सभी जपुजेनिव अपने आप को "पुरुष जेन्डर" वाले व्यक्ति नहीं मानते। कुल मिलाकर, जस्जेनिव और जपुजेनिव, इन दोनों नामों में जेन्डर के और शारीरिक विविधता के सभी प्रकार शामिल हैं।

ट्रांस*

यह शब्द उन सभी लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है, जिनकी अपनी जेन्डर पहचान उनके जन्म पर निर्धारित जेन्डर पहचान से मेल नहीं खाती। एक तारे के चिह्न के साथ लिखे जाने वाला यह शब्द ट्रांसजेन्डर अध्ययनों की देन है, जिसके अंतर्गत सभी गैर–सिसजेन्डर पहचानों को शामिल किया गया है, जैसे

ट्रांससेक्शुअल, ट्रांसवेस्टाइट, जेन्डरक्वीयर, जेन्डरफ्लूइड, जेन्डरलेस, एजेन्डर, नॉन–जेन्डर्ड, तीसरा जेन्डर, द्विभावी, द्विलिंगी, एम टु एफ (पुरुष से स्त्री), एफ टु एम (स्त्री से पुरुष) ट्रांसआदमी, ट्रांसऔरत, अन्य, जस्जेनिव जो आदमी हैं, जपुजेनिव जो औरत हैं, और कितने ही अन्य जेन्डर पहचान वाले व्यक्ति।

सिसजेन्डर

सिसजेन्डर व्यक्ति वे होते हैं, जिनकी जेन्डर पहचान जन्म पर निर्धारित उनकी जेन्डर पहचान से मेल खाती है। अतः सिसआदमी वे जपुजेनिव है, जो खुद को आदमी ही मानता हो, और सिसऔरत वे जस्जेनिव है, जो खुद को औरत ही समझती हो। सिसजेन्डर होने से व्यक्ति को वे सभी सिसजेन्डर सुविधाएं प्राप्त होती हैं, जो ट्रांस* व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होतीं, क्योंकि हमारी दुनिया अभी भी जेन्डर की बाइनरी में ही फंसी हुई है।

इंटरसेक्स विविधताएं

मानव शरीर रचना में कई प्रकार की, अलग–अलग स्तर पर विविधताएं होती हैं। अतः "आदमी" या "औरत" की "सामान्य" शरीर रचना के तयशुदा मानकों की बात करना ग़लत है। हम यहां समझ–बूझ कर "इंटरसेक्स विविधताओं" की बात कर रहे हैं, न कि "इंटरसेक्स हालात" की, क्योंकि हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि शारीरिक रचना में विविधता होना कोई रोग नहीं है। शरीर के प्रजननांगों और/या द्वितीय स्तर की यौन विशेषताओं में, और/या अदृश्य विविधताओं, जैसे क्रोमोज़ोम और/या हॉर्मोन के स्तर पर जन्मजात अंतर को इंटरसेक्स विविधताएं कहते हैं।

होमोफ़ोबिया

ग़ैर–नियामक जिंसीयत के प्रति व हमजिंसी रिश्तों के प्रति नफ़रत; लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल लोगों का`शक़ की निगाह से देखना, उन्हें बीमार समझना या अप्राकृतिक मानना; उनकी जिंसीयत के आधार पर उनके साथ भेद–भाव और हिंसा करना; उनकी चाहत, उनकी ज़िंदगियों का भद्दा मज़ाक उड़ाना; उनके मानवाधिकारों को नकारना। होमोफ़ोबिया के ये सारे लक्षण अक्सर एक संकुचित, अवैज्ञानिक सोच पर टिके हेट्रोनॉरमेटिव सामाजिक ढांचे की ओर संकेत करते हैं, जिसका एक बड़ा पहलू ट्रांसफ़ोबिया भी है।

ट्रांसफ़ोबिया

ट्रांस* व्यक्तियों और उनके ग़ैर–नियामक जेन्डर के प्रति नफ़रत; उन्हें शक़ की निगाह से देखना, उन्हें बीमार समझना या अप्राकृतिक मानना; उनकी अपनी जेन्डर पहचान के आधार पर उनके साथ भेद–भाव और हिंसा करना; उनकी अपनी जेन्डर पहचान व अभिव्यक्ति का भद्दा मज़ाक उड़ाना; उनके मानवाधिकारों को नकारना। ट्रांसफ़ोबिया के ये सारे लक्षण अक्सर एक असमानता की बुनियाद पर टिके सिसजेन्डर–प्रधान सामाजिक ढांचे की ओर संकेत करते हैं, जिसका एक बड़ा पहलू होमोफ़ोबिया भी है।

जेन्डर अनुसार भाषा

इस रिपोर्ट में हमने ध्यान रखा है कि हम लोगों की अपनी खुद की जेन्डर पहचान के अनुरूप ही उनके बारे में बात करें। अतः जो भी अपनी पहचान 'आदमी' या 'औरत' के रूप में करते हैं, उनके लिए इसी भाषा का प्रयोग किया गया हैः वह आया, वह गया, या फिर वह आयी, वह गयी, आदि। जो लोग अपनी पहचान 'आदमी' या 'औरत' के रूप में नहीं करते, उनके लिए हमने 'अन्य' श्रेणी बनायी है। अन्य पहचान वाले लोग भी, खुद के लिए आदमी या औरत से जुड़े शब्दों और क्रियाओं का ही प्रयोग कर रहे थे, लेकिन उनकी अलग जेन्डर पहचान की ओर संकेत करने के लिए हमने यहां बहुवचन का इस्तेमाल किया हैः वे आए, वे गए, आदि।ना सिर्फ़ इतना। अंग्रेज़ी में 'I' का कोई जेन्डर नहीं होता इसलिए लोगों की अपनी बोली या अपने बयान अंग्रेज़ी में लिखते या अनुवाद करते वक्त जेन्डर के फर्क पर ध्यान नहीं देना पड़ा। लेकिन हिंदी में खुद के बारे में बात करते हुए जेन्डर आ ही जाता है, इसलिए उन 'अन्य' जेन्डर वाले लोगों के अपने शब्दों के लिए भी हमने हिंदी में बहुवचन का ही इस्तेमाल किया हैः हम आए, हम गए, इत्यादि।

नाम

गोपनीयता बनाए रखने के लिए, सभी उत्तरदाताओं के नाम बदल दिए गए हैं। जहां तक संभव था, उनकी भौगोलिक स्थिति, या अन्य पहचान जानकारी को भी हटा दिया गया है।

मुआयना

बाइनरी जेन्डर व्यवस्था को तोड़ते हुए

परिचय और संदर्भ

लेबिया की शुरुआत 1995 में, स्त्री संगम के नाम से हुई, लेस्बियन, यानि हमजिंसी, और बाईसेक्शुअल औरतों के एक समूह के रूप में। इस समूह के दो मुख्य उद्देश्य थेः पहला, जो औरतें अपने आप को स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से हमजिंसी या बाईसेक्शुअल मानती थीं उनसे संपर्क बनाना, उन्हें सहारा देना और उन्हें खुलकर अपने बारे में बात करने का एक सुरक्षित माहौल देना; और दूसरा, आम समाज में बदलाव लाने के लिए अन्य समूहों और संगठनों के साथ मिलकर काम करना।[1] हमारा काम इन्हीं दो उद्देश्यों से प्रेरित रहा। अनुभवों के आधार पर हमारी राजनैतिक सोच लगातार विकसित होती रही और इस लम्बे समय में, अलग–अलग सदस्यों के जुड़ने या बिछड़ने से भी प्रभावित हुई। साथ ही, उस समय चल रहे जन आंदोलन और संघर्ष, तथा एल जी बी टी आई के एच क्यू व्यक्तिओं और समूहों के साथ बढ़ते संपर्क ने, हमारे काम और हमारी राजनैतिक समझ पर गहरा असर डाला।

शुरू से ही, जेन्डर नियमों को लेकर और उनके हर किसी पर थोपे जाने को लेकर समूह में चर्चा होती रही। हममें से कई लोग अपनी पहचान या तो ″बुच″ (मर्दाना) या फिर ″अलग दिखने वाली औरत″ के रूप में करते थे और अक्सर चर्चा करते थे कि आम औरतों और मर्दों के मुकाबले हमारा पहनावा व अभिव्यक्ति अलग होने के कारण, किस प्रकार हमें हिंसा और दमन का शिकार बनाया जाता है, और आदमी व औरतें, दोनों ही हमें किस नज़र से देखते हैं। हममें से कुछ को अपने आप को एंड्रोजिनस के रूप में देखना ज़्यादा आसान लगा, और कुछ लोगों ने ″हमारी मर्दानगियों″ का भी ज़िक्र किया, हालांकि इस मुद्दे पर हमेशा विवाद बना रहा। हमारे लिए शुरू से ही स्पष्ट था, कि अक्सर जेन्डर विभाजित ″केवल महिलाओं″ के स्थान, हममें से कुछ लोगों के लिए सुरक्षित नहीं हैं। इसलिए हममें से कुछ लोग काफ़ी हद तक इससे बचने के लिए प्रयास करने लगे, जैसे कि, लोकल ट्रेन के महिला डब्बे में नहीं बैठते थे। मर्दों से तो, वैसे भी हमें हर जगह वैर–भाव ही मिलता था।

वैसे नारीवाद में अपने गहरे विशवास के चलते हमें औरत होते हुए भी अलग होने की गुंजाईश ज़रूर मिली और हम अपनी जेन्डर नियमों के खिलाफ़ लड़ाई को शक्ति और साहस से आगे बढ़ा पाए, जो जिंसीयत के मुद्दों तक सीमित नहीं थी। हम सब देश में हो रहे नारीवादी आंदोलनों से जुड़े हुए थे, और अलग प्रकार की नारी होने का मुद्दा इनमें भी प्रमुख रहा। ″औरत″ और ″बहनापा″ जैसी श्रेणियां ऐसी नहीं हैं, जो सबके लिए एक जैसी हों, और इसीलिए जाति, वर्ग, व्यवसाय, निवास स्थान इत्यादि पर आधारित भिन्नता पर चर्चा को आंदोलन में ज़रूरी स्थान मिला। 1990 के दशक से इन उत्तेजित चर्चाओं में जिंसीयत का मुद्दा भी शामिल हुआ। इस वाद–विवाद में यह भी मुद्दा रहा कि किसे नारी आंदोलन से जुड़ने का हक है और किसे नहीं, परन्तु खुद ″औरत″ की परिभाषा पर बहस 2000 के दशक में ही शुरु हुई।[2] लेकिन फिर भी, नारी आंदोलनों ने ऐसी जगहें बनाईं, जो

1 लेबिया के प्रमुख कामों के लिए परिशिष्ट 1 देखें।

2 शालिनी महाजन, 2008, सेमिनार, ″क्वेशचनिन्ग नॉर्म्स ऍन्ड बॉडीज़″ जिस पर जानकारी http://www.india-seminar.com/2008/583/583_shalini_mahajan.htm से – 06–04–13 को प्राप्त की गई।

लेबिया की राजनीति के लिए बेहद महत्वपूर्ण रहीं और जिसकी वजह से हमारे जैसा छोटा समूह ज़िंदा रह पाया।

1990 के दशक में समलिंगी (लेस्बियन और गे) समूह सक्रिय रूप से गठित होने लगे। एक ओर एच आई वी/एड्स पर काम चल रहा था, जो कि आदमियों के साथ संभोग करने वाले आदमियों (एम एस एम) पर केंद्रित था और उसी दृष्टिकोण से इन मर्दों के लिए सेवाएं उपलब्ध कराने लगा। दूसरी ओर, महानगरों में कई समूह उभर के आए, जिनमें अधिकतर गे आदमियों के समूह थे लेकिन कम संख्या में, पर अपनी बात ज़ोर से रखने वाले, कुछ लेस्बियन और बाईसेक्शुअल औरतों के समूह भी गठित हुए। इस दशक में पहली बार मुंबई में आयोजित सम्मलेन और वकशॉप में, एल जी बी टी मुद्दों पर नारीवादी और मानवाधिकार समूह एकजुट हुए। इसके बाद, दिल्ली में कलेरी (कॅम्पेन फॉर लेस्बियन राइट्स) नामक संगठन बना, जो कि *फायर* नाम की फिल्म के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाए जाने के रोष का परिणाम था। वर्ष 2000 में, जब एम एस एम के साथ काम कर रहे कार्यकर्ताओं को लखनऊ में गिरफ़्तार किया गया, तो देश–भर में विरोध अभियान चले और यह एक और अवसर था जब कई अलग–अलग मुद्दों पर काम करने वाले समूह एकजुट हुए।[3]

> इस समय हालांकि जिंसीयत के मुद्दे पर ध्यान ज़्यादा केंद्रित था, जेन्डर संबंधी मुद्दे इतनी स्पष्टता से उभर कर नहीं आए। उदाहरण के लिए, 1997 में, "हमारे" अधिकारों पर चर्चा करने के लिए जो पहला राष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित किया गया, उसका शीर्षक था *स्ट्रैटिजीज़ टू अडवांस लेस्बियन, गे, एंड बाईसेक्शुअल राइट्स*, यानि जिंसीयत से जुड़े अधिकारों पर ही चर्चा थी।[4] वैसे 1990 के दशक से "कोथी" संबंधी मुद्दों पर काम बढ़ रहा था, जिसके परिणामस्वरूप, जेन्डर नियम भंग करने वाले व्यवहारों और पहचानों पर समझ भी बन रही थी, हालांकि इसके लिए ज़्यादातर "यौनिक व्यवहार" की भाषा का उपयोग किया जा रहा था तथा इसे मुख्यतः एच आई वी/एड्स के संदर्भ में देखा जा रहा था। अभी भी "ट्रांसजेन्डर" शब्द का उपयोग केवल हिजड़ा समुदाय तक सीमित था, जो स्पष्ट रूप से जेन्डर के तौर पर दरकिनार लोग हैं, और कुछ ट्रांससेक्शुअल लोग भी इस परिभाषा में शामिल थे।

जेन्डर और जेन्डर नियमों को पार करने के मुद्दे पर चर्चा 2000 के दशक से ही एल जी बी टी समूहों में शुरु हुई – जेन्डर बाइनरी की परिभाषा का निर्माण व खंडन, लोगों को इस बाइनरी के कारण किस रूप से हिंसा और अधिकारहीनता सहनी पड़ती है। जनवरी 2004 तक (जब वर्ल्ड सोशियल फ़ोरम हमारे यहां आया), *रेनबो प्लॅनेट* कार्यक्रमों में जिंसियत के साथ जेन्डर के मुद्दे बिल्कुल साफ़–साफ़ संबोधित होने लगे थे। पर इसके पहले 2003 में, मुंबई में *लर्ज़िश* नाम से अपनी तरह का पहला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म उत्सव आयोजित किया गया, जिसे सेक्शुअल और जेन्डर विविधताओं का उत्सव कहा गया। यह विचार परिवर्तन एकाएक नहीं हुआ, न ही इसे व्यापक स्वीकृति मिली, परन्तु कई समूहों और व्यक्तियों के लिए जेन्डर का मुद्दा उतना ही महत्वपूर्ण बनता जा रहा था जितना कि जिंसीयत का मुद्दा। फिर भी, क्वीयर गठबंधन में ट्रांसजेन्डर लोगों (और हमजिंसी व बाईसेक्शुअल औरतों) के मुद्दों को शामिल करने और उतनी ही जगह पाने के लिए अक्सर कड़ी लड़ाई लड़नी पड़ती थी।

3 इस विषय और क्वीयर संगठन बनने के विषय पर और अधिक जानकारी के लिए देखें नरायन,ए., गुप्ता,ए. (संपादक), (2011) लॉ लाइक लव : क्वीयर पर्सपैक्टिव्ज़ ऑन लॉ। दिल्ली : योडा प्रेस।

4 इस बैठक का आयोजन फोरम, स्त्री संगम/लेबिया, ह्यूमन राइट्स लॉ नेटवर्क और काउंसिल क्लब ने 7 से 9 नवंबर, 1997 को किया था। इस बैठक के परिणामस्वरूप एक किताब प्रकाशित की गई : फर्नान्डेज़,बी. (संपादक) (1999) हमजिंसी : अ रिसोर्स बुक ऑन लेस्बियन, गे ऐंड बाइसेक्शुअल राइट्स इन इंडिया। बॉम्बे : इंडिया सेन्टर फॉर ह्यूमन राइट्स लॉ।

2000 के दशक की शुरुआत में ही, ट्रांसजेन्डर पहचान रखने वाले कई व्यक्ति मौजूदा एल बी टी समूहों से जुड़ने लगे, और इस समय बन रहे नए समूहों में वे शुरुआत से ही सदस्य बन गए। इस बीच, मौजूदा समूहों के सदस्य भी अपने जेन्डर संबंधी मुद्दों को एक नई भाषा में व्यक्त करने लगे। 2002 में, स्त्री संगम में भी बदलाव आया, वह एक "हमजिंसी व बाईसेक्शुअल औरतों के समूह" से परिवर्तित होकर लेबिया (लेस्बियन्स एंड बाईसेक्शुअल्स इन एक्शन) बन गया, "हमजिंसी, ट्रांसजेन्डर, बाईसेक्शुअल औरतों का एक क्वीयर और नारीवादी समूह"। अब जेन्डर के मुद्दों को मुख्य स्थान मिला, हालांकि जेन्डर को लेकर हमारी भाषा अभी भी कुछ डांवाडोल थी।

इसी दौरान, हम इन्टरसेक्स विविधताओं पर पढ़ने और समझ बनाने लगे। नतीजा यह हुआ कि एक मौलिक अवधारणा सामने आई – कि केवल जेन्डर का ही नहीं, लिंग यानि सेक्स का भी निर्माण किया जाता है।

इन सब बदलावों के साथ–साथ "क्वीयर" शब्द का अधिक प्रयोग होने लगा, न केवल व्यक्तिगत पहचानों के संदर्भ में, परंतु राजनैतिक विचारधारा के संबंध में भी। व्यक्तिगत पहचान के संदर्भ में, क्वीयर शब्द का बढ़ता इस्तेमाल इस बात का संकेत था कि हमजिंसी, गे, ट्रांसजेन्डर, बाईसेक्शुअल जैसे शब्द बहुत–से लोगों की जी गयी वास्तविकताओं और जीवन की पेचीदा परिस्थितियों का वर्णन नहीं कर पा रहे थे। जहां तक राजनैतिक विचारधारा का सवाल है, एक ऐसी समझ विकसित हो रही थी जिसके अंतर्गत सेक्स, जेन्डर और जिंसीयत, तीनों के ही विषमलैंगिक, यानि हेट्रोसेक्शुअल बुनियाद पर निर्मित नियमों को चुनौती दी जा रही थी।

इस अध्ययन की आवश्यकता क्यों पड़ी

क्वीयर संगठनों और नारीवादी आंदोलन, दोनों का हिस्सा और उनसे हमारा संपर्क होने के नाते, हमने देखा कि दोनों जगहों पर जेन्डर और जिंसीयत पर चर्चा बढ़ रही है। जैसे–जैसे लोग अपने जीवन और काम के अनुभव से जेन्डर की बाइनरी को चुनौती दे रहे थे, वैसे–वैसे, कई दिशाओं से जेन्डर पर सवाल उठने लगे थे। परन्तु इस अभिव्यक्ति या स्वयं चुनी जेन्डर पहचानों में न तब कोई एकरूपता थी और न ही अब है।

एक बात यह है कि भारत में हिजड़ों का एक सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास रहा है। लेकिन सभी हिजड़ा सब समय "ट्रांसजेन्डर" के झंडे तले संगठित नहीं होना चाहते। हिजड़ों की विशेष संस्कृति और पहचान को अलग रूप से व्यक्त करने की आवश्यकता है, साथ ही उनके अनुभव भी अलग रूप से देखने होंगे, जिन्हें जन्म से पुरुष जेन्डर निर्धारित किया गया है (जपुजेनिव), पर जो खुद को न ही आदमी मानते है और न ही हिजड़ा।

एच आई वी/एड्स के संदर्भ में ऐसी पहचान के लोगों को कुछ दृश्यता तो मिली, चाहे एल जी बी टी आई के एच क्यू . . . संगठनों में इन्हें उपयुक्त जगह न मिली हो।

लेकिन जन्म से औरत जेन्डर निर्धारित, परन्तु खुद को औरत नहीं मानने वाले व्यक्तियों के लिए ऐसा नहीं है। उनके लिए न तो कोई ऐतिहासिक न ही कोई सांस्कृतिक जगह मौजूद थी, चाहे वह मामूली ही क्यों न हो। बस अब जाकर कुछ हद तक उनकी ज़िंदगियों के दस्तावेज़ लिखे जाने लगे हैं।[5] अतः क्वीयर संगठनों में ट्रांसजेन्डर मुद्दों को उठाते समय, क्वीयर जस्जेनिव व्यक्तियों की वास्तविकताएं अक्सर नज़रंदाज़ हो जाती हैं।

> साथ ही, नारी आंदोलन ने जेन्डर बाइनरी के अंतर्गत वर्गीकरण की आलोचना तो करी, और जेन्डर की वजह से होने वाले प्रभाव को अन्य प्रकार की अधिकारहीनता के साथ–साथ रख कर भी देखा और समझा गया, लेकिन खुद जेन्डर बाइनरी की मौजूदगी पर प्रश्न नहीं उठाया, गहरा विचार नहीं किया। 2000 के दशक में, जिंसीयत के नियमों को तोड़ने वाले व्यक्तियों को तो नारी आंदोलनों में कुछ जगह भी मिली और आवाज़ भी, पर जेन्डर के नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों ने कइयों को हैरान कर दिया। चर्चा इस मुद्दे पर केंद्रित रही है कि जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित किये गए, पर खुद को "आदमी" या कोई अन्य जेन्डर की पहचान देने वाले व्यक्तियों, और जन्म से पुरुष जेन्डर निर्धारित किये गए, पर खुद को "औरत" की पहचान देने वाले व्यक्तियों को "नारीवादी" आंदोलन के काम और सोच में किस तरह शामिल किया जा सकता है। ऊपर से, खुद को "ट्रांस*" की पहचान देने वाले कई व्यक्ति लेस्बियन या नारीवादी समूहों से रिश्ता जोड़ने में हिचकिचाते हैं। इन मिले–जुले कारणों से वे दरकिनार हो गए हैं और उन्हें संगठित करना व उनकी समस्याओं को उठाना और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है। कुछ समूहों में, जो या तो मुख्य रूप से एल बी टी व्यक्तियों के साथ काम करते हैं, या जिनकी सदस्यता में ऐसे ट्रांस* व्यक्ति भी शामिल हैं जो जपुजेनिव न हों वहां ट्रांस* जस्जेनिव के लिए थोड़ी–बहुत जगह बनी है, परन्तु यह काफ़ी नहीं है।

हमें लगता है क्वीयर जस्जेनिव के मुद्दों पर गौर करने की ख़ास ज़रूरत है, न सिर्फ़ जेन्डर के संदर्भ में, पर लिंग और जिंसीयत के संदर्भ में भी। इन लोगों की जी गयी वास्तविकताओं को पहचानना और इसके आधार पर कदम उठाना, नारी आंदोलनों और क्वीयर संगठनों दोनों के लिए अनिवार्य है। साथ ही, जेन्डर को लेकर और जेन्डर बाइनरी के उल्लंघन को लेकर चल रही पूरी बातचीत में इन अब तक नज़रंदाज़ किए गए लोगों की ज़िंदगियों और हक़ीकतों से मिली जानकारी को शामिल करना होगा।

> इन सभी संदर्भों में हम अपने इस अध्ययन को देखते और रखते हैं। ऐसे कुछ अध्ययन हो चुके हैं, जिनमें हमजिंसी और बाईसेक्शुअल औरतों के जीवन में हिंसा पर गौर किया गया है, और एक में ट्रांस* लोग भी शामिल थे।[6] इन सब से हम क्वीयर जस्जेनिव के प्रति हिंसा के मुद्दों को और

5 शर्मा, एम. (2006)। लविंग विमेन : बीइंग लेस्बियन इन अनप्रिविलेज़्ड इंडिया योडा प्रेस : नई दिल्ली; घोष, एस., बन्दोपाध्याय, बी., एस. (संपादक)। (2010) ऑफ होराइज़न्स एंड बीयोन्ड : ग्लिम्पसेज़ ऑफ लेस्बियन, बाईसेक्शुअल विमेन एंड ट्रांसपर्सन्स लाइव्ज़। कोलकाता : सॅफो फॉर इक्वॅलिटी।

6 फर्नान्डेज़, बी. और गोमती, एन.बी. (2003)। वॅायसिंग द इनविज़िबल : वायलेन्स अगेन्स्ट लेस्बियन्स इन इंडिया। के. कन्नबिरन की द वायलेन्स ऑफ नॉर्मल टाईम्स : एसेज़ ऑन विमेन्स लिव्ड रियॅलिटीज़। लंदन और नई दिल्ली : ज़ेड बुक्स और काली फॉर विमेन; घोष, एस., बन्दोपाध्याय, बी., एस. और बिस्वास, आर., (2011) वायो–मॅप : डॉक्यूमेन्टिंग ॲन्ड मॅपिंग वायलेन्स एंड राइट्स वायलेशन टेकिंग प्लेस इन द लाइव्ज़ ऑफ सेक्शुअली मार्जिनलाइज़्ड विमेन टु चार्ट आउट इफेक्टिव एडवोकेसी स्ट्रेटजीज़। कोलकता : सॅफो फॉर इक्वॅलिटी; क्रिएटिंग रिसोर्सेज़ फॉर एम्पावरमेन्ट इन एक्शन। (2012)। काउंट मी इन! : रिसर्च रिपोर्ट ऑन वायलेन्स अगेन्स्ट डिसेबल्ड, लेस्बियन, ॲन्ड सेक्स वर्किंग विमेन इन बांग्लादेश, इंडिया ॲन्ड नेपाल। नई दिल्ली।

गहराई से समझ पाए। परन्तु हमारा अध्ययन जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दों पर विशेष ध्यान देते हुए, लोगों की पूरी ज़िन्दगी का अन्वेषण करता है। हमने लोगों के अनुभव, उनकी अपनी आवाज़ों के साथ, अपने सामूहिक ज्ञान के दायरे में लाने की कोशिश की है। इस अध्ययन द्वारा हम अपनी समझ, राजनीति और हस्तक्षेप करने की प्रक्रिया को और मज़बूत बनाना चाहते हैं।

हमने उन लोगों की ज़िंदगी और अनुभव समझने की कोशिश की, जिन्हें जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित किया गया और जो एक न एक तरह से, खुद को क्वीयर मानते हैं, पर जिनके जीवन में जिंसीयत के सामाजिक नियमों के उल्लंघन के कारण और/या जेन्डर की परिभाषा केवल "स्त्री" या "पुरुष" के बीच बंटी होने के कारण, लगातार तनाव रहा। हमने उन लोगों की परिस्थितियां समझने की कोशिश की, जिन्हें "स्त्री जेन्डर" अनुसार रहने को मजबूर किया जाता है, जबकि अपनी चाहतों के तौर पर या अपनी जेन्डर पहचान के तौर पर उनकी अभिव्यक्ति इससे अलग है; जो अलग जेन्डर भूमिकाएं अदा करते हैं, समाज के तय किए गए नियमों से अलग जेन्डर भाव धारण करते हैं, और संभव है अपने शरीर से भी खुद को बेमेल पाते हों। इन लोगों ने अपने जीवन का सफ़र, निजी और सार्वजनिक स्थानों में, किस तरह तय किया; क्या हासिल किया, क्या संघर्ष किये, क्या कमियां रहीं और क्या आवश्यकताएं हैं ?

हमने अपना अध्ययन अगस्त 2009 में शुरू किया, जुलाई 2009 में दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा कुप्रसिद्ध धारा 377 में बदलाव किए जाने के एक महीने बाद। न्यायालय के इस फ़ैसले से क्वीयर लोगों के मुद्दे अचानक मुख्यधारा में शामिल होने लगे। कई शहरों में "गर्व उत्सव" होने लगे और एल बी टी लोगों के साथ काम करने वाले कई समूह उभर के आये। हिजड़ा और ट्रांसजेन्डर लोगों की आवाज़ भी सुनाई देने लगी। कुल मिलाकर क्वीयर होने पर व गैर–नियामक जेन्डर और जिंसीयत पर अधिक बातचीत होने लगी। नारी आंदोलनों में भी यह समझ बनने लगी कि जेन्डर के कारण औरतों और ट्रांस* लोगों पर होने वाली हिंसा काफ़ी हद तक एक समान है। इसका सबूत है, कि हाल में नारीवादी समूहों ने यौन अत्याचार के खिलाफ़ एक जेन्डर–सचेत कानून की मांग करी, जिसके अंतर्गत चाहे किसी भी जेन्डर का व्यक्ति पीड़ित हो, पर अपराधकर्ता "आदमी" को ही माना जाए।

विश्लेषण और लेखन के इस आखिरी मोड़ तक आते–आते, हमारा दृढ़ विश्वास बन गया है कि यहां कही गयी कहानियां और जिन मुद्दों पर हम प्रकाश डालने में सफल हो पाए हैं, वे बहुमूल्य हैं, और इस समय चल रही चर्चाओं के लिए बेहद आवश्यक भी। हमारा मानना है कि यह एक ऐसा संसाधन है, जिसके उपयोग से जेन्डर के मुद्दों पर चल रही वर्तमान चर्चा को, जो अभी क्वीयर समूहों और नारी आंदोलनों के कुछ हिस्सों में ही सीमित है, और अधिक बल मिलेगा।

रिपोर्ट के बारे में

इस अध्ययन के लिए हमने देशभर से 50 क्वीयर जस्जेनिव से बातचीत की। इसके अतिरिक्त, हमने कई एल बी टी और ट्रांस* समूहों से भी बात की। हमारा उद्देश्य है कि उत्तरदाताओं की बातचीत से जो कुछ हमने जाना, उसे हम इस रिपोर्ट में पेश करें, जिससे कि हमारी समझ और सुदृढ़ हो, और इसके आधार पर बदलाव लाने की रणनीति में सुधार लाने के प्रयास किए जाएं। रिपोर्ट लिखते समय हमारी कोशिश रही है, कि जिस गहराई और बारीकी से उत्तरदाताओं ने अपने अनुभव व्यक्त किये, हम उसे कायम रखते हुए पेश कर सकें। हालांकि हासिल की गयी सारी जानकारी और उसके सभी पहलू ऐसी संक्षिप्त रिपोर्ट में समाना असंभव है, फ़िलहाल हम इस रिपोर्ट में वे मुद्दे शामिल कर रहे हैं, जिससे कि प्रमुख चिंता के विषयों की पहचान हो सके और हमारे अभियान और चर्चा उपयुक्त जानकारी के आधार पर आगे बढ़ सकें।

रिपोर्ट के इस भाग का अगला अध्याय हमारी शोध की प्रणाली और प्रक्रिया के बारे में है। उसके बाद वाले अध्याय में उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का वर्णन है। *जी गई वास्तविकताएं* रिपोर्ट का दूसरा भाग है, जिसमें हमने अपने रिसर्च से प्राप्त कुछ मूल जानकारी दी है – हमारे उत्तरदाताओं ने किस तरह परिवार, स्कूल, कार्यस्थल और सार्वजनिक स्थान जैसे नियमों से बंधे क्षेत्रों से गुज़रते हुए अपनी गैर–नियामक ज़िन्दगी का सफ़र तय किया, और अपने करीबी रिश्तों में और अपने आप से किस तरह के समझौते किए व सुकून पाया। यह अध्याय क्वीयर समूहों की भूमिका पर भी नज़र डालता है, साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं तथा अन्य सरकारी संस्थाओं, जैसे पुलिस व कानून की कमियों और इन क्षेत्रों से संबंधित आवश्यकताओं पर गौर करता है।

रिपोर्ट के अगले भाग में जेन्डर संबंधी मुद्दों को और नज़दीकी से देखा गया है। पहली चर्चा का विषय है, *जेन्डर बाइनरी एक काल्पनिक नियम है* – चारों तरफ़ जेन्डर के तंग नियमों से घिरे हुए समाज की कड़ी निगरानी में रहकर हमारे उत्तरदाताओं ने कैसे अपनी जेन्डर पहचान बनाई और अपनी ज़िंदगी गुज़ारी। दूसरी चर्चा का विषय है, *क्वीयर समूह : एक बनती हुई समझ* – जिन समूहों के साथ हमने बातचीत की, उनकी जेन्डर संबंधित समझ किस तरह विकसित हो रही है। रिपोर्ट का आखरी भाग है *भविष्य की कल्पना* – इसमें हमने कुछ व्यापक मुद्दों पर चर्चा की है जिनमें कुछ दीर्घकालिक ज़रूरतें शामिल हैं और कुछ विशेष तात्कालिक मांगें और कार्य बिंदु भी हैं।

अध्ययन की प्रक्रिया

इस अध्ययन में नारीवादी शोध प्रक्रिया और नैतिकता अपनाई गयी। नारीवादी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण योगदान यह रहा है कि इसके अंतर्गत, "अपक्षपाती" अध्ययनकर्ता की "निष्पक्षता" की धारणा को चुनौती दी गई है। सॅन्ड्रा हार्डिंग और डॉना हॅरवे[7] जैसी नारीवादियों के काम के कारण, आज अनिवार्य हो गया है कि शोधकर्ता अपनी स्थिति–परिस्थिति स्पष्ट रूप से पेश करें, ना कि इसे निष्पक्षता का चोला पहनाकर गुप्त रखें। इसलिए, जितना हम इस अध्ययन की प्रक्रिया के बारे में, और जानकारी एकत्रित करने से लेकर उसका विश्लेषण करने के बारे में बताने से पहले हम यह बताना चाहते हैं कि "हम" कौन हैं।

हमारी अध्ययन टीम

हमारी अध्ययन टीम के 11 सदस्य एक दूसरे को पहले से जानते थे और एक साथ काम भी कर चुके थे, हालांकि हम सबकी परिस्थितियां विविध हैं। हम सब मुंबई में फोरम,[8] एक स्वयंसेवी नारीवादी समूह, से जुड़े हैं, और इसी समूह के माध्यम से देश के स्वायत्त नारी आंदोलन में हम सक्रिय रूप से भागीदार रहे हैं। हममें से नौ लोग लेबिया के सदस्य भी हैं और इसके माध्यम से, मुंबई तथा पूरे देश में क्वीयर मुद्दों पर व अन्य क्वीयर संगठनों के साथ काम करते आए हैं। अतः हमारा एक साझा राजनैतिक नज़रिया है, जिसके अंतर्गत हमने इस अध्ययन को रखा है। व्यक्तिगत रूप से, हम सब अपने आप को क्वीयर मानते हैं, हालांकि हर एक के लिए इसके मायने अलग हो सकते हैं।

हमारी जेन्डर पहचानें भिन्न हैं। हम सब को जन्म पर स्त्री जेन्डर निर्धारित व्यक्ति हैं, और राजनैतिक स्तर पर हम सभी "औरत" की पहचान से काम करते हैं। हममें से कोई भी खुद को 'आदमी' की पहचान नहीं देता, परन्तु हमारा मानना है (और इस अध्ययन ने हमारे इस विश्वास को और भी मज़बूत बना दिया है) कि 'औरत' और 'आदमी' के अलावा और भी कई जेन्डर पहचान होती हैं और हममें से कुछ लोगों ने उनमें से ही अपनी जेन्डर पहचानें चुनी हैं। हममें से जो लोग अपने आप को 'औरत' मानती हैं, वे भी इस शब्द का वर्णन अलग अलग रूप से करती हैं। हमारी टीम के सदस्य अलग अलग धर्मों के हैं, पर अधिकांश लोग उच्च वर्ग और जाति के हैं।

हमारे व्यवसाय भी भिन्न हैं, पर लेबिया और फोरम के काम–अभियान के संदर्भ में हम एक दूसरे के साथ छोटे समूहों में काम कर चुके हैं। लेकिन इस तरह के औपचारिक अध्ययन में इतनी बड़ी टीम के साथ काम करना

7 हॅरवे, डी. (1988) सिचुएटेड नोलेजेज़ : द साइंस क्वेशन इन फेमिनिज़्म एंड द प्रिविलेज ऑफ पार्शियल पर्सपेक्टिव। फेमिनिस्ट स्टडीज़ 14(3), 575–599। इसके अतिरिक्त देखें हार्डिंग, एस. (संपादक)। (1987) इज़ देयर अ फेमिनिस्ट मैथड ? हार्डिंग, एस. की फेमिनिज़्म एंड मेथडॉलजी : सोशियल साइंस इशूज़ में (पृष्ठ 1–13) ब्लूमिंगटन : इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस एंड ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

8 फोरम अगेन्स्ट ऑप्रेशन ऑफ विमेन (फोरम), 1980 से कायम है, और मुंबई का सबसे पुराना गैर–वित्तपोषित, स्वायत्त नारीवादी संगठन है। यह संगठन यौन हिंसा, घरेलु हिंसा, सांप्रदायिकता, और कई अन्य मुद्दों पर अभियानों में शामिल रहा है, जैसे कि प्रजनन तकनीकें, जिंसीयत, सेक्स–वर्क, जाति, और अन्य संघर्षों व आंदोलनों का भी सक्रिय हिस्सा रहा है।

एक नवीन प्रयास था, जिसे हमने टीम की सर्वसम्मति से किया। रिसर्च प्रक्रिया में हम सब का दर्ज़ा बराबर था, भले ही काम में सबका योगदान बराबर हो या न हो। कोई मूल टीम नहीं थी, न ही कोई ऐसे विशेष कार्य थे, जो कुछ लोग ही कर सकते थे। इंटरव्यूज़ की कोडिंग और प्रारंभिक विश्लेषण तक टीम के सभी सदस्य अध्ययन में जुड़े रहे।

इसके बाद अध्ययन के विस्तृत विश्लेषण और रिपोर्ट लिखने के काम को टीम के चार लोगों ने संभाला और इस रिसर्च पर आधारित कुछ अध्ययन–लेख भी प्रस्तुत किये। लोगों के समय और इच्छानुसार इस काम को बांटा गया। दो साल से यह चार सदस्यों की टीम, प्राप्त की गयी ढेर सारी जानकारी का निचोड़ निकालने में जुटी हुई है। कई बार यह काम पीछे पड़ जाता, क्योंकि दूसरी ज़रूरतों को पहल देनी पड़ती, जैसे कमाई, व्यक्तिगत व्यवसायिक रुचि के कार्य या कोई अन्य ज़िम्मेदारी। फिर भी हम सामूहिक रूप से इस अध्ययन पर चिंतन, विश्लेषण और लेखन करते रहे।

हम भली भांति जानते हैं कि यह रिपोर्ट हम जैसे लोगों के ही बारे में है, अतः इस रिपोर्ट में हमारे निजी अनुभव और लेबिया का हम जैसे लोगों के साथ काम करने के गहरे और विस्तृत अनुभवों का प्रभाव भी इस पर पड़ा है। हम मानते हैं कि इससे हमें अध्ययन करने में काफ़ी सहूलियत मिली। हम आसानी से समझ पाए कि कौनसे सवाल महत्वपूर्ण हैं, और इन्हें किस तरह से पूछना चाहिए।

हमें शुरु से मालूम था कि हम जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित क्वीयर व्यक्तियों (क्वीयर जस्जेनिव) से बात करेंगे। यह लोग हमारे सामाजिक और राजनैतिक समुदाय का हिस्सा हैं, इसलिए उनका विश्वास पाना और उन्हें अध्ययन का हिस्सा बनाने के लिए राज़ी करना उतना मुश्किल नहीं था। पर इससे हमारे ऊपर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी भी आ गईः एक ओर, हमें इस समुदाय का हिस्सा होने के नाते अपनी व्यक्तिगत समझ बनाए रखनी थी, दूसरी ओर, हमें अध्ययन प्रक्रिया में निष्पक्षता की अनिवार्यता भी निभानी थी।

अध्ययन का विषय–क्षेत्र निर्धारित करना

शुरुआत में हमारा विचार था कि हम उन लोगों के जीवन और समस्याओं पर गौर करेंगे, जो "जन्म से स्त्री" हों और जो एफ टी एम की एक खुली परिभाषा के अंतर्गत विविध पहचान रखते हों। इस संदर्भ में हमने कुछ मूल मुद्दे चुने – बचपन से अब तक उनके जीवन के अलग–अलग पहलू, निजी रिश्तों में (पारिवारिक, यौन संबंधी, अन्य करीबी रिश्ते) और सार्वजनिक स्थानों में उनके अनुभव किस प्रकार रहे। हम जानना चाहते थे कि वे अपने जेन्डर को किस तरह समझते हैं, उसके लिए किस तरह मान्यता हासिल करने की कोशिश करते हैं, ऐसी जगहें कैसे ढूंढते हैं जहां वे अपने जैसे लोगों से मिल सकें, और ऐसे समूहों या बाकी समाज से उनकी क्या उम्मीदें हैं।

हमें एहसास हुआ कि हमारे लिए इन सब अनुभवों को बाइनरी जेन्डर की उस व्यवस्था के संदर्भ में देखना बेहद ज़रूरी है, जो हमारे जीवन के हर पहलू को घेरे रखती है। परन्तु यह काम सीमित प्रश्नावाली से प्राप्त संक्षिप्त जवाबों के ज़रिये कर पाना संभव नहीं था – एक ओर दो जेन्डर वाली समझ हमारी भाषा तक में

समाई हुई है जो हमारे बीच बातचीत करने का एकमात्र माध्यम है, और दूसरी ओर जो "एफ टी एम की एक खुली परिभाषा के अंतर्गत विविध पहचान रखने वाले ट्रांस व्यक्तियों" की हकीक़तों को लेकर बहुत कम जानकारी या चर्चा रही है।

लाइफ़ हिस्ट्री नॅरेटिव

तब हमने गाइडेड लाइफ़ हिस्ट्री नॅरेटिव की विधि अपनाते हुए 50 उत्तरदाताओं से गहराई (क्वालिटेटिव) में बातचीत (इंटरव्यू) करने का निर्णय लिया। और इसके लिए हमने एक विस्तृत इंटरव्यू गाईड तैयार किया। हमने यह भी तय किया कि हम साथ ही एल बी टी समूहों से (जो मुख्यतः हमजिंसी और बाईसेक्शुअल औरतों और ट्रांस* लोगों के साथ काम करते हैं) विशेष रूप से बातचीत करेंगे – यह जानने के लिए कि इन मुद्दों पर हर समूह की समझ क्या है, और वे जेन्डर पर अपने वर्तमान और भविष्य के काम को किस नज़र से देखते हैं।

साथ ही हमने उत्तरदाताओं को चुनने की प्रक्रिया पर चर्चा शुरू की। हम इस अध्ययन द्वारा जानना चाहते थे की जस्जेनिव अपने जन्म से निर्धारित जेन्डर से क्यों और किस हद तक परेशान हैं और वे इसका समाधान कैसे करते हैं। परन्तु एक सवाल उठा : हमें कैसे पता चलेगा कौन, और किस तरह, अपने निर्धारित जेन्डर से परेशान है ? हमारे सामने तीन विकल्प थे – पहला, हम ऐसे लोगों से संपर्क बनाएं जो ज़ाहिर तौर पर जेन्डर नियमों का उल्लंघन करते हैं; दूसरा, हम लोगों को खुद कहने दें कि उनकी जेन्डर पहचान क्या है। तीसरा विकल्प मूल रूप से अलग था – हम इस समझ से चलें कि हर व्यक्ति के पास बताने को कुछ–न–कुछ ज़रूर होता है, अपने निर्धारित जेन्डर से होने वाली समस्याओं को लेकर भी और इन से जूझने के बारे में भी, इसलिए हमें अध्ययन को सभी जस्जेनिव के लिए खुला रखना चाहिए।

क्योंकि हम अध्ययन के लिए जाने पहचाने समूहों और नेटवर्क्स से संपर्क करने वाले थे, हमारे लिए पहले दो विकल्प चुनना (अलग से या एक साथ) आसान था, पर हम इन विकल्पों से संतुष्ट नहीं थे। यह निश्चित तो नहीं था, पर हमें लगा खुद को ट्रांस* की पहचान न देने वाले लोग भी हमें जेन्डर के बारे में बहुत कुछ बता सकते थे। क्या पता कुछ लोग खुद को ट्रांस* की

पहचान इसलिए नहीं देते हों, क्योंकि वे इस भाषा के आदि नहीं हुए हैं? अगर हम ऐसे लोगों को अध्ययन में शामिल न करें, तो उनके अनुभव खो नहीं जाएंगे? और अगर हम केवल उन लोगों से बात करते हैं, जो खुद को ट्रांस* मानते हैं, तो क्या हमें मिलने वाले जवाब काफ़ी हद तक पूर्वनिश्चित नहीं होंगे ?

तीसरा विकल्प चुनने का मतलब था, अध्ययन के दायरे में कुछ बुनियादी बदलाव करना। इस समय तक हमारा ध्यान उन लोगों पर केंद्रित था जो स्पष्ट रूप से जेन्डर बाइनरी के नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। अब ऐसा विचार बनने लगा कि बाइनरी के बाहर की हकीकत समझने के लिए हमें इन उल्लंघनों से आगे भी देखना होगा।

हमने इन विकल्पों के परिणाम समझने और "सही" निर्णय लेने की प्रक्रिया में काफ़ी वक़्त बिताया। इन मुद्दों पर पढ़ाई करी, इस सब पर चर्चा करी और अपने खुद के जेन्डर और जिंसीयत के अनुभव एक–दूसरे के साथ बांटे। यह सारी चर्चा कई बैठकों के दौरान चलती रही। इस बीच हमारे इंटरव्यू गाइड का काफ़ी विस्तृत प्रारूप तैयार हो चुका था। हम सब ने अपने आप से यह भी सवाल किया कि क्या हमारे जवाब इस अध्ययन के लिए उपयोगी होंगे, यानि क्या हम खुद को ऐसे अध्ययन के लिए उचित उत्तरदाता मानेंगे? हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि हमारी टीम में हांलाकि सभी व्यक्ति अपने आप को राजनैतिक या अन्य स्तर पर "औरत" मानते थे, कइयों ने अपने आप को उत्तरदाता बनने के लायक समझा। जबकि इनमें से कोई भी व्यक्ति हमारी शुरु में बनायी गयी "एफ टी एम की एक खुली परिभाषा के अंतर्गत विविध पहचान रखने वाले ट्रांस व्यक्तियों" की श्रेणी में नहीं आता था।

अंत में हमने तय किया कि हम अध्ययन में ऐसे सभी लोगों को उत्तरदाता के रूप में जायज़ मानते हुए, जिन्हें जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित किया गया हो, अपना चुनाव उन लोगों तक सीमित रखेंगे, जो क्वीयर जस्जेनिव हैं, यानि जो किसी न किसी तरह से हेट्रोसेक्शुअॅलिटी के नियमों को भंग करते हों, और क्वीयर समूहों या संगठनों से जुड़े हुए हों। हमारी समझ में, ऐसे जस्जेनिव, अपनी जेन्डर या/और जिंसीयत की पहचान द्वारा समाज के निर्धारित जेन्डर नियमों को पहले से ही चुनौती दे रहे होते हैं। आखिर पितृसत्तात्मक समाज में जेन्डर और जिंसीयत इस तरह जुड़े हुए हैं, कि "हमजिंसी चाहत" अपने आप में जेन्डर नियमों के खिलाफ़ हो जाती है।

उत्तरदाताओं का चुनाव

हमने कई क्वीयर एलबीटी समूहों को पत्र भेजे – कोलकता में सॅफो, थ्रिस्सुर में सहयात्रिका, बंगलुरू में लेस्बिट और डब्लू एच ए क्यू (वी आर हीयर ऐंड क्वीयर), वडोदरा में परमा, दिल्ली में संगिनी और एक विश्वव्यापी भारतीय लोगों का ट्रांस नेटवर्क, सम्पूर्णा।[9] इसके आगे हमने लोगों से फ़ोन पर बात करने की कोशिश की और जहां संभव हुआ खुद मिलने गए। हम इन समूहों द्वारा संभावित उत्तरदाताओं से संपर्क बनाना चाहते थे और हर समूह के सदस्यों के साथ चर्चा भी करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त हमने ऐसे लोगों से संपर्क किया, विशेषकर दिल्ली और चेन्नई में, जो अपनी जान पहचान द्वारा हमें संभावित उत्तरदाताओं से मिलवा सकते थे। मुंबई और पुणे में, हमने लेबिया से संबंधित समूहों और लोगों की मदद ली। ग्रामीण क्षेत्रों में, हमने कुछ ऐसे लोगों से संपर्क किया जो किसी समूह से नहीं जुड़े थे, परन्तु जिनसे हम पहले मिल चुके थे और वे अब भी हमारे संपर्क में थे।

अधिकांश समूहों और लोगों ने खुले दिल से हमारी सहायता की और हमें समर्थन दिया। इनकी मदद के बिना हम कभी भी इतने उत्तरदाताओं तक नहीं पहुँच पाते। अंततः हमें देश के चारों कोनों से उत्तरदाता मिल गए।

लेकिन कुछ हताशा भी हमारे हाथ लगी। सम्पूर्णा की इ–लिस्ट पर सूचना डालने के बावजूद, किसी ने अध्ययन में भाग लेने की स्वीकृति नहीं दी। लेकिन बाद में हमने सम्पूर्णा के साथ एक सामूहिक इंटरव्यू किया। परमा ने जवाब दिया कि वे हमारे अध्ययन में भाग नहीं ले सकते थे क्योंकि वे खुद ऐसा अध्ययन कर रहे थे। संगिनी से हमने संपर्क बनाने की बहुत कोशिश की पर उनसे कोई जवाब नहीं मिल पाया।

जहां तक संभव था, हमने देश के हर कोने से विभिन्न उत्तरदाताओं को चुनने का प्रयास किया। हमने पर्पसिव सॅम्पलिंग (संकल्पित प्रति चयन) की विधि अपनाते हुए, उत्तरदाताओं में आयु, वर्ग, जाति और धर्म के आधार पर भिन्नता लाने की कोशिश की। हर स्थान से संभावित उत्तरदाताओं की संख्या बड़ी नहीं थी; जब भी हमारे चयन मानदंड के अनुसार उत्तरदाताओं की संख्या हमारी ज़रुरत से ज़्यादा होती, तो हम पर्ची बनाकर लोगों का चुनाव कर लेते।

9 यह पहले पत्र जुलाई 2009 में भेजे गए और उस समय हम केवल इन्हीं समूहों को जानते थ, जो प्रमुख रूप से एल बी टी लोगों के साथ काम करते हैं। सभी जानकारी अगस्त 2009 से जून 2010 के बीच इकट्ठी की गई।

हमारे इंटरव्यू

टीम के दो सदस्यों ने मिलकर हर उत्तरदाता से बातचीत करी। अगर उत्तरदाता और अध्ययन टीम के सदस्य एक भाषा नहीं जानते थे, तो हम (उत्तरदाता की सहूलियत और सहमति के साथ) अनुवादक की मदद लेते। इंटरव्यू पूरा होने के बाद हमने हर उत्तरदाता को उनके इंटरव्यू की एक प्रतिलिपि भेजी, जिससे कि वे इसे स्वीकृति दे सकें। यह स्वीकृति पाने के बाद ही हमने प्रतिलिपि बाकी अध्ययन टीम के साथ बांटी।

अधिकांश उत्तरदाताओं से बातचीत उनके आवासी शहर में हुई। चार उत्तरदाताओं का इंटरव्यू किसी अलग शहर में हुआ और इसकी व्यवस्था हमने की। तीन और उत्तरदाता, यात्रा कर रहे थे, और इनके इंटरव्यू भी, सब की सहूलियत अनुसार, किसी अलग जगह पर हुए। सब उत्तरदाताओं से बातचीत ऐसी जगह पर हुई, जो उनके लिए आरामदायक और सुरक्षित थी, जैसे कि हमारे अपने घर, उत्तरदाताओं के घर, किसी जाने पहचाने व्यक्ति का घर या फिर कोई संस्थागत स्थान। कोई भी इंटरव्यू सार्वजनिक स्थान में नहीं हुआ।

पांच इंटरव्यू के अलावा हर इंटरव्यू एक ही दिन में, थोड़ी–थोड़ी देर ब्रेक लेते हुए, पूरे किये गए। सात इंटरव्यू अनुवादकों की मदद से हुए। इंटरव्यू की प्रतिलिपि पाने पर कई उत्तरदाताओं ने इसमें नई जानकारी जोड़ी और कुछ लोगों ने थोड़ी बातें निकालीं। ब्रेक का समय हटाकर, प्रत्येक इंटरव्यू करने में चार से नौ घंटे लगे। उत्तरदाताओं से बातचीत में इंटरव्यू गाइड के आधार पर ही मुद्दों पर चर्चा हुई, परन्तु उत्तरदाता और अध्ययन टीम की सहूलियत के अनुसार, मुद्दों का क्रम कई बार बदला भी गया।

क्वीयर समूहों के साथ केन्द्रित चर्चा खुले रूप से, हर समूह की अपनी विशेषता के आधार पर की गई, जिसके पीछे हमारी उन समूहों के बारे में पहले से जानकारी या उस समूह के लोगों के साथ इंटरव्यू से प्राप्त जानकारी रही। हम जानना चाहते थे कि इन समूहों में जेन्डर की समझ किस तरह विकसित हो रही है, वे जेन्डर के मुद्दों के समाधान के लिए किस प्रकार की रणनीति अपनाते हैं, और इन रणनीतियों में क्वीयर जस्जेनिव के साथ संपर्क और जिंसीयत या/और जेन्डर के कारण अधिकारहीन लोगों की सहायता करने के उनके काम से क्या बदलाव या सुधार हुए हैं।

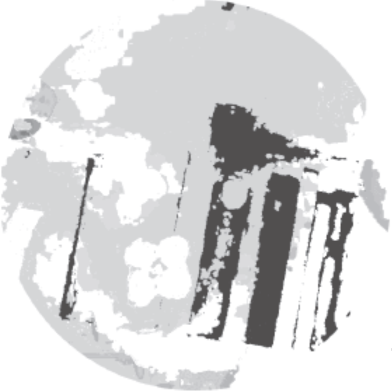

विश्लेषण और लेखन

हमारे उत्तरदाताओं ने खुलकर अपने जीवन की विस्तृत जानकारी हमें दी। ऐसा करने के लिए उन्हें अपने जीवन की कष्टदायक यादें ताज़ा करनी पड़ी, और उन पहलुओं को छूना पड़ा, जो वे शायद गुप्त रखना पसंद करते। अक्सर इंटरव्यू वार्तालाप में बदल जाते और हम कही गई बात के मायने और बारीकी से समझने के लिए सवाल पूछते, जिससे मुद्दे की कई परतें खुलतीं और हमारी समझ और बढ़ती। हम भली भांति जानते हैं कि किसी की पेचीदा जिंदगी एक मुलाकात में नहीं समझी जा सकती; इसलिए इन कहानियों से कोई भी अर्थ निकालते समय बहुत सावधानी बरतनी होगी और अलग अलग लोगों की विशेषताओं को ध्यान में रखना होगा।

हमारे उत्तरदाताओं के पास से प्रतिलिपि आने के बाद, हम सभी इंटरव्यू करने वालों ने हर इंटरव्यू पर आपस में विचार विमर्श किया – उत्तरदाताओं के बारे में हमारी क्या समझ बनी, इंटरव्यू के दौरान हमें व्यक्तिगत स्तर पर क्या महसूस हुआ, इस प्रक्रिया में हमें क्या एहसास हुआ? हमारी टीम का कोई भी सदस्य सभी 50 उत्तरदाताओं से नहीं मिला है। उत्तरदाताओं की कहानियों को उनकी अपनी भाषा में दोहराते हुए, और उसका अनुवाद हमारी भाषा में करते हुए, कुछ मूल विषय उभरने लगे, जिसके आधार पर हमने विश्लेषण के लिए कोड शीट तैयार करी। इसके बाद, टीम के चार सदस्यों ने बाकी का विश्लेषण और इस रिपोर्ट को तैयार करने की ज़िम्मेदारी ली।

सितम्बर 2010 में हमने अपने अध्ययन के कुछ प्रारंभिक निष्कर्ष एक सम्मलेन में बांटे। यह सम्मलेन प्रेटोरिया में आउट नामक संस्था द्वारा आयोजित किया गया था। इसके बाद, 2011 में हमने *विमेन लविंग विमेन इन एशिया ॲन्ड अफ्रीका* के लिए अपने अध्ययन पर आधारित एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करी। 2011 में ही *रेज़िस्टिंग मार्जिनलाइज़ेशन, चॅलेन्जिंग हेजीमनीज़ : री–विज़निंग जेन्डर पॉलिटिक्स* के शीर्षक से वर्धा में राष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित हुआ, जिसमें हमने हमारे अध्ययन पर आधारित चार सारांश प्रस्तुत किये गए। साथ ही, 2011 में क्रिया ने काठमांडू में एक सम्मलेन, *काउंट मी इन* के नाम से आयोजित किया, जिसमें हमारे अध्ययन के कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष पेश किये गए। इसके अतिरिक्त, हमने *बाउंड बाई नॉर्म्स ॲन्ड आउट ऑफ बाउंड्स : एक्स्पीरीयेन्सिस ऑफ पी ए जी एफ बी विदिन द फॉर्मल ऐजुकेशन सिस्टम* के शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया। यह लेख जुलाई 2012 में *कन्टेम्परारी एजुकेशन डाइलॉग* के एक विशेष अंक *कन्टेम्परारी इशूस इन जेन्डर ॲन्ड एजुकेशन* में प्रकाशित हुआ। 2012 में मजलिस लीगल सेन्टर ने मुंबई में *निगोशीएटिंग स्पेसिस : इन्टेरोगेटिंग पेट्रीआर्की विद अ स्पॉटलाइट ऑन नेटल फॅमिली वायलेंस* नामक एक बैठक आयोजित की और यहां भी हमारे अध्ययन के कुछ निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए।

इस समय हम अपने अध्ययन के आधार पर एक पुस्तक लिख रहे हैं क्योंकि भारत में क्वीयर जस्जेनिव की स्थिति के बारे में इतनी गहरी और विस्तृत जानकारी, इस पैमाने पर शायद कभी एकत्रित और अभिलिखित नहीं की गई है। हमारी कोशिश है कि इस पुस्तक के माध्यम से हम इस अध्ययन के निष्कर्षों को जेन्डर और ट्रांस* लोगों पर हो रहे समकालीन काम के संदर्भ में पेश करें।

हमारे उत्तरदाता

हमने ऐसे 50 क्वीयर व्यक्तियों से गहराई में बातचीत की जिन्हें जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित किया गया (जस्जेनिव)। हमारी कोशिश थी कि हम भिन्न आयु, जाति, वर्ग, धर्म और जगहों से आने वाले लोगों से बात करें। यह विविधता पाना अति आवश्यक था क्योंकि हम अधिकारहीनता के कई पहलुओं में जकड़े लोगों तक पहुंचना चाहते थे।

निवास स्थान

जब हम उनसे मिले, अधिकांश उत्तरदाता शहरों में बसे थे, विशेषकर बंगलूरु, मुंबई, कोलकता, चेन्नई, दिल्ली, पुणे और त्रिशूर में। हमने उनसे क्वीयर समूहों और नेटवर्क द्वारा संपर्क बनाया। बंगलूरु, चेन्नई व केरल में सक्रिय व जोशपूर्ण क्वीयर समूह और नेटवर्क होने के कारण, बाकी भागों की तुलना में, दक्षिण से अधिक संख्या में उत्तरदाता शामिल हुए। केवल दो उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्रों से थे, एक ग्रामीण महाराष्ट्र से और एक ग्रामीण झारखंड से।

सारिणी 1

क्षेत्र	उत्तरदाता
पूर्व	9
उत्तर	10
दक्षिण	18
पश्चिम	13
कुल	50

अधिकांश उत्तरदाता प्रमुख जातियों से थे, हांलाकि प्रत्येक स्थान से कम से कम एक व्यक्ति अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/विशेष पिछड़े वर्ग/अन्य पिछड़े वर्ग से थे।

चार्ट 1

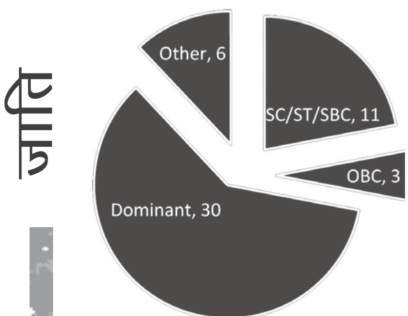

वर्ग

बचपन के दौरान अपने पैदाइशी परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे में हमने उत्तरदाताओं से पूछा। हमने तीन श्रेणीयाँ रखीं – निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग। उनके उत्तर व्यक्तिगत आभास के अनुसार थे, और यह उनके शहरी या ग्रामीण आवास–स्थानों में निजी अनुभवों से प्रभावित थे।

हालांकि जय और मुरली दोनों अपने परिवार को निम्न–वर्गीय मानते हैं, जय स्कूल जाता था क्योंकि घर में खाने को नहीं था, जबकि मुरली ने प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई की। निम्न वर्ग की श्रेणी में ऐसे भी अंतर पाए गए।

बाकी श्रेणियों में भी कुछ ऐसे ही अंतर मिले। हालांकि संतोष के पिता दिहाड़ी मज़दूर हैं, वह अपने परिवार को मध्यम–वर्गीय मानता है, क्योंकि उसके बड़े भाई भी कमाते थे। दूसरी ओर मेघना अपने शहरी परिवार को निम्न–वर्गीय मानते हैं, जबकि उनके पिता अपने पारिवारिक उद्योग में काम करते हैं।

हमारे क्वीयर जस्जेनिव उत्तरदाताओं के लिए उच्च वर्ग की परिभाषा में संसाधनों और विशेषाधिकारों का होना ज़रूरी नहीं था। एक व्यापारी परिवार से होने के बावजूद, पारिवारिक गतिविधियों के कारण 20–वर्षीय निधि मनचाही पढ़ाई नहीं कर पायी। क्रिकेट खेलकर वह अपने लिए कुछ पैसे कमाया करती। अपनी जिंसीयत के कारण उच्च–वर्गीय भार्गवी भी पढ़ाई से वंचित रह गये।

मुंबई और दिल्ली में, हमारे अधिकांश उत्तरदाता मध्यम वर्ग से थे और कुछ उच्च वर्ग से। क्योंकि इन दोनों शहरों में हमने मुख्यतः अपनी ही जान–पहचान द्वारा उत्तरदाताओं से संपर्क बनाया, हमारे आंकड़ों से ज़ाहिर है कि इन सोशियल नेटवर्क और जगहों से जुड़ पाने में वर्ग किस तरह आड़े आता है।

चार्ट 2

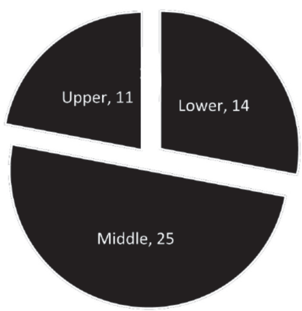

धर्म

धर्म के कारण दरकिनार किए जाने की सच्चाई को पहचानते हुए हमने ऐसे लोगों से बात करने की विशेष कोशिश की जो प्रमुख धर्मों से नहीं थे, परन्तु असफ़ल रहे। हमने यह भी पाया कि क्वीयर समूहों की रचना लगभग मुख्यधारी समाज की ही झलक है। बंबई में हमने विभिन्न धर्मों के संभावित उत्तरदाताओं तक पहुँचने की कोशिश की, और कुछ हद तक कामयाब भी रहे। याद रखना चाहिए कि जिन लोगों से हमने बात की, उनमें से कई अपने पैदाइशी धर्म में आज विश्वास नहीं रखते। कुछ ने अपना धर्म बदल लिया था, कुछ भगवान को मानते थे पर किसी एक धर्म को नहीं, और कुछ नास्तिक थे।

सारिणी 2

पैदाइशी धर्म	उत्तरदाता
बौद्ध	1
ईसाई	3
हिंदु	42
जैन	2
मुसलमान	1
सारणा	1
कुल	50

हमारे उत्तरदाताओं की उम्र 20 और 65 वर्ष के बीच थी। हम चाहते थे कि 20–25, 26–30, 30–35 और 35 से अधिक वर्ष की श्रेणियों में उत्तरदाताओं की संख्या बराबर हो। परन्तु कम उम्र के उत्तरदाताओं की संख्या ही अधिक रही। शायद ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सॅफ़ो और लेस्बिट जैसे समूहों के सदस्य अधिकतर कम उम्र के ही थे।

सारिणी 3

उम्र	उत्तरदाता
20–25	13
26–30	12
30–35	16
35 से अधिक	9
कुल	50

उम्र

शिक्षा

सभी क्षेत्रों से आये उत्तरदाताओं के शिक्षण में समान रूप से अंतर था। जैसे कि हम आगे चर्चा करेंगे, कई उत्तरदाताओं के लिए शिक्षा पा सकने में उनके जेन्डर और जिंसीयत का गहरा प्रभाव रहा।

चार्ट 3

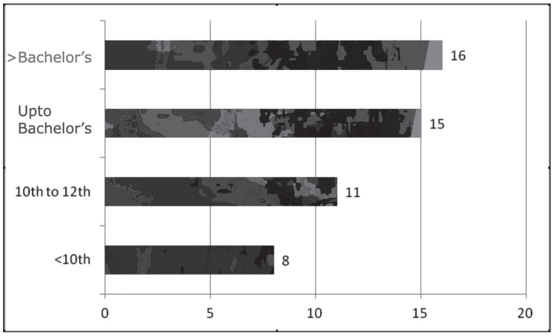

वर्तमान जेन्डर पहचान

बातचीत की शुरुआत में ही हमने अपने उत्तरदाताओं से पूछा कि वे अपनी वर्तमान जेन्डर पहचान क्या मानते हैं। हमने अपनी ओर से कोई विकल्प नहीं दिए, ताकि वे सुरक्षित महसूस करें और खुलकर इच्छानुसार जवाब दे सकें। अतः ये उनकी स्वयं–निर्धारित जेन्डर पहचानें थीं।

हमें विभिन्न जवाब मिलेः हमने 'आदमी' श्रेणी में उन सब को रखा जो अपने आप को आदमी या पुरुष के रूप में पहचानते थे; हमने 'औरत' श्रेणी में उन सब को रखा जिन्होंने अपने आप को औरत या स्त्री कहा; और 'अन्य' श्रेणी में उन सब को रखा जिन्होंने अपने आप को इन दो श्रेणीओं से कुछ अलग नाम दिए। यूं 50 उत्तरदाताओं में से 10 'आदमी' थे, 22 'औरत', और 18 अलग–अलग रूप से 'अन्य' श्रेणी में थे। विविधता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 'औरत' श्रेणी का भी अलग लोगों ने अलग तरह से वर्णन किया।

क्योंकि इस अध्ययन का एक मूल उद्देश्य है पता लगाना कि लोग किस तरह अपनी जेन्डर पहचान बनाते है, उसे जीते हैं, और उसे मायने देते हैं, इन सब पर आगे के एक भाग में लम्बी चर्चा की गई है।

चार्ट 4

वैवाहिक स्थिति

हमने अपने उत्तरदाताओं से उनकी वैवाहिक स्थिति के बारे में पूछा। जिन्होंने सिसआदमी से शादी की, उनमें से एक विवाहित थे, एक अलग हो चुके थे, तीन तलाकशुदा थे और एक अपने पति को खो चुके थे। पांच लोगों का मानना था कि वे किसी औरत से विवाहित हैं। एक व्यक्ति की शादी नॉन–सिसआदमी से थी और दो, जो कि अपने आप को किसी औरत से विवाहित मानते थे, अब अलग हो चुके थे। सात उत्तरदाताओं के बच्चे थे – खुद जन्मे या गोद लिए।

प्रवास

हमारे उत्तरदाताओं में से 25 लोग अपना पैदाइशी स्थान छोड़ कर कहीं और जा बसे थे। ग्रामीण क्षेत्रों में पले 11 उत्तरदाताओं में से केवल दो अब भी वहीं रह रहे थे। जेन्डर और/या जिंसीयत को लेकर तनाव काफ़ी हद तक इस स्थानांतरण का कारण रहा। सभी स्थान परिवर्तन करने वाले उत्तरदाताओं ने छोटे शहरों या गांवों को छोड़कर महानगरों या बड़े शहरों में बसना पसंद किया, जहां गुमनामी का फायदा था बिना हस्तक्षेप जी पाना, और जहां समूहों का साथ और सहारा भी मौजूद था। वे लोग, जो उच्च शिक्षा के लिए बड़े शहरों में आए, सभी 'औरत' या 'अन्य' श्रेणी की जेन्डर पहचान वाले मध्यम–वर्गीय लोग थे। सभी प्रवासियों का कहना था कि नई जगह में उन्हें ज़्यादा खुलकर जीने का और अपनी जेन्डर व जिंसीयत को अभिव्यक्त कर पाने का अवसर मिला।

वर्तमान आय

उत्तरदाताओं की बातचीत से साफ़ ज़ाहिर होता है कि बालपन में वर्ग और जाति प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा करती ही हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त गैर–नियामक जेन्डर और जिंसीयत भी अधिकारहीनता को और बढ़ाती है। इस संदर्भ में हमने अपने उत्तरदाताओं की वर्तमान आय के बारे में पूछा, ताकि उनके वर्ग और उससे जुड़ी परिस्थितियों को समझा जा सके।

जैसे कि चार्ट 5 दिखाता है, 27 उत्तरदाताओं कि मासिक आय 10,000 रुपये से कम थी। क्योंकि इनमें से अधिकांश लोग आजकल शहरों में बसे हैं, शहरी आय के अनुसार वे निम्न–वर्गीय कहलाएंगे। इन 27 में से 3 लोग छात्र थे, और इसके अतिरिक्त 5 ऐसे थे, जो ना तो कमाते थे, ना ही अपने पैदाइशी परिवार के सहारे जी रहे थे। अर्थात्, वे जीविका के लिए क्वीयर समूहों, मित्रों, निजी पार्टनर और व्यक्तिगत सहायता नेटवर्कपर निर्भर थे। ये आंकड़े एक कठोर वास्तविक्ता दर्शाते हैं – लगभग आधे उत्तरदाता निम्न वर्ग में थे और अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ पाए थे। बल्कि पैदाइशी वर्ग की तुलना में वे और नीचे ही फिसले थे।

मुंबई और दिल्ली शहरों में बसे उत्तरदाताओं की औसत आय बाकियों से ऊँची थी। इसके दो कारण रहेः इन दो महानगरों में रहने का खर्च सबसे अधिक है; और इन शहरों में बसे उत्तरदाता ज़्यादातर मध्यम या उच्च वर्ग से थे।

चार्ट 5 (रू 000 में आय)

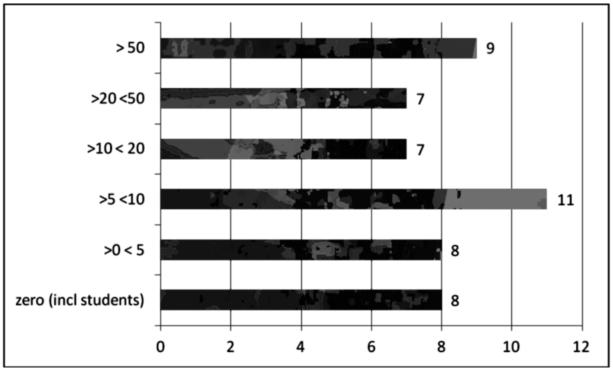

जी गई वास्तविकताए

बाइनरी जेन्डर व्यवस्था को तोड़ते हुए

हमने प्रॉजेक्ट पर इस अनुमान से काम शुरू किया कि अगर हम अपने उत्तरदाताओं का सहयोग और विश्वास पा सकें, ताकि वे हमसे खुलकर बात करें, तो हमें अपने सवालों के ज़रिए विश्लेषण के लिए अवश्य ही भरपूर तथा व्यापक डेटा मिलेगा। परन्तु इतनी गहरी और विस्तृत जानकारी मिलेगी, इसका हमें भी अंदाज़ा नहीं थाः आज भी, इस रिपोर्ट को लिखते समय, उनकी दर्द और खुशी, अनुभव और चाहत भरी यादें और कहानियां हमें उलझे जीवनों की पेचीदा बातें बताती हैं और हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं। हमारे उत्तरदाताओं ने हमें जो बताया, वे बातें हर सरल और पूर्व कल्पित धारणा को चुनौती देती हैं। उम्मीद है कि इस अध्ययन पर आधारित, आगे प्रकाशित होने वाली पुस्तक में हम सारी जानकारी की विस्तृत चर्चा कर सकेंगे। यहां हम इस अध्ययन के कुछ मूल परिणामों पर ध्यान देंगेः हमारे उत्तरदाताओं ने किस तरह परिवार, स्कूल, कार्यस्थान और सार्वजनिक स्थानों जैसे नियामक क्षेत्रों में अपनी गैर–नियामक ज़िन्दगी का सफ़र तय किया, और अपने घनिष्ठ साथियों के साथ और अपने आप में किस तरह सुकून पाया।

परिवार

कार चलाने से पहले तो लोगों को टेस्ट देना पड़ता है, पर बच्चे को पालने–पोसने से पहले किसी को भी अपनी काबिलियत साबित नहीं करनी पड़ती। मॉल में अनेकों परिवार नज़र आते हैं, जिन्हें देख कर ऐसा लगता है कि बस अब–तब आफत आई। क्या इनमें से किसी ने भी अपने आप से पूछा होगा कि वे वास्तव में काबिल हैं या नहीं?[11]

अपने पैदाइशी परिवार के साथ रिश्ता अधिकांश लोगों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू होता है। हमारे अध्ययन में शामिल अधिकतर लोगों के लिए ये रिश्ते आसान नहीं थे। एक के बाद एक कहानी में परिवार के सदस्यों द्वारा भेदभाव और कठोर हिंसा के किस्से सुनकर हमें काफ़ी हताशा हुई।

दुर्व्यवहार

दुर्व्यवहार और बेरुखी का सिलसिला छोटी उम्र से ही कायम हो जाता और अक्सर इसका गैर–नियामक जेन्डर अभिव्यक्ति या जिंसीयत से कुछ लेना–देना नहीं होता। प्रेम, जो एक बहुत ही गरीब परिवार में पले, उनको अब भी याद है कि बचपन में जब उन्होंने कार्टून फिल्म देखने के लिए दो रुपए मांगे, तो उन्हें कितनी हिंसा का सामना करना पड़ा। "लंच ब्रेक में घर आकर हमने फ़िल्म देखने की हठ करी और मां ने गुस्से में आकर हमारी ओर छुरी फेंकी, जिससे हमें काफ़ी बड़ा कट लग गया। फिर उसने घाव पर हल्दी मली, हमें दिलासा दिया और दो रुपये देकर फ़िल्म देखने के लिए भेज दिया।"

बेरुखी

चाहे इस हिंसा का कारण वयस्कों के कठिन परिश्रम और पिसती गरीबी से पैदा होने वाली कुण्ठा हो, या फिर सभी वर्गों और सामाजिक श्रेणियों में पाई जाने वाली घरेलू हिंसा हो, हमारे कई उत्तरदाताओं के दिल में बचपन में लगे घाव के चिह्न आज भी मौजूद हैं। मेघना याद करते हैं, "मम्मी और पापा दोनों हमें मारते थे। पापा तो हमें बहुत ही बुरी तरह, बेल्ट से मारते थे। कभी–कभी जब वे हमें मारते, तो हमें लगता कि हम एक कान में बहरे हो गए हैं या फिर हमारे कुछ दांत टूट गए हैं। ऐसा कभी हुआ नहीं, पर ऐसा ही महसूस होता था।"

11 इस अध्याय के हर भाग की शुरुआत में दिए गए अनाम उदाहरण हमारे इंटरव्यूज़ से हैं।

कई लोगों का बचपन उपेक्षा और अकेलेपन में गुज़रा। प्रिया कहती है, "मेरा भाई काफी वर्षों तक मुझे मारता था। शायद वह सब उसने मेरे पिता से सीखा था। मैं अकेलापन पसंद करने लगी और आज भी वैसी ही हूं।" एक ओर अपने हिंसक भाई, और दूसरी ओर कॉलेज में एक लड़की की ओर बिन–बोले आकर्षण से परेशान प्रिया ने नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। कहती है, "मैं 36 घंटे सोती रही और किसी को पता ही नहीं चला।" आम धारणा है कि परिवार एक निजी और सुरक्षित स्थान है, परन्तु इन सब अनुभवों को मिलाकर देखा जाए तो पता चलता है कि परिवारों के भीतर दमन और मानसिक आघात एक आम बात है।

कई उत्तरदाताओं को अपने परिवार में या फिर अपने घर में यौन शोषण का सामना करना पड़ा। 18 लोगों ने बताया कि उनपर बचपन में यौन हिंसा की गई। अपने अंकल, घरेलू नौकर और कई अन्य लोगों द्वारा यौन हिंसा की डरावनी यादें अभी भी मौशमी के साथ हैं। "यौन हिंसा के कारण मैंने बचपन में कई बार आत्महत्या करने की कोशिश की। मेरी कोई सुरक्षा नहीं थी . . . मैं एक उदास बच्ची थी . . . हमारा घर काफी बड़ा है जिसमें खुले आंगन हैं। छुट्टियों में मैं घर में अकेले होती थी। मैं हमेशा तनाव में रहती थी। मेरी मां मेरे खिड़की दरवाज़े बंद रखने पर हंसती थी।"

जब नेहा 10 साल की थी, उसके पिता परिवार से अलग रहने लगे। नेहा के पिता जब उनके साथ रहते थे, तब उनके द्वारा की यौन हिंसा के बारे में नेहा ने बतायाः

> *बाद के सालों में मुझे समझ आया कि मेरे पिता सेक्स अडिक्ट थे। उन्होंने मेरी बहन और मेरे, दोनों के साथ दुर्व्यवहार किया। हालांकि मेरे दोस्तों को इस बारे में पता था और वे मेरी मां को बताने वाले थे। पर मां के हिंसक व्यवहार को जानते हुए, मैंने उनसे वादा लिया कि वे मां को कुछ नहीं बताएंगे। तो मैंने उन्हें काफ़ी समय तक नहीं बताया, पर बताने के बाद उनकी प्रतिक्रिया देखकर मुझे लगा कि उन्होंने मेरी बात का विश्वास नहीं किया।*

स्पष्ट रूप से होने वाली हिंसा और दिखाई न देने वाली उपेक्षा के अलावा, लड़कों और लड़कियों के बीच भेदभाव की कहानियां भी सुनने को मिलीं। यह तो होना ही था, आखिर हमारे सभी उत्तरदाता जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित थे। और उनको पाला भी "बेटियों" की तरह से ही गया था। एक मज़दूर परिवार में पले, देवी का कहना है, "हमारी मां बहुत अच्छा मांस पकाती थी। वे पिताजी और भाइयों को मांस के टुकड़े देकर मसाले में पानी मिलाकर, उसके बाद हमें और खुद को परोसती। खुद भी न खाती और हमें भी न देती।"

कई बार रिश्तेदार भी नियंत्रण जताने की कोशिश करते हैं, चाहे माता–पिता खुले विचारों के ही क्यों न हों। सौम्या कहती है, "एक अंकल और आंटी आये . . . वे तीन घंटे बैठे रहे। मैं उनकी किसी बात का जवाब ही नहीं देती हूं। वे मेरे मां–बाप से पूछते रहते हैं कि मैं शादी क्यों नहीं करना चाहती। मेरे मां–बाप किसी प्रकार की दखलंदाज़ी को बढ़ावा नहीं देते। उनके सहयोग के कारण मेरे लिए थोड़ा आसान हो जाता है।"

कुछ मां–बाप के सहयोग के पीछे कुछ अन्य कारण होते हैं। अपने मां–बाप की इकलौती बेटी फाल्गुनी कहती हैः

> *मैं लड़कों के साथ खेलती, पेड़ों पर चढ़ती और मां–बाप को बताये बिना इधर उधर घूमती रहती। क्रिकेट, बास्केट बॉल, टेनिस, बैडमिंटन जैसे खेल खेलती। मुझ पर कोई रोक टोक नहीं थी। मुझे बहुत मज़ा आता था। . . . पापा का मेरी तरफ़ बर्ताव देखकर ऐसा लगता था कि पापा मुझ में लड़का देखना चाहते थे। वे मुझे बाज़ार ले जाते थे और जीन्स और शर्ट दिलवाते थे। मां विरोध करती . . . पर वे एक न सुनते। मुझे लगता है कि पापा चाहते थे कि मैं बड़े होकर एक लड़के की तरह आत्मनिर्भर बनूं, जिससे कि उन दोनों के जाने के बाद मैं अपनी देख–रेख खुद कर सकूं।*

परन्तु अक्सर परिवार अपने ऊपर यह ज़िम्मेदारी ले लेते हैं कि उनके बच्चे बड़े होकर निर्धारित जेन्डर के बेहतरीन उदाहरण बनें। हांलाकि कई उत्तरदाताओं ने कहा कि वे बचपन में हमेशा "लड़कों" वाली हरकतें करते थे और लड़कों के साथ खेलते थे, लेकिन बड़े लोग यह सब केवल उनकी युवावस्था शुरु होने से पहले तक ही सहन करते। अब जेन्डर के मानक और ज़्यादा सख़्ती से लागू किये जाते और उनका पालन और भी ज़्यादा सख्ती से करवाया जाता। जो लोग अपने निर्धारित जेन्डर से खुश नहीं थे, उनके लिए यौवनारंभ विशेष रूप से कष्टप्रद रहाः एक ओर शारीरिक बदलावों को स्वीकार करना कठिन था, और दूसरी ओर बाहरी प्रतिबन्ध और बढ़ गए।

राहुल याद करता है कि कैसे उसे लगता था कि उसका व्यक्तित्व उसके इर्द गिर्द की दुनिया से मेल नहीं खाता थाः

> *घर पर, 11वीं कक्षा से ही मैंने बात करनी शुरु कर दी थी कि मैं कैसा हूं। मैं खुद को पुल्लिंग में संबोधित करता था। पहले घरवालों को बुरा नहीं लगा, कि मैं अपने बारे में लड़के की तरह बात करता था, लेकिन बाद में वे पूछने लगे की मैं इस तरह क्यों बोलता हूं। . . . एक समय आता है, जब आप को अहसास दिलाया जाता है कि आप लड़की हैं। वह समय आ गया था। मुझे यह सब बहुत बेतुका लगा – मैं सोचने लगा कैसे, क्यों? . . . मैं उस समय बहुत चुप रहने लगा था।*

राहुल बेसब्री से 18 वर्ष की उम्र का इंतज़ार करने लगा क्योंकि उसे पता था कि तब वह जो चाहे कर सकेगा। हमसे बात करने के समय उसने सर्जरी की तैयारी में हॉरमोन्स लेने शुरु कर दिए थे, और हांलाकि उसके परिवार वाले उसे आज भी नहीं समझ पाते, लेकिन अब उसने सब्र कर लिया है।

कुछ उत्तरदाता, जो अपने आप को 'औरत' नहीं मानते थे, उन्हें उनके परिवारों ने यौवनारंभ के बाद भी उनके मनचाहे जेन्डर उनुसार रहने की अनुमति दे दी थी। सुमित के लिए, जो आज के दिन अपनी पहचान 'ट्रांसजेन्डर' मानते हैं, मानो उनकी और उनके परिवार की आकांक्षाएं एक ही जगह आकर मिल गईंः

> *जब हम अपने बचपन की फ़ोटो देखते हैं, तो हमने हर फ़ोटो में लड़कों वाले कपड़े ही पहन रखे हैं। . . . शायद इसलिए कि हम आठ बहने थीं, हमारे मां–बाप हमें अपना लड़का मानते थे। . . . पर सिर्फ इसलिए नहीं कि हमारे मां–बाप हमें लड़कों के कपड़े पहनने को देते थे। हमें अन्दर से लगता था कि हम एक लड़का हैं। . . . हमारी सभी बहनों की शादी हो गई और वे चली गईं। हम घर पर ही हैं और अपनी मां की देख–रेख करते हैं, सब कुछ करते हैं, उन्हें घर के अन्दर और बाहर से जो भी ज़रूरत हो। तो एक तरह से सभी के लिए यह अच्छा है, क्योंकि ये सब काम करने के लिए कोई तो है।*

लेकिन फिर भी, सुमित को परिवार से बेशर्त स्वीकृति नहीं मिली। घर में, वे अपनी जिंसीयत के बारे में किसी से कभी भी बात नहीं कर पाए। ना ही घरवाले पूछते हैं, हालांकि उन्होंने उनपर शादी करने का दबाव भी कभी नहीं डाला है।

अन्य उत्तरदाताओं के साथ भी, उनके द्वारा जेन्डर के नियमों का उल्लंघन तब तक समस्या नहीं बनी, जब तक कि उनकी गैर–नियामक जिंसीयत सामने नहीं आई। अतः उनके पास अपने परिवारों पर सहज रूप से विश्वास करने का विकल्प ही नहीं था, हालांकि अक्सर उत्तरदाता काफ़ी पहले से ही अपनी जिंसीयत से वाक़िफ़ थे, और उनके अन्य जस्जेनिव के साथ रिश्ते भी रह चुके थे। जब उनके परिवारों को इन रिश्तों के बारे में पता चला, या उनके बच्चों के टीचर या दोस्तों ने उन्हें इन रिश्तों के बारे में बताया, तो उन्हें कड़ा दंड दिया गया। उन पर लगाई गई पाबंदियां और भी कड़ी हो गईं, और चाहे उन्हें घर पर कैद न किया गया हो, उनके आने–जाने पर नज़र रखी जाने लगी और रोकटोक होने लगी।

शायद यह कहानी कई लोगों की होगी पर सुनने में नही आती, एक उत्तरदाता ने अपने पार्टनर के साथ मिलकर आत्महत्या करने की कसम के बारे में बताया, जो उन्होंने इसलिए ली थी क्योंकि वे न तो अब अपने परिवारों के साथ रह पा रहे थे, और न ही बिना नौकरी व आश्रय के वे आत्मनिर्भर हो कर जी पा रहे थे।

लगता है जैसे आत्महत्या की कोशिश करना, खुद को काटना या अन्य प्रकार से खुद को चोट पहुंचाना, डिप्रेशन में रहना, एक आम बात बन चुकी है। पैदाइशी परिवार में रहते हुए हमारे उत्तरदाताओं में से 13 ने आत्महत्या करने की कोशिश की। दो अन्य उत्तरदाताओं ने इसके बारे में बहुत गंभीरता से सोचा। ऐसे कुछ प्रयासों के पीछे कारण था जेन्डर और जिंसीयत से जुड़े तनाव, परन्तु कई बार वजह थी आम अभाव, उपेक्षा और यौन हिंसा।

यह सब देखते हुए कोई आश्चर्य नहीं होता कि एक तिहाई उत्तरदाताओं ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण अंश अपने परिवारों से गुप्त रखे। अर्थात् वे अपने निजी रिश्तों के बारे में कभी बोल नहीं पाते और इस कारण अकेले में ही गंभीर भावुक तथा अन्य तनाव झेलते रहते हैं। इस बीच उनके परिवार पूर्णतया बेखबर बने रहते हैं। ऐसी चुप्पी और उपेक्षा न केवल अपनों को दूर करती है, यह एक प्रकार की हिंसा भी है।

जब कभी मां–बाप संवेदनशील भी रहे, समाज में होमोफ़ोबिया इतना गहरा है कि वह अपने आप में बाधा बन जाता है। अदिति नन्ही सी थी, जब उसके पिता गुज़र गए। मां और आंटी ने उसे पाल–पोस कर बड़ा किया। उसकी मां हमेशा सहानुभूति दिखाती और हर समय अदिति का साथ देती। परन्तु इस माहौल में भी अदिति ने अपनी मां को नहीं बताया कि उसका एक लम्बे अरसे से किसी के साथ रिश्ता था, जिसे वह अब भी "अपनी ज़िंदगी का प्यार" बताती है, जो अब टूट गया है। बल्कि अपनी ज़िंदगी के सबसे महत्वपूर्ण रिश्ते को खो देने पर अदिति ने तीन बार आत्महत्या करने की कोशिश की। "नौकरी में तनाव का कारण देकर मैंने बात घुमा दी। मां ने कहा फिर नौकरी छोड़ दो, मैं तुम्हारी देखभाल कर लूंगी। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मै जी नहीं पाउंगी। तब मैंने आत्महत्या का विचार छोड़ दिया।"

प्रतिबन्ध निगरानी

अजीब बात है, कि जहां एक तरफ़ मां–बाप अपने बच्चों की स्वयं निर्धारित जिंसीयत नहीं स्वीकार सकते, वहीं दूसरी ओर वे उनकी शादी करने के हमेशा उत्सुक होते हैं। कई उत्तरदाताओं की शादी ऐसी ज़बरदस्ती में हुई। छः उत्तरदाताओं की किसी न किसी समय सिसआदमी से शादी हो चुकी थी। इनमें से दो की शादी बहुत कम उम्र में की गयी। एक ने अपने अत्याचारी परिवार से छुटकारा पाने की उम्मीद से शादी की, परन्तु खेदजनक परिणाम मिला – वैवाहिक जीवन में भी हिंसा ही झेलनी पड़ी। बाकी तीन ने शादी टालने की बहुत कोशिश की, पर असफ़ल रहे। अंत में पांच उत्तरदाता अपनी शादी छोड़ कर मन पसंद जीवन व्यतीत करने लगे। पर ऐसा संभव होने से पहले सभी लोगों को भयंकर दुःख, ग्लानि और खेद की भावनाओं से गुज़रना पड़ा।

घर पर सख़्त प्रतिबन्ध और निगरानी, गैर–नियामक जेन्डर या जिंसीयत के कारण मां–बाप या भाई–बहन द्वारा हिंसा, अपने पार्टनर से जबरन अलग किए जाने, या फिर रिश्ते में जुड़े एक या दूसरे व्यक्ति पर शादी के दबाव की वजह से कई उत्तरदाता परिवार छोड़ने पर मजबूर हो गए, अकेले या अपने साथी के साथ।

ग्रामीण क्षेत्र के रहने वाले कमल और मुरली के रिश्तों के बारे में सबको पता चल जाने के बाद, दोनों अपने प्रेमियों के साथ भाग गए। एक दिन जय की गर्लफ्रेन्ड की मां ने उन्हें एक साथ देख लिया, जबकि उनका मिलना मना था। गर्लफ्रेन्ड घर जाने से बहुत डर रही थी, इसलिए वे दोनों घर से भाग गए। अपना परिवार और शहर छोड़कर रंजना भी अपनी गर्लफ्रेन्ड के साथ भाग गयी। वे ऐसे शहर में जा बसे, जहां उन्हें क्वीयर लोगों की संगत मिली। रंजना का परिवार उसकी जिंसीयत से अनजान था, पर शादी का दबाव डाल रहे थे। दूसरी ओर सॅम घर छोड़कर भागने को मजबूर हो गया क्योंकि उसका व्यवहार "अच्छी लड़कियों" जैसा न

था, बल्कि उसका पहनावा और व्यवहार लड़कों जैसा होता और वह स्कूल में लड़कियों से फ़्लर्ट करता, जिस कारण से उसे घर में मार पड़ती और खाना भी नहीं दिया जाता था।

जब हमेशा से ही पारिवार के साथ रिश्तों में दरार रहती है, तो भाग निकलना एक आसान रास्ता लगता है। लेकिन प्रेमपूर्ण पारिवारिक रिश्तों से अलग होने में बहुत कठिनाई होती है। कुछ मामलों में लम्बे समय में या धीरे–धीरे कुछ रिश्ते बेहतर हो जाते हैं, नहीं तो फिर सुखी परिवार की छवि में दरार पड़ जाती है।

नील का एक अन्य जस्जेनिव के साथ पुराना रिश्ता है, जिसकी समस्याओं के बारे में उसने विस्तार से नहीं बताया। परन्तु इतना कहा कि कई साल पहले उसके पार्टनर के परिवार ने उनके खिलाफ़ पुलिस में शिकायत दर्ज कर दी थी। आज भी यह परिवार उनके रिश्ते से समझौता नहीं कर पाया। नील का परिवार भी रिश्ते को पूरी तरह नहीं स्वीकारता। "मैं परिवार की दुलारी थी, जिस कारण अब सभी उदास हैं। मैं हमेशा पढ़ाकू और अच्छी बच्ची मानी जाती थी पर अब सब कुछ बदल गया है।" अपने बचपन के बारे में कहती हैं, "वह तो एक सुनहरा समय था, पर आजकल बहुत बुरा लगता है।" नील अपने पार्टनर के साथ घरवालों को मिलने जाती है, पर परिवार के कुछ सदस्य उनसे बात नहीं करते।

कुछ ऐसे उत्तरदाता भी थे, 50 में से 3, जिनके परिवारों ने उनकी जेन्डर पहचान को समझा और अपनाया या जो जिंसीयत का भेद परिवार में खोल पाए, और उन्हें दण्डित नहीं होना पड़ा। ज़्यादातर तो ऐसा ही पाया गया कि मां–बाप, या एक या दोनों, शुरु में विरोध करते और धीरे धीरे समझौता कर ही लेते। कुछ उत्तरदाता अपने पैरों पर खड़े होने के बाद फिरसे अपने पैदाइशी परिवार से जुड़ पाए। कहीं–कहीं तो ऐसा भी हुआ, कि साथ रहने वाले पार्टनर्स में से किसी एक के मां–बाप उनके साथ रहने भी लगे।

> कई बार पढ़ाई या काम को लेकर घर छोड़ पाना आसान होता है और नई जगह मन चाही ज़िंदगी जी जा सकती है। ना तो परिवार को अपने बारे में ज़्यादा बताने की ज़रुरत पड़ती है और ना ही पूरी तरह से रिश्ता तोड़ने की। किन्तु कई लोगों के लिए ऐसा कोई विकल्प नहीं होता। वे अपनी ज़िंदगी के अहम हिस्से छुपाकर पैदाइशी परिवार में रहते हैं और थोड़ी बहुत स्वीकृति प्राप्त करने के लिए परिवार में आर्थिक या अन्य योगदान देते हैं। अंततः, भले ही हमारे उत्तरदाता अपनी इच्छानुसार परिवार में रहे, या घर छोड़ने पर मजबूर हुए, उन लोगों का अकेलापन साफ़ उभर कर आता है, विशेषकर उनका जो बिलकुल अकेले थे, या जिनका उनके पार्टनर के अतिरिक्त कोई नहीं था, जिसके साथ वे अपनी ज़िंदगी के सपने और संघर्ष बांट सकें।

हालांकि हमारे अधिकतर उत्तरदाताओं की ज़िंदगी काफ़ी कष्टप्रद रही, पर वंचित बचपन और दुखदायी या हिंसक प्रेम रिश्तों के बीच कई बार अनपेक्षित जगहों से उन्हें सहारा भी मिला। कई बार परिवार या आस पड़ोस में अपने जैसे लोगों के बारे में जान कर हौसला मिलता। छोटे शहर के मध्यम–वर्गीय परिवार में पले मेघना की ज़िंदगी में नए आयाम खुल गए, जब उन्हें अपनी आंटी के हमजिंसी रिश्ते और ज़िंदगी के बारे में पता चला।

> कई लोगों को जानवरों में सुकून मिलता जो उनके जीवन का हिस्सा थे। अरुण का कहना है, "बचपन में हमारे पास सात कुत्ते थे, लव बर्ड्स और एक बगीचा।" यह जानवर बचपन से उनका सहारा थे, क्योंकि उनके पिता के हाथों उन्हें काफी हिंसा का सामना करना पड़ा। दिवाकर कहता

है कि बुरे से बुरे समय में, जब वह किसी को अपना हाल नहीं सुना पाता तो, "हां, एक गाय थी, जिसके साथ मैं समय बिताता और उससे ही बातें करता था।"

कुछ लोगों को आस–पड़ोस या विस्तृत परिवार से भावुक या आर्थिक सहायता मिली। अल्पना, निधि और जय ने बताया कि उनके अंकलों ने उनकी कैसे अलग–अलग तरीकों से देखभाल की। एक चाल में पले जूही की मां उनसे दूर–दूर रहती थी और ज़्यादा बातचीत भी नहीं करती थी, लेकिन जूही प्यार से पड़ोस की औरतों को याद करते हुए कहते हैं, "सामुदायिक जीवन के कारण . . . हमें लगता था कि हमारी कई मांएं हैं और हमें केवल अपनी मां के सहारे कभी नहीं जीना पड़ा।"

एक अन्य उत्तरदाता संगीत सीखते थे और अपने गुरु के साथ काफी समय बिताते थे, जो उनके अनपेक्षित सहयोगी बन गए। "वे सदैव विनम्र, भले और हंसमुख रहते, कभी भी मुझ पर चीखते चिलाते नहीं . . . हम हर विषय पर बात करते और जब तक हम 16–17 साल के हुए वे हमारे सबसे अच्छे मित्र बन चुके थे।" उम्र में कई दशक बड़े होने के बावजूद, ये एकमात्र व्यक्ति थे, जिनको वे अपनी गर्लफ्रेन्ड की आत्महत्या के बारे में बता पाए।

अध्ययन के ये सारे परिणाम इस बात को रेखांकित करते हैं, कि अपने पैदाइशी परिवार के साथ लोगों के रिश्तों को समझना अति आवश्यक है – न केवल उनके बड़े होते समय, पर वयस्क के रूप में भी – क्योंकि इसी से उनकी बाद की ज़िंदगी को सही तरह से समझा जा सकता है। पैदाइशी परिवार में क्या होता आया है, परिवार के अंतर्गत निहित हिंसा को, और किस प्रकार किस प्रकार के सत्ता के संबंध हैं, इन्हें भी समझना बहुत ज़रूरी है।

परिवार एक ऐसा स्थान है, जहां लोग परवरिश और सहानुभूति की उम्मीद करते हैं, परन्तु इस अध्ययन में परिवार एक हिंसात्मक और असहयोगी स्थान के रूप में पेश आया, जो कि समाज में मौजूद सत्ता के संबंधों को बढ़ावा देता है।

हमारे समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे के कारण, जस्जेनिव को परिवार में अधिक हिंसा और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। स्थिति तब और भी बिगड़ जाती है, जब गैर–नियामक जेन्डर और जिंसीयत इसमें जुड़ जाते हैं।

हमारे अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पैदाइशी परिवार में हस्तक्षेप करना बहुत ज़रूरी है, जिससे कि वह युवाओं के लिए सुरक्षित और सहयोगी स्थान बन सके, जहां वे अपनी ज़िंदगी के रास्ते खुद चुन सकें, भले ही उनके निर्णय आम समाज के नियमों से अलग हों। तभी जेन्डर और जिंसीयत संबंधित सामाजिक निर्देशों में बदलाव आएगा।

पैदाइशी परिवार
एक ऐसा स्थान जिसमें
हस्तक्षेप ज़रूरी हो जाता है

स्कूल और कॉलेज

मुझे स्कूल के किसी एक व्यक्ति के प्रति रोष नहीं है, बल्कि पूरी व्यवस्था से है।

शिक्षा का लोगों पर दोहरा प्रभाव हो सकता है। एक ओर, उसे समानता का माध्यम माना जाता है, जहां हर दाखिल व्यक्ति एक समान है। दूसरी ओर, यह समाज की हर असमानता को कायम रखती है। ना केवल जाति, वर्ग, काबिलियत और जेन्डर की भिन्नता को बढ़ावा दिया जाता है, हर व्यक्ति, जो ढांचे में ढलने को तैयार नहीं, उसे अलग और दण्डित किया जाता है। ज़ाहिर है, कि शिक्षा ऐसे हर व्यक्ति के लिए ज़रूरी है, जो आर्थिक स्वतंत्रता पाकर मनचाही ज़िंदगी जीने का इच्छुक है, और सभी जस्जेनिव पर यह बात लागू होती है। परन्तु हमारे उत्तरदाताओं की कहानियों से साबित होता है कि जिनको शिक्षा और हुनर प्राप्त करने की सबसे ज़्यादा ज़रुरत थी, उन्हें ही शिक्षा की व्यवस्था ने अपने हाल पर छोड़ दिया।

शिक्षा के दौरान हमारे उत्तरदाताओं के कुछ अनुभव तो अपेक्षित थे, पर जैसे कि इस अध्ययन के बाकी पहलुओं में पाया गया, कुछ नए अनुभव भी सुनने को मिले – कभी सुखद और कभी गंभीर।

50 में से 8 उत्तरदाताओं को घर की तुलना में स्कूल ज़्यादा पसंद था, क्योंकि वहां उन्हें घर की घुटन से छुटकारा मिलता। जिन उत्तरदाताओं को घर में अत्याचार, भेदभाव या उपेक्षा सहनी पड़ती, उनको स्कूल में अन्य छात्रों और अध्यापकों से आवश्यक स्वीकृति मिली। कभी–कभी बच्चों को जो प्रेम और ध्यान घर पर नहीं

मिलता, वह उन्हें अध्यापकों द्वारा मिला, जैसे कि, एक भूखे और मैले बच्चे को खिलाना और नहलाना; मां के गुज़र जाने के बाद एक गुमसुम बच्चे को घर ले जाकर अपने बच्चों के साथ खेल खिलाना।

घर में झरना की ज़िंदगी मुश्किलों से भरी थी। वह खुद को औरों से नीचा मानती और घबराई हुई रहती थी। लेकिन वह याद करती है कि कैसे उसने स्कूल में एक लेख लिखा, जिसे पढ़ते ही "मेरी टीचर मुझे उठाकर स्टाफ रूम ले गयीं और प्रशंसा में बोलीं 'देखो इतनी छोटी सी लड़की ने क्या लिखा है।' उसके बाद मुझे स्कूल में विशेष ध्यान मिलता और मेरी ज़िंदगी बदल गयी – मनचाही ज़िंदगी जीने का साहस मिल गया।"

कई बार अध्यापकों की पहल या फिर पढ़ाई का कोई विषय लोगों की ज़िंदगी बदलने का माध्यम बन जाता है। कमल बचपन से विकलांग था, और शायद पढ़ाई ही न कर पाता, परन्तु स्कूल टीचर ने उसके मां–बाप को प्रोत्साहित किया कि वे उसे स्कूल भेजें। रोमा कॉलेज के एक अध्यापक से इस कदर प्रभावित हुई कि वह स्कूल में अपने साथ की गई दादागिरी को काफी हद तक भुला पाई। उधर कनिका को सोश्योलॉजी का विषय इतना भाया कि यह उनका "मित्र" बन गया, यह वही विषय था जिसकी तलाश वे हमेशा से कर रहे थे।

जहां एक ओर स्कूल के यह कुछ सुखद अनुभव हैं, वही कुछ दर्दनाक यादें भी हैं। सॅन्डी कहते हैं, "स्कूल में सब को उनके पिता के आर्थिक स्तर के अनुसार श्रेणी दी जाती। . . . वर्ग, धर्म, जेन्डर, इन सब के आधार पर कुछ लोग बाकी लोगों की खिल्ली उड़ाते और उन्हें अलग कर देते।"

दलित या अन्य पिछड़े वर्ग के बच्चे स्कूल में ऐसा भेदभाव बड़ी मुश्किल से झेल पाते हैं। अगर खुद उनके परिवारों में जाति–आधारित भेदभाव पर सवाल उठाने का माहौल हो तो शायद थोड़ा आसान होता है। अतः जमुना इस प्रकार के जाति–संबंधित टिप्पणियों से ज़्यादा प्रभावित नहीं होती थी, लेकिन दूसरी ओर वासु, अभी तक "नीची जाति" की शर्म को महसूस करता है। वासु की कहानी दर्शाती है कि किस तरह से अन्य प्रकार की अधिकारहीनता जेन्डर नियमों के उल्लंघन के साथ मिल जाती है – वासु एक दलित था और बहुत ही गरीब परिवार से था। घर और स्कूल में उसे "लड़कियों" की तरह व्यवहार करने की मजबूरी से घृणा थी। अंततः, कई अन्य उत्तरदाताओं की तरह ही, उसने भी स्कूल जाना छोड़ दिया।

> कभी–कभी अन्य प्रकार की अधिकारहीनता के बावजूद, व्यक्ति के अपने इरादे, और सीखने–पढ़ने की तीव्र इच्छा, लोगों को आगे ले जाती है। माला एक ग्रामीण, जनजातीय और बहुत गरीब परिवार में पले–बढ़े थे। पढ़ाई–लिखाई की कोई गुंजाइश नहीं थी और उनकी शादी छोटी उम्र में ही कर दी गयी। एक दिन उनकी भेंट कुछ ईसाई सिस्टर्स से हुई, जो एक ग्रामीण शिक्षा केंद्र चलाती थीं। उनकी मदद से माला ने पारिवार की उपेक्षा और निंदा के खिलाफ़ संघर्ष कर, मिट्टी और दीवारों में लिख लिख कर अपने आप को साक्षर बनाया। जब हम उनसे मिले, वे स्कूल की अंतिम परीक्षा की तैयारी कर रहे थे।

संध्या की मां एक खेतिहर मज़दूर थी। संध्या का कहना है, "हम सुबह 7 से 12 बजे के बीच स्कूल जाते थे, और फिर जहां भी मां काम कर रही होती थी, वहां भाग कर पहुंच जाते। वे भाई को लेकर काम पर जाती थीं और हम वहां पहुंच कर मां का काम संभाल लेते, और फिर काम पूरा होने पर हम दोनों एक साथ घर लौटते।" संध्या ने ज़ोर दिया कि उन्हें स्कूल और कॉलेज जाने दिया जाय। जब हम उनसे मिले, वे एम ए डिग्री की पढ़ाई कर रहे थे।

हमारे उत्तरदाताओं का शिक्षा–स्तर नीचे दी गई सारिणी में दिया गया है:

शिक्षा	औरत	अन्य	आदमी	कुल
10वीं कक्षा से कम	1	2	5	8
12वीं कक्षा तक	2	7	2	11
बी ए तक	8	5	2	15
बी ए के आगे	11	4	1	16
कुल	22	18	10	50

19 उत्तरदाताओं ने स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं की या फिर कॉलेज नहीं गए। इनमें से 16 अपने आप को 'औरत' के रूप में स्वीकार नहीं करते। दूसरी ओर 22 उत्तरदाताओं अपने आप को 'औरत' मानते हैं और इनमें से 19 बी ए या उसके आगे पढ़ पाए।

हालांकि अपनी निर्धारित जेन्डर पहचान को नकारने वाले लोगों द्वारा बड़ी संख्या में स्कूल छोड़े जाने के कारण केवल स्कूल से ही नहीं जुड़े थे – कई घरेलू हिंसा के कारण भाग गए या फिर शादी करने के दबाव के कारण – हमें यह मानना होगा कि स्कूल भी इस स्थिति को बदलने में नाकामयाब रहे, मतलब यह कि स्कूलों ने भी मुख्यधारा समाज से अलग भूमिका नहीं निभाई।

कई उत्तरदाताओं के लिए स्कूल एक ऐसी जगह थी, जहां उनकी खुद के बारे में सोच को पूरी तरह से नकारा गया। इसके लिए कई बार स्कूल यूनिफॉर्म का नियम ही काफ़ी था। अपने आप को 'आधा पुरुष, आधा स्त्री' मानने वाले सनी को स्कूल छोड़ना पड़ा, क्योंकि उन्हें स्कर्ट पहनने को मजबूर किया जाता। ॲलेक्स, सात वर्ष की उम्र में अपने बोर्डिंग स्कूल का अनुभव याद करते हुए कहते है:

हम स्कूल के बाहर लड़कों की तरह पॅन्ट–शर्ट ही पहनते थे। . . . एक अंग्रेज़ी की टीचर थी, जिसने शायद ठान लिया था, कि वह मुझे स्कर्ट पहनाकर ही रहेगी। . . .उसे चुप करवाने के लिए हम पॅन्ट के ऊपर स्कर्ट पहन लेते थे, और जब उसने आपत्ति की, तो हमने कहा, 'आपने हमें स्कर्ट पहनने को कहा है, यह तो नहीं कहा कि हम पॅन्ट नहीं पहन सकते।' वह बहुत ही परेशानी वाला समय था, जब वह हमें स्कर्ट पहनने को मजबूर करती थी। हम हर वक्त उसी के बारे में सोचते रहते थे।

हिंसा के अनुभवों के पीछे गैर–नियामक जिंसीयत एक बड़ा कारण रही। सॅम को स्कूल से तीन महीनों के लिए सस्पैंड कर दिया गया था, क्योंकि जिस लड़की के प्रति वह आकर्षित था, उसने स्कूल प्रिन्सिपल से शिकायत कर दी थी। इसी प्रकार कई लोगों ने उनकी सेक्शुॲलिटी का खुलासा किए जाने के दर्दनाक तरीकों के बारे में बताया। निधि हर दिन स्कूल जाने के लिए तत्पर रहते थे, और उन्हें उनके मित्र और अध्यापक बहुत प्यार करते थे, कि एक दिन अचानक सब बदल गया:

हम 8वीं कक्षा में थे और हमारी बॅच सेरेमनी चल रही थी। हमें मंच पे बुलाया गया। हमें लगा कि हमें फिर से कप्तान बनाया जाएगा। परन्तु हेड मिस्ट्रेस ने हमारी बेइज्ज़ती करते हुए कहा 'इसे कैसे कप्तान बनाया जा सकता है, यह तो लड़कियों को चूमती है।' उन्होंने सबके सामने यह बात बोल दी। हमें इससे बहुत ठेस पहुंची। हम घर से भी ज़्यादा स्कूल को पसंद करते थे। स्कूल हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। हमें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि हम क्या करें।

10वीं कक्षा में फेल होने के बाद तुली ने पढ़ाई छोड़ने का निर्णय ले लिया, हालांकि उसका मध्यम–वर्गीय परिवार उसके इस निर्णय से बेहद नाखुश रहा। स्कूल के आखिरी साल में यूं असफ़ल रहने का कारण तो तुली ने स्पष्ट नहीं किया, परन्तु उसके अनुभवों से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इसका कारण स्कूल, अध्यापक, या पढ़ाई के विषय नहीं थे। कारण था, उसका अन्य लड़कियों के प्रति आकर्षित होना, जिसे वह व्यक्त नहीं कर पाती थी। इस भावुक भंवर में फंसी हुई तुली को ना स्कूल, और ना ही परिवार में कोई सहारा मिल पाया।

हमजिंसी रिश्ता न होते हुए भी सेक्शुॲलिटी अपने आप में तनाव और निंदा का कारण बन जाती है। नेहा, जिसके घर में बहुत अशांति रहती थी, और जिसे स्कूल जाना बहुत पसंद था, कहती है कि बाद में यही स्कूल उसके लिए एक भयानक अनुभव बन गया। पूरी कक्षा में केवल नेहा ने लड़कों के साथ अपनी कामुकता जांचने या व्यक्त करने की कोशिश की। उसका कहना है, "जब मैं गलियारों से गुज़रती, तो लोग कहते, 'लो, आ गई रंडी।' पूरे स्कूल में यह बात फैल गयी। इसके बाद उस स्कूल में रहना मेरे लिए असंभव हो गया।"

जैसे कि सारिणी में दर्शाया गया है, कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने वालों में से अधिकतर खुद को 'औरत' की पहचान देने वाले उत्तरदाता थे, जिनमें से एक को छोड़कर, सभी ने स्कूल की पढ़ाई पूरी की थी। जबकि हमने जिन्हें 'अन्य' जेन्डर में श्रेणीबद्ध किया है, उनमें से दो को वयस्क उम्र के बाद ही शिक्षा प्राप्त हुई, और पांच 'आदमी' उत्तरदाता स्कूल के फाइनल पास नहीं कर पाए या वहां तक पहुंचे भी नहीं।

इन तथ्यों के आधार पर हमने अनुमान लगाया है कि, जहां खुद को 'औरत' की पहचान देने वाले जस्जेनिव, संभवतः आत्मनिर्भर होने और शादी से बचने की आवश्यकता के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित होते हैं, वहीं जेन्डर के नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों को इस प्रकार के अवसर और पहुंच प्राप्त नहीं हो पाते (हालांकि उनकी भी आत्मनिर्भर होने की ज़रूरत उतनी ही तीव्र होती है)। लेकिन इसके साथ यह ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि हमारे उत्तरदाताओं में से खुद को 'आदमी' की पहचान देने वाले अधिकांश लोग काफ़ी मुश्किल परिस्थितियों से आते हैं और वे काफ़ी छोटी उम्र में ही घर छोड़ने पर मजबूर हो गए थे।

> हालांकि शिक्षा आर्थिक स्वतन्त्रता और व्यक्तिगत आज़ादी का माध्यम बननी चाहिए थी, गैर–नियामक जेन्डर और सेक्शुॲलिटी कई उत्तरदाताओं के लिए इस रास्ते में बाधा बन गए। अक्सर, युवाओं को समाज के ढांचे में ढालने के प्रयास में, स्कूल भी उनके प्रति हिंसा की एक अन्य जगह बन जाते हैं। क्वीयर जस्जेनिव को स्कूलों में अधिक स्वीकृति और समर्थन दिलाने के लिए एक रणनीति पर चिंतन करने की घोर आवश्यकता है, जिससे कि विविधता को बढ़ावा मिले और शिक्षा प्रणाली में गढ़े पितृसत्तात्मक विचारों में बदलाव लाया जा सके।

खेल

मुझे अपने जेन्डर से परेशानी नहीं हुई, शायद इसलिए क्योंकि मेरे जैसे और लोग भी थे।

ध्यान देने लायक बात है कि हमारे कई उत्तरदाता यौवनारंभ के साथ ही खेलों, विशेषकर प्रतियोगी खेलों, में लग गए। इस समय तक अधिकांश उत्तरदाताओं के व्यवहार पर और अधिक प्रतिबन्ध लागू होने लगे थेः क्या पहनना है या नहीं, किसके साथ खेलने की या फिर कितनी देर बाहर रहने की इजाज़त है, इन सब मामलों में कड़ी निगरानी रहती। कई लोगों के लिए यह समय इसलिए भी मुश्किल–भरा था, क्योंकि एक ओर शारीरिक बदलाव हो रहे थे और दूसरी ओर उन्हें हमजिंसी आकर्षण का एहसास हो रहा था।

खेलों के कारण उत्तरदाता अपने शरीर के साथ एक सकारात्मक रिश्ता बना पाए। साथ ही वे अपनी क्षमता और काबिलियत के उन पहलुओं को निखार पाए, जो कि स्कूल के पाठ्यक्रम में संभव नहीं होता। पढ़ाई छूटने के साथ खेल भी छूट जाता, जिसका कई उत्तरदाता को अत्यंत खेद था। बहुत कम उत्तरदाता स्कूल या कॉलेज छोड़ने के बाद अपनी खेल में रुचि को कायम रख पाए।

50 में से 6 उत्तरदाताओं को खेल जगत में सामान्य से अधिक सफ़लता पाना इस छोटीसी संख्या में काफ़ी बड़ी बात लगती है। ध्यान देने योग्य है, कि इनमें से 5 उत्तरदाता निम्न या मध्यम–वर्गीय परिवारों से थे और खेल में आगे बढ़ने के लिए उन्हें परिवार से कोई सहायता या प्रोत्साहन नहीं मिला। तब भी खेलों के प्रति उनकी इतनी ज़्यादा तत्परता को उनके बताये गए अनुभवों के आधार पर समझा जा सकता है।

खेल के क्षेत्र में उत्तरदाताओं ने कई प्रकार के सकारात्मक अनुभवों के बारे में बताया – वहां उन्हें एक अलग प्रकार की सीख मिली, कोच/शिक्षक का समर्थन, और जगहों की यात्रा या अपने ही इलाके में खुले घूमने का अवसर, साथ ही ऐसी चीज़ें करने का मौका जो अक्सर "लड़कियों" को करने नहीं दी जातीं। सिमरन, जो स्कूल के दिनों में खेल में लगातार भाग लेती थी, का कहना है, "खेल वास्तव में आपको अन्य बातों को किनारे रख कर केंद्रित होना और तनाव से जूझना सिखाता है। . . . मुझे याद है कि इससे मुझे बहुत मदद मिली।"

जिन्हें आम ज़िंदगी की परिस्थितियों में उनके गैर–नियामक जेन्डर व्यवहार के कारण आलोचना का सामना करना पड़ता था, उन्हें खेल के मैदान में अपने जेन्डर को व्यक्त करने का सुरक्षित मौका मिला, और कुछ नहीं, तो वे अपनी क्षमता के बल पर कुछ छूट तो निश्चित रूप से हासिल कर ही पाए, विशेषकर अगर वे अपने खेल में अच्छे थे। उदाहरण के लिए, सुमित को स्कूल में पॅन्ट पहनने की इजाज़त मिल गयी, क्योंकि वे अपनी टीम को हर प्रतियोगिता में विजय दिलाते थे। "नवीं कक्षा से लड़कियों को साड़ी पहननी पड़ती थी। एक टीचर ने हमें साड़ी पहनने के लिए मजबूर करने की कोशिश की, लेकिन हमने नहीं पहनी। खिलाड़ी होने के नाते हमें कुछ छूट और सुविधाएं मिलीं। हम पढ़ाई में अच्छे नहीं थे, लेकिन हमने स्कूल के लिए कई ट्रोफी जीती थीं, इसलिए हमें कुछ मामलों में ढील मिल गयी।"

खेल जगत में औरतों और आदमियों के लिए जगहों के विभाजन से कई क्वीयर जस्जेनिव उत्तरदाताओं को अपने रिश्तों की शुरुआत करने और अपनी जिंसियत को जानने और समझने के लिए एक सुरक्षित स्थान मिला। कभी–कभी कोच भी गैर–नियामक जिंसीयत को बढ़ावा देते थे। खेल से जुड़े लगभग सभी उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें खेल के क्षेत्र में "अपने जैसे" लोग मिले और इससे उनका अकेलापन और सबसे

अलग होने का अहसास काफ़ी हद तक दूर हुआ। क्रिकेट की खिलाड़ी, अदिति कहती है, "पिछली प्रतियोगिता में नए लोगों से मिलकर मैं बहुत खुश हुई।"

हालांकि खेल जगत में कुछ जेन्डर–संबंधित नियम इतने कड़े नहीं होते, फिर भी खेल व्यवस्था में जेन्डर निहित है। कुछ खेलों को "लड़कियों" के खेल माना जाता है, कुछ को "लड़कों" के खेल। लड़कियों और लड़कों के साथ अलग अलग बर्ताव किया जाता है। अपने आप को 'औरत' के रूप में पहचानने वाली रोमा को यौवनारंभ से लड़कों के साथ फुटबॉल खेलने से बेदखल कर दिया गया, तो उसने टेबल टेनिस खेलना शुरू कर दिया। परन्तु उसे यह खेल भी मजबूरी में छोड़ना पड़ा, क्योंकि "मेरे कोच का मानना था कि खेल केवल लड़कों के लिए होते हैं, लड़कियों के लिए नहीं। वे लड़कियों से नफ़रत करते और चाहते थे कि मैं खेल को छोड़कर चली जाऊं। क्योंकि बाकी सब खिलाड़ी लड़के थे, वे हर मौका मिलते ही मुझपर हंसते थे। मै तंग आकर हट गयी और मेरे कोच की मनोकामना पूरी हुई।"

खेल जगत में जो स्पष्ट और अस्पष्ट जेन्डर सीमाएं पायी जाती हैं, वे आम समाज की ही एक झलक हैं। आम तौर पर खेल मैदान में औरतें नज़र नहीं आतीं। कई उत्तरदाताओं को खेलों से मजबूरन अलग होना पड़ा क्योंकि "महिला खेलों" को बढ़ावा नहीं दिया जाता। प्रतियोगी खेलों में वैसे भी कमाई बहुत कम होती है, जिससे जस्जेनिव की परिस्थिति और भी कठिन हो जाती है। अतः कई लोगों को स्कूल या कॉलेज के बाद खेलों से अलग होना पड़ा।

इंटरव्यू के समय दो उत्तरदाता खेल–संबंधी व्यवसाय में थे और एक अपनी मौजूदा नौकरी छोड़ कर खेल–संबंधी काम करना चाहती थी। ये लोग अपने खेल के शौक को अपने व्यवसाय से जोड़ने के रास्ते बना रहे थे। परन्तु बहुतों को अपने मनपसंद खेल छोड़ने का आज भी दुःख था।

निजी रिश्ते, चोरी–छिपे

प्यार दीवाना होता है!

उत्तरदाताओं ने विस्तार से अपने यौन रिश्तों के बारे में हमें बताया। ये रिश्ते उनके जीवन में अहम थे, और अपने जेन्डर और व्यक्तित्व को समझने और स्वीकारने का ज़रिया भी थे। परन्तु किसी सहयोगी समूह या सुरक्षित जगह तक पहुंचने के पहले, अधिकांश लोग अपने प्यार के रिश्ते के बारे में केवल अपने पार्टनर से खुलकर बात कर पाए थे (और ज़रूरी नहीं कि पार्टनर भी अपनी जिंसीयत या जेन्डर को उसी तरह देखते हों)। कभी–कभार वे किसी मित्र या साथ में काम करने वाले व्यक्ति से भी बात कर पाए थे।

हालांकि आम प्रेम कहानियों जैसे, इन प्रेम कहानियों में भी वही जुनून, आनन्द, जलन, दुख, उतार, चढ़ाव के किस्से रहे, इन कम–चर्चित कहानियों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी थे। दो औरतों के बीच प्रेम का रिश्ता, या एक औरत का एफ टी एम के साथ, या फिर एफ टी एम का जेन्डर क्वीयर व्यक्ति के साथ – ये सिर्फ कुछ संभावित रिश्तों के उदाहरण हैं, जहां प्रेम कहानी भले ही आम तरीके से शुरू होती हुई लगे, वह प्रेम रिश्तों के कई नियम तोड़ती भी चली जाती है।

हैरानी की बात है कि समाज में इतनी व्यापक होमोफ़ोबिया और ट्रांसफ़ोबिया के बावजूद क्वीयर लोग अपने जैसे लोगों को ढूंढ पाते हैं और प्रेम के रिश्ते बना पाते हैं। हमारे उत्तरदाता स्कूल, कार्यस्थान या आस–पड़ोस जैसे आम स्थानों में पार्टनर ढूंढ पाए और कुछ के साथ लम्बे रिश्ते भी बना पाए। परन्तु कई लोगों के लिए इन रिश्तों में जीना आसान नहीं था। पकड़े जाने के डर से छिपते–छिपाते, शादी करने की ज़बरदस्ती से अपने को बचाते, ये रिश्ते तनाव–भरे थे और इनमें कैसे जीना है इसकी कोई मिसाल मिले तो कहां? रिश्तों के जो भी नमूने सामने दिखते, सभी नियामक जिंसीयत के ही होते।

परिवार या समाज से किसी भी प्रकार की मान्यता न पाते हुए, हमारे 10 उत्तरदाताओं ने अपने रिश्ते को किसी न किसी रस्म द्वारा आपसी मान्यता देने की कोशिश की। कुछ लोगों के लिए यह एक आनंदपूर्ण प्रेम का पल था, दूसरों के लिए एक बिखरते रिश्ते को किसी तरह समेटने का प्रयास, किसी और के लिए सिसआदमी से ज़बरदस्ती शादी किए जाने से बचने का प्रयत्नः हर हाल में इस रस्म का मतलब एक ही था – यह एक तावीज़ के रूप में थी, जो हर मुसीबत को टाल देती, रिश्तों को किसी तरह सुरक्षित रखती, प्रेमियों को बिछड़ जाने से बचाती, और परिस्थितियों को किसी तरह अनुकूल बनाती। जैसे कि एक उत्तरदाता ने बताया, "तीन

महीनों में मैंने उसी औरत के साथ चार–पांच बार शादी की रस्म दोहराई – हम मंदिर जाते, और मैं उसको ताली (मंगलसूत्र) पहना देता। घरवालों को इस रिश्ते के बारे में पता नहीं था। वह सोचते कि हम अच्छे मित्र हैं, इसलिए मंदिर एक साथ जाते हैं। हम मंदिर जाते, ताली उतारते और उसे फिर से बांध देते। (हंसते हुए) प्यार दीवाना होता है!"

जिन 10 लोगों ने अपने प्रेमियों के साथ छिपकर शादी की थी, उनमें से 6 के रिश्ते टूट चुके थे। कुछ लोग सहयोग समूह में आने के बाद अलग हुए, और ऊपरी तौर पर लगता है कि इसकी वही आम वजहें रहीं, जैसे मन–मुटाव या आपसी मतभेद को लेकर, या अपने पार्टनर की बेवफ़ाई को लेकर। जय कहता है:

> *यहां आने के करीब एक सप्ताह बाद, मुझे पता चला कि मेरी प्रेमिका ने किसी और के साथ भी रिश्ता बना लिया है। मेरे पूछने पर कहने लगी कि यह उसकी इच्छा है, और वह जो चाहे कर सकती है। आखिर, उसने लिख कर तो नहीं दिया था कि वह मेरे साथ ज़िंदगी भर रहेगी। . . . उसने यह भी स्पष्ट किया कि वह हमेशा से कई रिश्तों में रही है . . . और वह मुझसे वास्तव में प्यार नहीं करती, और हमारा रिश्ता उसके लिए अपने परिवार से निकलने का बस एक बहाना था।*

शादी की व्यवस्था और एक ही करीबी रिश्ते के मान्य होनेवाली भावना, इन दोनों को लेकर कुछ समूहों में जो क्वीयर और नारीवादी आलोचना मौजूद है, वह कुछ लोगों को जहां स्वतंत्रता का अहसास दिलाती है, वहीं दूसरी ओर कई लोगों के लिए यह सोच निजी तौर पर या उनके रिश्तों के अंदर समस्याएं भी पैदा कर सकती है, विशेषकर उन लोगों के लिए, जो अपने इससे पहले जैसे लोगों से मिले तक नहीं हों। इस पर चिंतन करना ज़रूरी है।

कुछ लोग अटल थे कि उन्हें एक ही व्यक्ति के साथ रिश्ता बनाना है; कुछ आपसी सहमति के आधार पर निर्णय लेना चाहते थे, और यह समय–समय पर बदल भी सकता था; और कुछ मझधार में थे। कुछ लोगों के लिए यह एक राजनैतिक निर्णय था, दूसरों के लिए एक भावुक और अपने अनुभव पर आधारित फैसला। इस मामले में गौर करने के बाद उज्जवला का कहना है, " . . . मेरे विचार बदल रहे हैं और मुझे कहने में संकोच नहीं है कि मैं असमंजस में हूं। अगर कोई मोनोगॅमी याने एक समय पर एक ही रिश्ता पसंद करता है, मुझे उससे कोई परेशानी नहीं। मैं नहीं मानती कि क्वीयर होने के लिए कि एक बार में एक से अधिक लोगों के साथ रिश्ता बनाना ज़रूरी है।"

मंजुला, जो औरों की तरह ही अपने साथी की पसंद के अनुसार चलते हैं, खुद को परेशानी में पाते हैं:

> *शुरुआत में हमारे पार्टनर मोनोगॅमी के पक्ष में थे और हम कई रिश्तों में थे। हमने उनके लिए अपने में काफी बदलाव लाए, क्योंकि वे सिर्फ़ हमारे साथ रिश्ता रखना चाहते थे। अचानक एक दिन हमें पता चला कि वे अन्य रिश्तों में भी हैं, पर हम तो बदल चुके थे और अब हम दोबारा अपने आप को नहीं बदल सकते। . . . पिछले डेढ़ साल से यह बात हमें खाए जा रही है। . . . ऐसा लगता है कि हमें किसी के साथ जुड़ाव का अहसास नहीं है – न घर के, न काम के, और न ही अपने दोस्तों के – हमारे दोस्त भी हमेशा बदलते रहे हैं।*

लेकिन कई उत्तरदाता एक रिश्ते के अतिरिक्त दूसरे रिश्तों में भी रह चुके थे या रहने के इच्छुक थे। कम से कम पांच लोगों ने कहा कि वे एक विशेष जोड़ी के रूप में नहीं जीना चाहते थे। उन्हें अन्य रिश्तों में एक साथ जीना ही पसंद था। नेहा को भी एक साथ "बहुत सारे" रिश्ते चाहिए थे; जब उससे पूछा क्या यौन संबंध के लिए प्यार और निकटता ज़रूरी हैं, उसने कहा "बिलकुल भी नहीं।" अल्पना कहती है, "मैं अपने आप को

कई लोगों को चाहने वाली (पॉलिऍमोरस) मानती हूं। मैं जीवन–भर साथ निभाने के वायदों में विश्वास नहीं करती।"

रिश्ते जैसे भी हों, एक जोड़ी के रूप में, अनेक लोगों के साथ, छोटे अरसे के या लम्बे, एक सवाल यह है किः जब जोड़ी के दोनों व्यक्तियों को जन्म से स्त्री जेन्डर दिया गया हो, तब वे मर्दानगी और नारीत्व की समझ को अपने रिश्ते में कैसे लागू करते हैं?

हमारे उत्तरदाताओं के कथन से स्पष्ट होता है कि प्रचलित नारीवादी सोच के अनुसार "आदमी" की तुलना में "औरत" की सत्ता कम है – परन्तु यह सोच पूरी तरह लागू नहीं होती जब सिसआदमी और सिसऔरत के सरल रिश्ते से हटकर, इसे जटिल जेन्डर रिश्तों के संदर्भ में देखा जाए। प्रचलित सोच के अनुसार, औरत और आदमी के बीच सत्ता कैसे लागू होती है इसका विश्लेषण उन लोगों के लिए पूरी तरह उपयुक्त नहीं, जो जेन्डर नियमों को ही बदल देते हैं। इनकी जेन्डर पहचान को और इनकी मर्दानगी और नारीत्व को समझने के लिए एक अलग बारीकी की आवश्यकता है।

> हमारे अध्ययन से बार–बार स्पष्ट होता है कि जो जस्जेनिव खुद को 'औरत' मानते हैं, उन्हें अपने जेन्डर से थोड़ी कम परेशानी होती है। इसकी तुलना में, खुद को 'आदमी' मानने वाले जस्जेनिव अपने आप को रिश्तों में ज़्यादा ताक़तवर नहीं बल्कि असुरक्षित पाते हैं। वे अक्सर इस डर में रहते हैं, कि उन्हें किसी सिसआदमी के लिए छोड़ दिया जाएगा।

जब सनी 14 वर्ष के थे, तब उन्हें अपनी कक्षा की एक लड़की से इश्क हो गया। वे इस रिश्ते का बारीक विश्लेषण करते हुए कहते हैं, "अंत बुरा हुआ, रिश्ता टूट गया, उसकी शादी हो गयी। उसका बाप एकदम भद्दा था – वह उस पर सख़्त निगरानी रखता था, यहां तक कि खुद उसे स्कूल में छोड़ता और वापस ले जाता। टी वी देखना, बाहर जाना, सब मना था। तब हमें अहसास हुआ कि वह लड़की मेरे साथ इसलिए है, क्योंकि वह लड़कों से मिल ही नहीं पाती। उसके जीवन में लड़के की कमी हमसे पूरी हो रही थी।" इसी तरह बारह साल के लंबे रिश्ते को छोड़कर, सुमित के पार्टनर ने सिसआदमी से शादी कर ली। इस घटना ने सुमित को कॉलेज के दिनों की याद दिला दी। "तब भी कई लड़कियां हमारे करीब आतीं। हम सोचते वे हम से आकर्षित हैं, पर नहीं, हमारी सोच गलत थी। वे हमारे करीब आती थीं, क्योंकि वे मर्दों से रिश्ता नहीं बना पाती थीं। . . . ये लड़कियां हमारे साथ केवल यौन संबंध का अनुभव चाहती थीं, पर हमें हर बार उनसे प्यार हो जाता।"

> प्यार के निजी रिश्ते ऐसे हैं, जहां खुद के जेन्डर और जिंसीयत सबसे सम्पूर्ण रूप से एक–दूसरे से जुड़ जाते हैं। अगर पार्टनर इस अभिव्यक्ति को स्वीकारते हैं और इसके लिए जगह बनाते हैं, तो यह रिश्ता अति सकारात्मक सिद्ध होता है, परन्तु अगर पार्टनर इसे नकारते हुए, इसके आड़े आते हैं, तो बेहद गहरी चोट लगती है। जब किसी जेन्डर के नियमों का उल्लंघन करने वाले जस्जेनिव के पार्टनर उनके जेन्डर पर सवाल उठाते हैं, उनका अनादर करते हैं या उसे मान्यता नहीं देते, तो उस व्यक्ति को और भी गहरी ठेस पहुंचती है।

छः साल से चल रहे रिश्ते में संतोष को इस प्रकार की हिंसा लगातार सहनी पड़ती है। "मेरे सभी मित्र एफ टी एम हैं, पर उनके सामने, या अकेले में भी, जब मेरी पार्टनर मुझे लड़की के रूप में संबोधित करती है, तो मुझे बहुत परेशानी होती है, तनाव महसूस होता है। मैं सोचता हूं, कि अगर मैं आदमी होता तो वह मुझसे इस तरह बात नहीं करती। क्योंकि जन्म से मेरा शरीर ऐसा है, इसलिए वह मुझसे ऐसे बात करती है।"

जेन्डर के अलावा, सत्ता और शक्तिहीनता के और भी पहलू हैं, जो कि आपसी रिश्तों को प्रभावित करते हैं, जैसे कि उम्र, स्थान, जाति, वर्ग, क्षमता, मानसिक स्वास्थ्य–संबंधी मुद्दे, परिवार द्वारा समर्थन या हिंसा, इत्यादि। परिवार से स्वीकृति पाने के लिए आवश्यक है, कि प्रेमियों के बीच सामाजिक अंतर नाज़ुक तरीके से संभाले जाएं। मंजुला और उनके पार्टनर को, उनके बीच वर्ग और उम्र के अंतर को भी संभालना पड़ा। कहते हैं, "हमें उनके जेन्डर को लेकर परेशानी नहीं हुई, लेकिन उनका हमारे मुकाबले गरीब और कम पढ़ा–लिखा होना मुद्दा बन गया। मां ने एक बार कहा, 'तुम ग्रेजुएट हो और उसने तो स्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं की, ऐसा कैसे चलेगा'?"

अपने पार्टनर की जाति को किनारे रखते हुए, उसके शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करके मोनू अपने परिवार की अस्वीकृति को बदल पाए। कहते हैंः

हमारी मां कहा करती थी 'वह नीची जाति के लोग हैं, तुम उनके घर क्यों जाते हो, वहां का माहौल अच्छा नहीं है।' हमारे भाई–बहन कहते 'वह छोटे लोगों की बस्ती है, अच्छी नहीं है।' हम अपने पार्टनर को यह सब नहीं बताते थे, उसे ठेस पहुंचती। हम घर पर बहस करते, 'व्यक्ति छोटा–बड़ा शिक्षा से होता है, जाति से नहीं। . . . जाति का इसमें क्या लेना–देना? हमारा रिश्ता एक व्यक्ति से है। हमारे पार्टनर के विचार इतने खुले और आधुनिक हैं, वह उच्च जाति के लोगों से भी बेहतर है।'

हालांकि कई उत्तरदाताओं ने रिश्तों में उम्र के अंतर के बारे में कुछ नहीं कहा, लेकिन कुछ रिश्ते ऐसे थे जिनमें उम्र का काफ़ी फ़र्क था। जैसे कि झरना कहती है, एक नियम तोड़ने के बाद और भी नियमों को तोड़ना आसान हो जाता है। झरना का अपनी टीचर के साथ 20 साल पुराना रिश्ता है, जिनकी उम्र झरना से 30 साल ज़्यादा है। 44 वर्ष की झरना को अब अपने पार्टनर के स्वास्थ्य की चिंता है, साथ ही अपने भविष्य को लेकर भी घबराती हैं।

कुछ लोगों ने रिश्तों में अन्य प्रकार की हिंसा के बारे में भी बात करी। जेन्डर अभिव्यक्ति और अपेक्षा को लेकर मतभेद, या फिर जलन और ज़रूरत से ज़्यादा शासन–निगरानी इस हिंसा के कुछ कारण रहे। फाल्गुनी अपने पहले रिश्ते के बारे में बताती है, "वह मुझपर बहुत अधिकार जताती थी, मेरी गलती है कि मैंने इस व्यवहार को बढ़ावा दिया। . . . पिछले साल तो मामला हिंसा पर उतर आया, उसने मुझे थप्पड़ मारा पर मैंने पलट कर कुछ नहीं किया, उसे वापस ले लिया। और इसके बाद स्थिति बिगड़ती चली गयी। . . . वह मुझे मारती और मैं उसे भला–बुरा सुना देती। उसका मुझपर अधिकार जताना बढ़ता ही गया।"

शारीरिक, शाब्दिक या भावुक हिंसा सहने के अलावा कई लोगों ने निराश होकर खुद पर हिंसा करने के बारे में भी बताया। जब प्रेम के साथी ने उन्हें छोड़ने का निर्णय लिया, तो उन्होंने अपनी नसें चीर दीं। ऐसी ही एक घटना ने कवी के रिश्ते को सबके सामने खोल दिया। तब 20–वर्षीय कवी और उसकी गर्लफ्रेन्ड के बीच लड़ाई चल रही थी। एक शाम कवी ने उसे बाहर कहीं देखा पर मुंह मोड़ लियाः

अगले दिन उसकी मां ने आकर मुझे बताया कि उसने नींद की गोलियां खा लीं। . . . उसने अपनी जांघ पर ब्लेड से मेरा नाम लिख दिया था। . . . चार–पांच डॉक्टरों ने मुझे कुर्सी पर बिठा कर मुझसे पूछ–ताछ की। मैं बहुत डर गयी। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैंने उसके साथ रात बिताई थी। . . . पर्ची में उन्होंने लिखा 'हमजिंसी प्यार' और मेरी काउंसिलिंग की। हमारे परिवारों को इस बारे में सूचित किया गया। डॉक्टरों ने कहा कि यही (उसके) आत्महत्या के प्रयास का कारण था।

अक्सर रिश्तों में समस्याओं के कारण ढूंढे जाएं, तो पता चलता है कि ये समस्याएं इस कारण होती हैं, कि इन्हें समाज में समर्थन नहीं मिलता। अपनी चाहत, अपने व्यवहार को असामान्य या अनुचित माने जाने का अहसास; अपने जीवन को मन पसंद तरीके से जीने के कारण परिवार को दुख पहुंचाने की ग्लानि, यह सब मिलकर तनाव पैदा करते हैं।

हमारे कुछ ही उत्तरदाता ऐसे थे जो लंबे अरसे से पार्टनर के साथ रह रहे थे, या पहले रह चुके थे। इस कारण कम ही लोग एक साथ रहने के अनुभव पर विचार कर पाए (भले ही साथ का समय एक ही छत के नीचे रहकर बीता हो या अलग घरों में)। विमला और उसके पार्टनर 7वीं कक्षा से रिश्ते में थे। उनके घरेलू निर्णय लेने की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए विमला कहती हैः

हम एक–एक महीने के लिए ज़िम्मेदारी संभालते हैं। एक महीने मैं निर्णय लेती हूं, अगले महीना वे लेते हैं (हंसते हुए) . . . पर निर्णय लेने से पहले हम एक साथ बैठकर विचार–विमर्ष करते हैं। इस चर्चा में मेरा पूरा परिवार भाग लेता है, यहां तक कि मेरे सबसे छोटे बहन और भाई भी। हमारे यहां हर मुद्दे पर चर्चा होती है, हमारे प्रेम रिश्तों पर भी। हम एक मीटिंग रखते हैं जिसमें सब अपनी बातें बांटते हैं और चर्चा करते हैं।

ऐसे माहौल बनाने होंगे जहां आपसी रिश्तों के बारे में खुल कर बात हो सके

कुछ और लोगों ने बताया किस तरह एक ही रिश्ते में रहते हुए, या अन्य रिश्तों के अनुभव से, उनकी खुद के बारे में समझ विकसित हुई – अपनी पहचान, अपनी पसंद/नापसंद, अपना व्यक्तित्व और पार्टनर के साथ पेश आने का ढ़ंग, वगैरह। इन रिश्तों से उन्हें महत्वपूर्ण ज्ञान भी मिलाः एक–दूसरे से चिपके रहने के बदले व्यक्तिगत मित्रों से मेल–मिलाप रखना; अपने पार्टनर को बताना कि आप प्यार से भी औरत के रूप में संबोधित नहीं होना चाहते; आपसी मुद्दों पर खुली चर्चा करना; अपनी भावनाओं को समझने के साथ–साथ अपने पार्टनर की चिंताओं को भी समझना; अपने पार्टनर के जेन्डर को मान्यता देने के नए तरीके ढूंढना और उसे अपनी ज़रूरतों से परिचित करना; और दोनों यदि चाहें तो, अपने जेन्डर रोल को अदला–बदली करके या उनके साथ खेलते हुए मज़ा लेना। ऐसे कुछ तरीकों को अपनाकर हमारे उत्तरदाता आपसी खुशी और आनंद प्राप्त कर पाए।

घर से भागे हुए कई लोग सहयोग समूहों के अन्य सदस्यों के साथ रहने लगे और एक–दूसरे के दोस्त भी हो गए। बिना नौकरी के लोगों को अक्सर मित्रों से आर्थिक सहायता मिली। इन अनुभवों ने कइयों को परिवार की परिभाषा ही बदलने को मजबूर या फिर प्रेरित कर दिया। अब उनके लिए ″परिवार″ का अर्थ केवल पैदाइशी परिवार या शादी के बाद के परिवार से नहीं जुड़ा था। लगभग सभी अपनी ज़िंदगी के सफ़र में नए प्रकार के परिवार बना पाए थे।

अगर परिवार की परिभाषा बदल जाती है, तो अपनापन भी अलग रूप से परिभाषित होता है। इस संदर्भ में कुछ उत्तरदाताओं के कथन मायने रखते हैं, जैसे कि मंजुला के कल्पित पार्टनर, उज्जवला का दावा कि ″रिश्ते मन में होते हैं″ और खुद को 'औरत' की पहचान देने वाली अल्पना जिसे ″बहुपरिवार″ की चाहत है। और अपने पार्टनर के साथ रिश्ते के संदर्भ में रंजना कहती है, ″हम दोनों एक परिवार हैं। . . . इस परिवार का

ढांचा लोकतांत्रिक है, यह एक मिला–जुला प्रयास है, हम एक दूसरे का सहारा हैं . . . हम अन्य छोटे–छोटे परिवारों का भी समर्थन कर रहे हैं। हम एक साथ निर्णय लेते हैं।" कुछ लोगों के परिकल्पित परिवार में एक खुद जन्मा या गोद लिया बच्चा भी शामिल था। गीता अपने घर का बयान यूं करती है, "वह एक बिल्कुल खुली जगह थी। . . . क्वीयर लोगों के लिए एक अनुकूल स्थान। एक ऐसी जगह, जैसे परिवार की कल्पना में होती है, जहां आप सुरक्षित हैं और हक़ से रह सकते हैं। एक बार तो मेरे घर में इतने लोग जमा हो गए थे कि मुझे खुद किसी मित्र के घर जाकर सोना पड़ा।"

हमारे उत्तरदाताओं की कहानियों से एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलता हैः हम काफ़ी भरोसे से कह सकते हैं कि जो जस्जेनिव अपने आप को "आदमी" के रूप में देखते हैं, और अपने व्यक्तित्व और भूमिकाओं की अभिव्यक्ति उसी प्रकार करते हैं, वे निजी रिश्तों में ख़ुद–ब–ख़ुद "आदमियों" जैसी सत्ता प्राप्त नहीं करते। हमें अपने काम में इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा और साथ ही हमें ऐसे माहौल बनाने होंगे, जहां जस्जेनिव अपने आपसी रिश्तों के बारे में खुलकर बात कर सकें, अपनी खुशियों और दुविधाओं को एक समुदाय के संग बांट सकें, ना कि दो लोगों के बीच की तंग, नाज़ुक परिस्थिति में ही ज़िंदगी–भर घुटते रहें।

अपने शरीर से रिश्ता

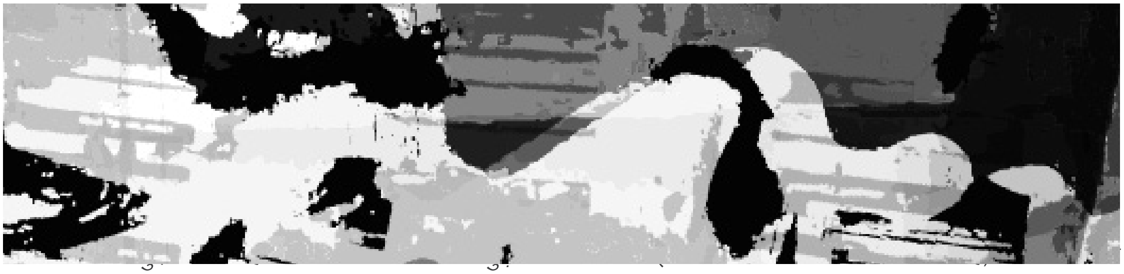

के साथ भी, क्योंकि इससे उनके जेन्डर को लेकर सवाल उठ सकता है।

हमने अपने उत्तरदाताओं से उनके शरीर के साथ रिश्ते के बारे में विस्तार से बात करी। वे अपने शरीर को किस नज़र से देखते हैं, दूसरों की नज़र से वे क्या अपेक्षा करते हैं, वे अपने शरीर में क्या बदलना चाहते हैं और क्यों, यौन संबंध में उनके क्या अनुभव रहे, इत्यादि। नियामक जेन्डर बाइनरी के अंतर्गत औरत और आदमी के शरीर की संरचना का भी रूप तय किया जाता है और उसी शरीर के अनुसार उस व्यक्ति का जेन्डर निर्धारित किया जाता है, इसलिए हम जानना चाहते थे कि खुद के जेन्डर को जानने और जीने की प्रक्रिया में शरीर की क्या भूमिका रही।

इस भाग में हम उन लोगों के अनुभवों पर ध्यान देंगे जो या तो अपने निर्धारित जेन्डर या शरीर से कुछ हद तक नाखुश थे, या अपने शरीर या निर्धारित जेन्डर या दोनों में ही किसी भी तरह खुद को ढाल नहीं पाए थे। इसका यह मतलब नहीं कि बाकी लोगों की बातें मायने नहीं रखतीं। लेकिन इस भाग में हम उन पर ध्यान देंगे, जो कि 'आदमी' या 'अन्य' की श्रेणी में आते हैं। उज्जवला के सटीक शब्दों में:

> *यदि आप और लोगों से अलग दिखते हैं, तो जीना बहुत मुश्किल हो जाता है। जब आपको पता होता है कि आप 'जेन्डर के तौर पर' पास नहीं हो पाएंगे। जब आप जानते हैं कि आप पूरी तरह से औरत नहीं माने जाएंगे क्योंकि आप में औरतों जैसी लचक नहीं है, या फिर पूरी तरह से आदमी भी नहीं समझे जाएंगे क्योंकि आपके शरीर पर ज़्यादा बाल नहीं हैं। तो यह बहुत मुश्किल जगह है, जब आप दोनों तरफ खाइयों के बीच खड़े हों और हर चीज़ के बारे में जवाब देने पड़ते हैं।*

जब लोगों को किसी व्यक्ति का जेन्डर उसके कपड़ों से या बालों की लम्बाई से समझ नहीं आता, या उसके द्वारा जेन्डर नियमों का उल्लंघन उन्हें बेचैन कर देता है, तो छाती ही एक ऐसा निशान बचता है, जिसे

देखकर वे उस व्यक्ति के जेन्डर का अनुमान लगाते हैं। यहां तक कि, व्यक्ति के उल्लंघन को पहचान लेने के बाद भी, उसे शर्मिंदा करने के लिए लोग उसके शरीर के किसी एक अंग पर नज़र टिकाते हैं। जैसा कि अपने आप को 'औरत' जेन्डर मानने वाली तुली, जिसके छोटे बाल हैं और जो आम तौर पर पॅन्ट–शर्ट पहनती है, बताती है, "जब मैं कहती हूं कि मैं लड़की हूं, तो लोग मेरी छाती की तरफ़ देखते हैं, मेरे चेहरे की तरफ़ नहीं। बड़ा अजीब लगता है। एक बार किसी ने मुझे जैकिट उतारने को कहा और मैंने पूछा 'क्यों? मेरी छाती देखना चाहते हो? क्या मैं तुम्हारी छाती छूकर देख सकती हूं कि वह असली है कि नकली? मुझे भी नहीं पता चल रहा कि तुम औरत हो या नहीं।"

शरीर को "सही" रूप देने का प्रयास छिपाना

ऐसी बहस से बचने के लिए और अपनी चुनी जेन्डर पहचान के अनुसार जीने के लिए, अक्सर लोग छाती को कपड़े से बांध कर खुली जैकिट या शर्ट ऊपर पहन लेते हैं। मुरली, जो अपने आप को एफ टी एम मानते हैं, इस प्रक्रिया का बारीकी से वर्णन करते हैं। "छाती को छिपाने के लिए हम पहले मर्दों की खिंचाव वाली बनियान पहनते हैं जिस से स्तन दब जाते हैं, फिर इसके ऊपर सूती शमीज़ जो खिंचती नहीं और बिल्कुल सही नाप की सिली होती है, उसके ऊपर एक टी–शर्ट और फिर उसके ऊपर एक शर्ट।" वासु, जो अपने आप को 'आदमी' की पहचान देता है, कहता है, "पहले, जब मैं घर पर रहता था, तब इसे कस के बांधता था। या फिर बच्चों के नाप की बनियान पहन लेता, जो इतनी तंग होती कि उसे पहनते समय मेरी बाहें कट जाती, चमड़ी लाल हो जाती। कभी कभी बांह काली भी पड़ जाती। मैं सब कुछ कर के देख चुका हूं पर कुछ फ़ायदा नहीं।"

अपनी छाती को छिपाने के प्रयास में अक्सर लोग अत्यंत पीड़ा और दुःख सह लेते हैं, क्योंकि अपने शरीर की कल्पित छवि बरकरार रखने और अपने शरीर के साथ उनके अपने रिश्ते के लिए यह बेहद ज़रूरी है। उनके लिए शारीरिक दर्द से कहीं ज़्यादा वह दर्द है, जो उन्हें अपने बिना परत के, बिना बंधे और अनजान शरीर को देखने से होता। आनंद, जो कई वर्षों से अपने स्तनों को बांध रहा है, कहता है कि वह घर के बाहर खाना नहीं खा पाता, क्योंकि उसका दम घुटता है। "जैसे ही मैं घर पहुंचता हूं, सबसे पहले छाती के बांध उतारता हूं, इसलिए मेरे घर में कोई आईना नहीं है।" और जय कहता है, "अंदर से मैं आदमी हूं, पर देखने में मेरा शरीर आदमी जैसा नहीं है। इसलिए नहाते समय या किसी और समय भी अगर मेरी नज़र अपने स्तनों पर पड़ जाए, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। नहीं, मैं अपने आप को बिना कपड़ों के शीशे में कभी नहीं देखता।"

कोई व्यक्ति अपने शरीर की छवि को "सही" रूप देने के प्रयास में किस हद तक जा सकता है, इसकी सीमा हर व्यक्ति के लिए अलग है, और कभी कभी एक ही व्यक्ति के लिए बीतते समय के साथ बदलती है। कुछ लोग, जैसे सुमित, का कहना है कि वे लकी हैं कि उनके स्तन छोटे हैं, तो इतने नज़र नहीं आते, अतः उन्हें सर्जरी करवाने की ज़रुरत महसूस नहीं होती। कुछ और लोगों, जैसे राहुल, को लगता है कि टॉप सर्जरी (छाती से स्तन हटाने और उसे सपाट बनाने की सर्जरी) करवाए बिना वे आत्मविश्वास से जीवन व्यतीत नहीं कर पायेंगे। अक्सर जो चिंता लोगों को शरीर बदलने के लिए प्रेरित करती है, वह है कि उनके यौन पार्टनर उनके शरीर को किस नज़र से देखेंगे ? जैसा कि वासु, जो वह सब चाहता है "जो आदमी के शरीर में होता है" का कहना है, "इस सब की इसलिए ज़रूरत है, जिससे कि पार्टनर को मुझे औरत समझने या धिक्कारने का मौका न मिले। कि मैं गर्व से दिखा सकूं कि मैं आदमी हूं। क्योंकि अगर किसी छोटी सी भी लड़ाई के बाद मेरी पार्टनर ने कह दिया 'आखिरकार, हो तो तुम एक औरत ही!' तो मैं मर जाऊंगा, जी नहीं पाऊंगा।"

माहवारी भी "स्त्री के शरीर" का एक विशेष चिह्न है, लेकिन इसके संदर्भ में हमें ज़्यादा विविधतापूर्ण जवाब नहीं मिले। अधिकांश लोगों को माहवारी अच्छी तो नहीं लगती, लेकिन स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने की संभावना होने के कारण, वे उसे बंद करवाने की भी कोशिश नहीं करना चाहते। इस सब्र के पीछे कई कारण रहे। खुद को 'आदमी' मानने वाला सॅम, जो अपने स्तनों को सर्जरी द्वारा निकलवाना चाहता है, कहता है, "माहवारी तो अंदर का मामला है, किसी को पता नहीं चलता।" ॲलेक्स की उम्र 40 साल से कुछ कम है। वे कहते हैं, "हमने माहवारी रोकने या अपने गर्भाशय को निकलवाने की कभी कोशिश नहीं की। जब तक हमें इन सब बातों के बारे पता चला, बहुत देर हो चुकी थी। अब इसके चार–पांच साल ही बाकी हैं, ये भी निकल जायेंगे। हम अपने शरीर के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहते। हम अपने स्वास्थ्य को लेकर बहुत सचेत हैं।" कुछ उत्तरदाता ऐसे भी थे जो हॉरमोन्स लेना चाहते थे और आगे चलकर गर्भाशय निकलवाने की सर्जरी करवाना चाहते थे।

> कुछ लोग सर्जरी द्वारा शरीर को बदलने की कल्पना तो करते हैं, लेकिन इसपर होने वाला खर्च, समय और बाकी शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ने की आशंका, ये सब चिंता के विषय हैं। जो लोग अपने ऊपर ही पूर्णतया निर्भर हैं, जिन्हें कहीं और से आर्थिक सहारा नहीं है, उनके लिए सर्जरी करवाना और भी मुश्किल हो जाता है। एक और आशंका यह भी रहती है, कि बदलाव शुरु होने के बाद शायद वे उस जगह पर न रह पाएं, जहां वे अब तक रहते आए हैं। कुछ लोग एक अलग भय के बारे में बताते हैं, जैसे आनंद का कहना है, "मान लीजिए मैं किसी लड़की को चाहता हूं और वह भी मुझे चाहती है – वह तो मुझे एक आदमी समझकर मेरी ओर आकर्षित है, तो मैं उससे क्या कहूं? यह कि मैं एक लड़की हूं? कम से कम अब थोड़ा आसान है, और सामने वाले के लिए भी विश्वास करना आसान हो जाता है।"

भार्गवी बारीकी से अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं। "हमें लगता है कि हमारे शरीर में स्तन नहीं होने चाहिए, पर हमें योनि चाहिए। हम अपने आधे शरीर से खुश हैं, पर हमारा बाकी आधा शरीर समाज के लिए दिक्कत पैदा करता है। स्तन तो दिखाई देते हैं इसलिए लोग हमें औरत समझते हैं। हमें अपनी योनि से कोई दिक्कत नहीं, पर समाज को इससे दिक्कत है। अगर हमारे पास पुरुषों की तरह लिंग होता, तो हमें परेशानी होती पर समाज को नहीं।" खुद को 'अन्य' श्रेणी की पहचान देने वाले सॅन्डी ज़ोर देकर कहते हैं, "हमें अपनी योनि में बदलाव की कोई इच्छा नहीं है। यह हमारे लिए इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि इससे हमें जिंसी आनंद मिलता है। हमें अपने लिए पुरुष लिंग की इच्छा कभी नहीं थी।"

और कुछ लोग थे, जो अन्य प्रकार के शारीरिक आनंद की भी बात कर रहे थे। माला का कहना है, "शुरू से ही हमें अपने स्तन बहुत पसंद थे। यदि कोई मांगे भी, तो हम इन्हें अपने से अलग नहीं करेंगे!" सौम्या की मांग कुछ उलझी हुई है। "यौन संबंध बनाते समय मुझे अपने स्तनों की वजह से खास ध्यान मिलता है, इसलिए मैं उन्हें निकलवाना नहीं चाहती, लेकिन मैं कभी–कभी कल्पना करती हूं, कि अगर मैं इन्हें जब चाहे निकाल या लगा सकती तो क्या मज़ा आता! पर क्या जिंसी संबंध के दौरान चपटी छाती की चाहत होती है? नहीं। या क्या मुझे चपटी छाती वाले पार्टनर पसंद हैं? नहीं।"

उत्तरदाताओं की कहानियों में यौन आनंद की ऐसी अभिव्यक्ति हमें बहुत सकारात्मक लगी। कई लोग अपने शरीर द्वारा आनंद और मज़ा लेने के नए तरीके खोज पाए। वे लिंग–योनि वाले नियामक जिंसी संबंध से हटकर, अपने लिए आनंद के नए तरीके ढूंढ़ते रहे। कभी–कभी सेक्स की यह सीमित परिभाषा आड़े भी आई, लेकिन अक्सर अपने पार्टनर के साथ नियामक ढंग से जिंसी संबंध न बना पाने के कारण, हमारे अधिकांश उत्तरदाताओं ने सेक्स के दौरान अपनी अपेक्षित भूमिकाओं को, खास तौर पर नए मायने दिए।

कइयों ने कहा कि उन्हें पार्टनर को जिंसी आनंद देने से स्वयं आनंद मिलता है। आनंद और सारा अपने आप को इसी नज़र से देखते हैं। कवी का कहना है, "जहां तक आनंद प्राप्त करने की बात है, मेरी कोशिश रहती है कि हम दोनों को आनंद मिले।" विमला के पार्टनर 'आदमी' पहचान रखने वाले जस्जेनिव हैं। वह बताती है, "मुझे बहुत चिंता और आशंका हुआ करती, कि कपड़े उतारे बिना कोई दूसरे को आनंद देने के साथ–साथ अपने आपको कैसे आनंद दे सकता है। उन्हें कैसे आनंद मिलता होगा? . . . पर वे कहते हैं कि मेरे आनंद से ही उन्हें आनंद मिलता है। अगर उन्हें सुख नहीं मिलता तो वे ऐसा नहीं करते।" खुद के आनंद को त्याग करने की भावना इन कहानियों में नहीं थी; बल्कि कई लोगों ने दोनों को सुख मिलने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। जैसे कि झरना कहती है, "चाहत से भरा हर स्पर्श मेरे लिए महत्वपूर्ण है, और मैं उसे पाने के लिए मेहनत करती हूं। साथ ही मैं ध्यान रखती हूं कि मैं जिसके साथ हूं, उसे भी अधिकतम आनंद मिले। मेरा मानना है कि जिंसी संबंध में कुछ बुरा नहीं होता। मैं उसके लिए तैयारी करती हूं, उसके लिए समय निकालती हूं।"

अल्पना कहती है, "सेक्स करते समय मैं नई नई चीज़ें करती हूं – यह सब पहले से तय नहीं किया जा सकता, बस हो जाता है। हाल में मुझे बंधन जैसी चीज़ों से मज़ा आने लगा है – मैं पिछले कुछ महीनों से यह कर रही हूं और मुझे बहुत मज़ा आ रहा है, लेकिन वहां भी मेरी कोई खास भूमिका की चाहत नहीं है – कि मुझे प्रमुख रहना है, या अधीन।" और कनिका सेक्स और बी डी एस एम के प्रति अपना नज़रिया बताते हुए कहते हैं:

> *मुझे इस सब में मज़ा आता है, लेकिन मैं वहां भी भूमिकाएं बदल–बदल कर सेक्स करती हूं। मुझे किसी पिंजड़े या जेल में सेक्स करने का बहुत मन है। मुझे बंधन में सेक्स करने में बहुत मज़ा आता है। मुझे हथकड़ी और रस्सियों में बंधना अच्छा लगता है, लेकिन यह सुरक्षित और आपसी सहमति से होना चाहिए। मुझे आधीन होना और आधीन करना, दोनों अच्छा लगता है, मुझे वह सभी शारीरिक ॲक्ट अच्छे लगते हैं, जो सुरक्षित हों और दोनों लोगों की सहमति से किए जाएं। मुझे ओरल सेक्स में बहुत मज़ा आता है और नए–नए प्रयोग करने में भी।*

हमने हस्तमैथुन से भी जुड़ी कई सकारात्मक चीज़ें सुनीं। सरन कहती है, "मुझे अहसास हुआ कि ज़्यादातर लोग हस्तमैथुन करते हैं। और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं, कि यह एक स्वस्थ मार्ग है। कभी–कभी आप अपने काम में बहुत ज़्यादा व्यस्त होते हैं, कुछ हो नहीं रहा होता, आप असंतुष्ट होते हैं, या आपके रिश्ते में जो हो रहा होता है वह आपको पसंद नहीं आता। आप अपने पार्टनर से भी अच्छी तरह से बात नहीं कर पाते। जब आप हस्तमैथुन करके लौटते हैं, तो सब तुरंत हल्का बन जाता जाता है।" जूही का ख़याल है कि "दो लोगों के बीच, आप सेक्स करते समय और उसके बाद कैसा महसूस करते हैं, यह कई चीज़ों पर निर्भर करता है। लेकिन जब आप अकेले हैं, तो एक ज़बरदस्त आनंद की अनुभूति के बाद, आप के मन में अपने प्रति क्या विचार आते हैं, या अपने जीवन के बारे में, वे बहुत अलग होते हैं। तो हस्तमैथुन केवल एक सुंदर और आनंदमयी अनुभूति ही नहीं, यह बहुत ज़रूरी भी है।"

आकर्षित करने वाली चीज़ों में विविधता के अलावा, कई उत्तरदाताओं ने बताया कि कैसे उनके लिए सेक्स का अनुभव अलग–अलग लोगों और अलग–अलग स्थितियों के अनुसार बदलता रहा है। जिस खुलेपन से लोगों ने इन सब बातों को अपने जीवन के एक हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया है, वह न केवल नियामक जिंसीयत के कई पहलुओं को चुनौती देता है, बल्कि यह अपने आप में विविधता का सूचक है, और चाहत के क्वीयर नज़रिए का भी। मौशमी, जो अब तक औरतों और ट्रांस* लोगों के साथ कई रिश्तों में रह चुकी है, का कहना है, "औरतों के साथ आप निष्क्रिय या सक्रिय हो सकते हैं, या जो भी आप बनना चाहें। . . . लेकिन

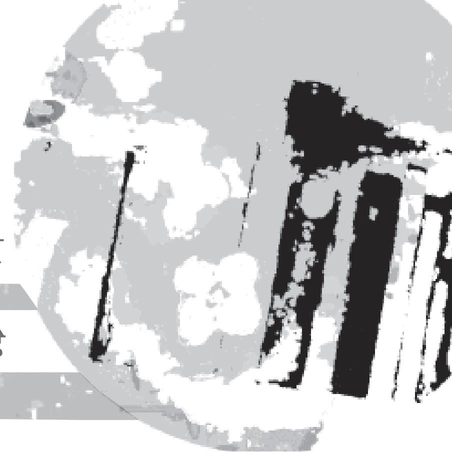

एक क्वीयर शरीर निरंतर बदलता हुआ स्वरूप है

अन्य प्रकार के रिश्तों में, मैं चाहती हूं कि दूसरा व्यक्ति पहल करे। मुझे पहले आनंद लेना अच्छा लगता है।" मेघना कुछ ऐसे पलों के बारे में बताते हैं, जो उन्हें जेन्डरमुक्त महसूस कराते हैं। "अब कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका क्या जेन्डर है, आपकी उम्र क्या है, आपका रंग कैसा है, या शरीर कैसा है। आपका किसी और ही स्तर पर दूसरे व्यक्ति से मिलन होता है। और मैं जेन्डरमुक्ति के इस अहसास की बहुत सराहना करती हूं, कि अब कम से कम मुझे परिभाषाओं में जकड़ा नहीं जा रहा, न ही मुझे किसी को परिभाषित करना है।"

कुछ लोग, जो खुद को बाईसेक्शुअल मानते हैं, उनकी इस बारे में कुछ अलग ही राय थी। सिमरन का कहना है, "(औरतों के साथ), मेरे लिए एक प्रतिबिम्ब की ओर जाना स्वाभाविक है। . . . लेकिन आदमियों के साथ बहुत अलग अहसास होता है। वहां मुझे अपने से एकदम उल्टा चाहिए। मुझे हट्टा–कट्टा आदमी चाहिए। मुझे वाकई में सब कुछ विपरीत चाहिए। तो वह एकदम अलग है।" वहीं गीता को बाईसेक्शुऍलिटी की भाषा ही काफ़ी सीमित लगती है क्योंकि "वह बाइनरी को पुनर्स्थापित करती है। एक बार एक कॉन्फ़रेन्स में मुझे एक एम टी एफ बहुत आकर्षक लगे। यह आकर्षण जेन्डर उल्लंघन के कारण था। तब मुझे समझ में आया कि आकर्षण काफ़ी व्यापक चीज़ होती है, जेन्डर के नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों के प्रति, उल्लंघन चाहे जिस दिशा में हो। बाईसेक्शुऍलिटी बाइनरी पर टिकी है, तो यदि मैं इसके उल्लंघन के प्रति आकर्षित होती हूं, मैं क्या हूं?" और चांदनी एक सिसआदमी के साथ अपने अनुभव के बारे में कुछ इस प्रकार बताते हैं, "कुछ देर बाद वह हमसे कहता, "पता है, मैं लेस्बियन नहीं हूं, मेरे पास कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें प्रयोग किया जा सकता है।' और हम कहते, 'हमें वह नहीं चाहिए, हमें तुम्हारी उंगलियां ही चाहिए।' तब हमें समझ आया कि हमें क्वीयर सेक्स पसंद है। . . . और ज़्यादा रोल–प्लेयिंग पसंद नहीं – वह ठीक है, लेकिन निर्धारित नहीं होना चाहिए। अगर हम एक भूमिका से दूसरी में जाते रहें, तब ठीक है, लेकिन उसमें दृढ़ता न हो।"

ये सब अनुभव और कल्पनाएं, चाहतें और दुविधाएं, उस कहानी का एक हिस्सा हैं, जिसमें प्रमुख भूमिका निभाने वाला खुद अपना क्वीयर आप हैः जो यह जानने लगा है कि वह अपने आप को किस नज़र से देखना चाहता है और दूसरों को किस तरह नज़र आना चाहता है; वह जो अपने जिंसी आनंद और शारीरिक परेशानियों को समझकर उन्हें व्यक्त करना चाहता है; एक ऐसा आप, जो निजी और सार्वजनिक स्तरों पर अपने शारीरिक स्वभाव और हाव–भाव को, जो शायद अभी वास्तविकता न बन पाए हों, स्पष्ट करना चाहता है। इसका यह मतलब नहीं है, कि यह खोज अपनी या किसी और की बनी–बनाई तस्वीर की खोज है; बल्कि जो दावा करते हैं कि उन्हें पता है कि उन्हें क्या चाहिए, उनके भी अनुभव दर्शाते हैं कि किस प्रकार एक क्वीयर शरीर, जो गुण–दोष की व्याख्याओं और संरचना के सारे नियमों पर पहले ही सवाल उठा चुका है, कोई गढ़ी हुई प्रतिमा नहीं है, बल्कि यह निरंतर बदलता हुआ स्वरूप है।

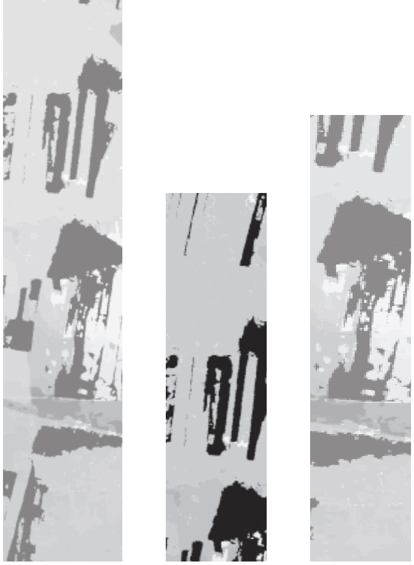

रोज़गार

इंटरव्यूज़ में मेरे जवाब तो सही होते, लेकिन शायद वे मेरी दिखावट को मान्यता नहीं दे पाते थे।

हमारे उत्तरदाता विभिन्न व्यवसायों से जुड़े थे। कुछ शोधकर्ता (रिसर्चर), अध्यापक, इंजीनियर, या चित्रकार थे, कुछ की दिहाड़ी कमाई थी, कुछ मीडिया, पुलिस, कम्पनी या गैर सरकारी संस्थाओं से जुड़े थे। अध्ययन के समय पांच लोग बेरोज़गार थे और तीन अभी पढ़ रहे थे। कइयों ने छोटी उम्र में ही कमाना शुरु कर दिया था – या तो पढ़ाई छोड़कर, या फिर पढ़ाई करने के साथ–साथ। कुछ ने आर्थिक स्वावलंबन पाने के लिए जल्दी कमाना शुरु किया तो कुछ ने घरेलू आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए। कुछ लोगों को मजबूरी में कमाना पड़ा, क्योंकि वे घर छोड़कर भाग आये थे।

वासु एक ग्रामीण, दलित और गरीब परिवार से है। उसकी मां घरों में काम करती और वासु उनके साथ हर घर में जाता। कहता है, "स्कूल के दिनों में मैं मां के साथ जाता पर मुझे काम करने के कभी पैसे नहीं मिलते।" वह 12 साल की उम्र से बराबर कमाने लगा। ''मुझे इधर–उधर से वेतन मिलता। याद नहीं कितना। वहां के लोग बहुत कंजूस थे।" वासु एक ही घर में तीन साल तक काम करता रहा, पर फिर घर छोड़कर भाग गया, क्योंकि अपनी जेन्डर अभिव्यक्ति के कारण उसे भाई से मार पड़ती।

कई तरह से समाज में दरकिनार होने के कारण, जैसे कि जेन्डर, जाति, वर्ग, निवास–स्थान के आधार पर उनके साथ भेदभाव के कारण, कई लोग खुद को अभावों के एक घेरे में पाते हैं। पढ़ाई छूट जाने का मतलब है कि कमाई के साधन सीमित हो जाने की वजह से व्यक्ति की असुरक्षितता और ज़्यादा बढ़ जाती है। जेन्डर या सेक्शुॲलिटी के तनाव के कारण, जब लोग घर या स्कूल छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं, तो पढ़ाई के बिना आर्थिक आत्म–निर्भरता पाना और भी मुश्किल हो जाता है। इसके साथ उन्हें नई जगह में पैर जमाने का तनाव भी झेलना पड़ता है। छोटी उम्र में ही घर छोड़ने वाले व्यक्ति, अन्य प्रकार के भेदभाव के कारण, कई बार इस काबिल नहीं होते कि वे अपनी जीविका के लिए नौकरी ढूंढ पायें। नए शहर में वे आकर बस तो जाते हैं, पर कई बार यहां की भाषा भी अलग होती है। कुल मिलाकर अभावों का घेरा व्यक्ति को और भी जकड़ लेता है।

> अभावों के इस घेरे में फंसे हुए व्यक्तियों को समाज की व्यवस्था द्वारा हिंसा की एक लगातार प्रक्रिया का सामना करना पड़ता है, और वे समाज में उपलब्ध सेवाओं–सुविधाओं से बिल्कुल वंचित रह जाते हैं। हमारे कई उत्तरदाता ऐसे ही हाल में, कई वर्षों बाद भी आत्मनिर्भर नहीं बन पाए थे। दिन–प्रतिदिन उन्हें जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। अध्ययन से प्राप्त आंकड़े इस बात का सबूत हैं। लगभग आधे उत्तरदाता की आमदनी प्रति माह रु.10,000 से कम थी, जबकि महानगरों में खर्च बहुत ज़्यादा होता है।

दिवाकर की इंटरसेक्स विविधता है, और उसने बताया कि किस तरह उसे, क्षमता होने के बावजूद, नौकरी प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। वह अभी पढ़ ही रहा था, जब उसके शरीर में बदलाव आने लगे – चेहरे पे बाल उगने लगे, आवाज़ भारी होने लगी। उसे अध्यापकों और छात्रों का अत्याचार सहना पड़ता। इस सब के होते हुए भी उसने डिग्री हासिल कर ली, लेकिन जगह होने के बावजूद उसे नौकरी नहीं दी गई। कहता है, "एक जगह मेरी अर्ज़ी इसलिए नामंज़ूर कर दी गयी, क्योंकि मैंने उसमें अपनी वर्तमान फ़ोटो लगाई थी, तो उन्होंने कहा कि वह फ़ोटो मेरे सर्टिफिकेट पर (लड़की के) नाम से मेल नहीं खाती।" अगली बार वह अर्ज़ी जमा ही नहीं कर पाया, क्योंकि उस दफ़्तर में लोगों ने सरेआम उसकी खिल्ली उड़ाई।

> कार्यस्थान में अपेक्षित जेन्डर व्यवहार और तौर तरीके अपनाने पड़ते हैं। "औरत" जैसा न दिखना, वैसे कपड़े न पहनना, चाल–चलन न रखना, सभी लड़ाई, तनाव और हिंसा का कारण बन जाते हैं। नौकरी में टिके रहने की संभावना भी इन बातों से प्रभावित होती है। यह सब पहलू उन व्यवसायों पर कैसे प्रभाव डालते हैं, जो प्रमुख रूप से "पुरुषों की जगह" या "आदमियों के काम" माने जाते हैं?

एक ग्रामीण दलित परिवार के संतोष को किसी क्वीयर समूह की सहायता मिलने से पहले, वह कई जगह काम कर चुका था। एक नौकरी का अनुभव बताते हुए कहता है, "मैंने एक महीना एक ऐसे होटल में असिस्टेंट का काम किया जहां केवल आदमी काम करते थे। मुझे दिन के 35 रुपये मिलते, और तीन वक़्त का खाना। हम सब एक साथ सोते, पर किसी को नहीं पता चला कि मैं एक औरत हूं। मैं सबसे पहले उठता और बाथरुम चला जाता, या फिर सार्वजनिक शौचालय में चला जाता। . . . मॅनेजर कई आदमी कर्मचारियों के साथ सेक्स करता था, और उन्हें बारी–बारी से बुलाता था, और मुझे डर लगताः अगर वह मेरे पास आ गया तो क्या होगा?"

अदिति पुलिस में नौकरी करती है, और वर्दी में पॅन्ट–शर्ट पहननी होती है, जो उसे वैसे भी पहनना बहुत पसंद था; यहां तक कि पुलिस की नौकरी करने के पीछे एक कारण यह वर्दी भी थी। लेकिन उसकी ख़ुशी कुछ दिनों तक ही रही। उसका कहना था कि काम से जुड़े सामाजिक समारोहों में पुलिस में काम करने वाली बाकी औरतें साड़ी और गहने पहनकर ही जाती थीं और उसके पॅन्ट–शर्ट पहनने पर लोग उसे ताना देते और बार–बार पूछते कि वह शादी कब करेगी। अब अदिति को यह नौकरी अच्छी नहीं लगती, और वह इसे छोड़कर अपना एक जिम खोलना चाहती है।

सारा एक टेलीविजन निर्माता है और उस का कहना हैः

> *निर्देशन का काम बहुत कठिन है, यह एक मर्दाने काम की तरह है। फिल्म बनाते समय, मेरे आस–पास 25–40 आदमी होते हैं – लाइट बॉय, स्पॉट बॉय, और इन सब के बीच मैं अकेली औरत निर्देशक। अब औरत निर्देशक दो प्रकार की हो सकती है, एक जो लड़कियों जैसे आंखें मटकाकर डी ओ पी को खुश रखे, और दूसरी जो साफ़–साफ़ कह दे वह कैसा काम चाहती है। मुझे कभी कोई परेशानी नहीं हुई, लोग मुझसे निर्देश मांगते हैं, जैसे कोई लाइट बॉय मुझसे पूछेगा, "सर, सॉरी मेडम, मैं लाइट कहां लगाऊं?"*

अभावों का घेरा

जेन्डर और सेक्शुॲलिटी संबंधित अत्याचार, केवल पुरुष–प्रधान व्यवसाय या कार्य स्थानों तक ही सीमित नहीं होता – कभी–कभी किसी संस्था की संस्कृति ही गहरे रूप से पितृसत्तात्मक और हेट्रोनॉर्मेटिव होती है। चांदनी एक शेयर के दलाल के दफ़्तर में काम करते थे। इस दफ़्तर का मालिक ठेठ मर्दाना आदमी था, जो सोचता था कि औरतें कुछ ज़्यादा कर ही नहीं सकतीं। चांदनी को लगातार पूछा जाता कि वे शादी क्यों नहीं करते।

कई उत्तरदाताओं ने कार्यस्थान पर होने वाले यौन अत्याचार के स्पष्ट उदहारण दिए। सौम्या याद करती है कि एक बार उसे अपने आदमी अध्यक्ष के साथ दूसरे शहर में काम संबंधी टूर पर जाना था। "वह मुझे खाना खिलाने बाहर ले गया और शराब पीते समय मुझसे बेवफ़ाई के बारे में बात करने लगा। मैंने जवाब में कहा 'आप यहां हैं, तो आपकी पत्नी भी किसी गैर आदमी के साथ होगी।' यह सुनते ही उसका माथा चकरा गया। मेरे को नशा कराने के बदले वह खुद नशे में चूर हो गया। मेरा पीछा छोड़कर वह अपने कमरे में जाकर चुपचाप सो गया।" इस हादसे के बाद सौम्या ने नौकरी बदल ली।

कुछ लोगों ने यौन उत्पीड़न के हादसों के बाद भी जब नौकरी में टिके रहने की कोशिश की, उन्हें एक और प्रकार का शोषण सहना पड़ा, उन अधिकारियों द्वारा, जिन्हें उन्होंने नकारा था। किसी को निशाना बनाने, ताने देने, या उसपर अन्य प्रकार के अत्याचार करने के खिलाफ़ शिकायत करने या न्याय पाने के ज़रिये बहुत कम होते हैं, जिन तक न केवल क्वीयर जस्जेनिव, बल्कि आम जस्जेनिव भी पहुंच नहीं पाते। और जब कोई खुद को 'औरत' ही न मानते हों, तो उनके लिए स्थिति और भी मुश्किल हो जाती है।

सनी ने अपने बॉस के साथ के अनुभव के बारे में बताते हुए कहा

> *हमारा बॉस . . . लड़कियों के बारे में बहुत बुरी तरह से बातें करता था . . . हम उसकी बातों को नज़रंदाज़ करके कोई दूसरी बात छेड़ देते। उसके साथ हमारा बर्ताव हमेशा ऐसा होता जैसे दो आदमियों के बीच, इसलिए एक दिन जब उसने हमें बर्गर खाने के लिए बुलाया, हमें कुछ भी अजीब नहीं लगा। बर्गर खाने के बाद जब वह हमारे घर आना चाहता था, हमें तब भी कुछ अजीब नहीं लगा। घर पहुंचकर वह अजीब बर्ताव करने लगा और उसने हमें चूमने की कोशिश की, और हमारी छाती पर हाथ फेरने लगा, पर क्योंकि हम जेब में आईडी कार्ड रखते थे, उसके हाथ में केवल वही आया . . . और हमने खुद को उसकी पकड़ से निकाल लिया। . . . लेकिन इसके बाद, बदला लेने के लिए, वह हमें सबसे बेकार और सबसे कठिन शूट पर भेजा करता।*

जहां काम की जगह पर इतनी परेशानियां होने लगती हैं वहां गैर–सरकारी संस्थाओं में नौकरी एक विकल्प बन जाता है। अपने पसंद का काम न होते हुए भी, लोग इसे स्वीकार लेते हैं क्योंकि और कोई चारा नहीं होता। प्रेम अपनी ज़बरदस्ती में की गयी शादी को छोड़कर अपने जस्जेनिव पार्टनर के साथ भाग गए। क्योंकि वे 12वीं तक पढ़े थे, उन्हें एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी मिल गई। पर कंपनी का मालिक साड़ी पहनने को मजबूर करता। प्रेम को नौकरी छोड़ देनी पड़ी, और बेरोज़गार, घर पर बैठना पड़ा, जब तक उन्हें एल जी बी

टी मुद्दों पर काम करने वाली एक संस्था में नौकरी नहीं मिली। इस नौकरी में उन्हें मनचाहे कपड़े पहनने और इच्छानुसार बाल रखने की छूट मिली।

लेकिन गैर–सरकारी संस्थाएं भी हमेशा आदर्श विकल्प नहीं होतीं। देवी, जो एक बेहद गरीब परिवार से हैं और बहुत कम पढ़े–लिखे हैं, महिलाओं के मुद्दों पर काम करने वाली एक संस्था में जुड़ गये और उनके कई अभियानों का एक सक्रिय रूप से हिस्सा बन गए। 1990 के दशक में उन्होंने बस्तियों में मीटिंग आयोजित करने और एकल औरतों के मुद्दों पर चर्चा करने की पहल की। इस दौरान जब कुछ औरतें खुलकर हमजिंसी रिश्तों के बारे में बात करने लगीं, तो संस्था ने देवी को फटकारा और मीटिंग में जाने व जन मंच पर बोलने से रोक दिया। उनका कहना है, "फ़िर ज़्यादा हमारे ऊपर अत्याचार होने लगे संस्था में, तो हमने जाना ही छोड़ दिया। (काफी देर चुप रहने के बाद) हमको (नारीवादी) आंदोलन से जीवन मिला मगर कुछ विचारधारा ने हमको ऐसी चोट पहुंचायी कि वह जीते जी निकलेगी।"

> गैर–सरकारी संस्थाओं की अपनी सीमाएं होती हैं, अपने काम करने के तौर–तरीके, जिस कारण ना तो वे लोगों को पूर्ण रूप से सहायता दे सकती हैं, ना ही उनकी काबिलियत को पूरी तरह से उभरने का मौका दे पाती हैं। ऐसी संस्थाओं में कमाई केवल दैनिक ज़रूरतें पूरी कर पाती है, इसलिए आगे बढ़ पाने के बजाय लोग इन्हीं पर निर्भर रह जाते हैं। ये संस्थाएं जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दों पर संवेदनशील होते हुए भी, ऐसी नौकरियां नहीं दे पातीं जो लोगों की काबिलियत के अनुसार हों, या जो लोग कम पढ़े–लिखे या कम तजुर्बे वाले हैं उनके लिए ऐसे अवसर भी नहीं दे पातीं जिससे कि वे आगे बढ़ सकें और अपनी आकांक्षाएं पूरी कर सकें।

दूसरी ओर, जिन उत्तरदाताओं ने जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दों से जुड़ी संस्थाओं में काम करना खुद पसंद किया, उनका अनुभव व्यक्तिगत और भावनात्मक रूप से संतोषजनक रहा। मौशमी एक ऐसी ही संस्था से ऐसे समय में जुड़ी, जब वह अपनी जिंसीयत को लेकर दुविधा से जूझ रही थी, और खुद को हानि पहुंचाने वाले व्यवहार कर रही थी, जैसे अपने जिस्म को काटना। उसकी संस्था में उसे काफ़ी सकारात्मक सहयोग मिला। "किसी ने मुझ पर उंगली नहीं उठायी, किसी ने सवाल नहीं किए। किसी ने नहीं पूछा कि पहले तुम्हारा रिश्ता एक आदमी से था तो अब ट्रांसजेन्डर व्यक्ति के साथ क्यों हो ? उन्होंने मुझे इतना सहयोग दिया कि क्या बताऊं . . . मुझे यहां काम करते हुए अब तीन साल हो गए हैं। इतने सारे लोगों के बीच रहकर मुझे बहुत बेहतर लगने लगा।"

जमुना को हिजड़ों के साथ काम करने वाली एक संस्था से जुड़कर बहुत कुछ सीखने को मिलाः

> *हमारे बीच जेन्डर के अलावा वर्ग के अंतर को भी मैं दूर करने की कोशिश कर रही थी। लेकिन जेन्डर का अंतर पूरी तरह दूर नहीं कर पायी क्योंकि ट्रांसआदमी और अरवानी, दोनों से मैं अलग–अलग तरीके से जुड़ पाती थी। . . . अरवानी भी औरत ही हैं पर मेरे जैसी नहीं . . . किसी के भी जेन्डर का पूर्व अनुमान नहीं लगाना चाहिए, यह मेरे पूरे नज़रिये का हिस्सा बन गया। क्या इससे मुझे अपना जेन्डर स्थायी लगा? पता नहीं . . . लेकिन मैं यह स्पष्ट रूप से जानती थी कि मैं एक शहरी, उच्च वर्ग की प्रगतिशील औरत थी, जो इन निम्न वर्ग के हिजड़ों जैसे साड़ी नहीं पहनती थी। मुझे यह भी समझ आया कि जहां इन हिजड़ों को औरत जैसा दिखने के लिए कड़ा प्रयास करना पड़ता, वहां मुझे अपने औरत होने को कभी साबित करने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई।*

ज़ाहिर है कि जो सबसे ज़्यादा दरकिनार हैं, उन्हें अभावों का घेरा सबसे ज़्यादा आसानी से जकड़ लेता है। उच्च वर्ग, जाति, शिक्षा और हुनर से उपलब्ध सुविधाओं के बिना वे नई जगह में खुद को स्थापित नहीं कर

पाते। चाहे वे आगे बढ़ने की कितनी ही प्रबल इच्छा क्यों न रखते हों, उन्हें अपने सपनों को साकार करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

हमारे कुछ उत्तरदाता अपनी विशेष रुचि को कमाई का साधन ज़रूर बना पाए – चित्रकारी, संगीत, खेल–संबंधी या फिर जेन्डर और जिंसीयत–संबंधी कामों में। कुछ और ने दृढ़ निश्चय से, अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए, अपना मनचाहा व्यवसाय ढूंढ लिया।

12वीं कक्षा की परीक्षा के तुरंत बाद, 17–वर्षीय आनंद घर से भाग गया, क्योंकि उसका परिवार उसकी शादी करवाना चाहता था। वह नज़दीक के महानगर में जा पहुंचा, जहां उसकी कोई जान–पहचान नहीं थी। कुछ लोगों की सहायता से वह अपनी पढ़ाई में रुचि को साकार कर पाया। डिग्री प्राप्त की, मनपसंद व्यवसाय में जुड़ गया और जीवन में स्थिरता हासिल कर ली। परिवार वालों और अपने बीच आई दूरी को भी मिटा दिया और वह उनका मुख्य सहारा बन गया। काम के संदर्भ में, आनंद एक दिल को छूने वाला किस्सा सुनाता है – एक दिन वह कलाई पर राखी बांधे दफ़्तर पहुंचाः

> *जब मेरे सीनियर ने पूछा राखी क्यों पहनी है, मैं चुप रहा। फिर उन्होंने कहा, 'तुम तो लड़की हो ना?' ना जाने कहां से साहस जुटाते हुए मैंने कहा, 'हूं भी और नहीं भी।' यह सुनते ही उन्होंने दरवाज़ा बंद किया और कहा, 'अब मुझे ठीक से बताओ।' मैंने कहा, 'क्या आप ट्रांससेक्शुअल्स के बारे में जानते हैं?' उन्होंने कहा, 'हां, क्या तुम उनमें से हो?' मैंने कहा, 'हां।' उन्होंने कहा, 'चलो ठीक है, पर फिर तुम सब लोगों को तुम्हें लड़की के नाम से संबोधित क्यों करने देते हो, तुम्हारा नाम क्या है?' मैंने कहा, 'मेरा नाम आनंद है।' उन्होंने कहा, 'फिर तो लोगों को तुम्हें आनंद कहकर पुकारना चाहिए।' मैंने पूछा, 'क्या यह संभव है?' उन्होंने कहा, 'संभव का क्या मतलब है, तुम ऐसा चाहते हो ना?'. . . तब उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं को बुलाकर पूछा, 'यह कौन है?' उन लोगोंने मेरा लड़की वाला नाम बताया। मेरे सीनियर ने कहा, 'गलत, यह आनंद है, एक आदमी, और आज से मैं चाहता हूं कि सब लोग इसे सही तरीके से संबोधित करें।'*

कार्यस्थान संबंधी अधिकांश कहानियां अपने अस्तित्व को गोपनीय रखने की होती हैं, जहां राज़ खुल जाने का मतलब है हिंसा, या नौकरी से बेदखली। आनंद जैसी कहानियां बहुत कम सुनने को मिलती हैं, लेकिन आशा जगाती हैं कि एक व्यक्ति, सीमित क्षमता रखते हुए भी, व्यक्तिगत रूप से लोगों की ज़िंदगी संवार सकता है, जैसे की आनंद के सीनियर ने किया।

जो लोग कार्यस्थान में अपना असली अस्तित्व प्रकट कर पाए, या मनपसंद व्यवसाय में जुड़ पाए, वे अपनी जीवन कथा को एक सुखद मोड़ दे पाए।

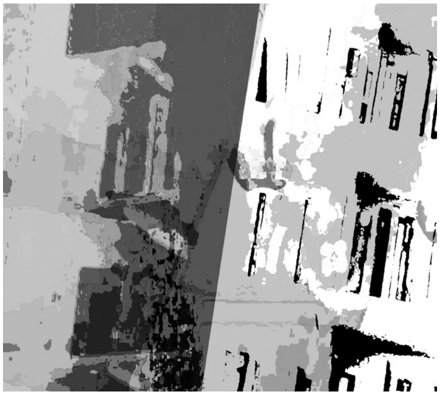

सार्वजनिक की (नव)रचना

काश कि लोग आपस में बातें कर पाते और स्वीकार कर पाते कि हमारे बीच आपसी अंतर होते हुए भी हम सब एक ही दुनिया में रहते हैं, काश हम अपनी ही धुन में रहना छोड़कर, शांत मन से समझ पाते कि असल में हम काफ़ी छोटे प्राणी हैं . . .

निजी स्थानों के अतिरिक्त, हर व्यक्ति का सार्वजनिक स्थानों से भी वास्ता होता है। हमने अपने उत्तरदाताओं से पूछा कि सार्वजनिक स्थानों में उनके अनुभव कैसे रहे। सरकार की ज़िम्मेदारी है कि हर नागरिक की सार्वजनिक स्थानों तक पहुंच स्थापित हो, और वे स्थान सभी के लिए सुरक्षित हों। इसलिए हमने सबसे यह भी पूछा कि उनका स्वास्थ्य और पुलिस जैसी सरकारी सुविधाओं के साथ कैसा अनुभव रहा।

सड़कें, यातायात और शौचालय

आम तौर पर सार्वजनिक स्थानों का ढांचा ही कुछ इस प्रकार से बनाया गया है कि उन्हें केवल एक प्रकार के आदमी ही इस्तेमाल कर सकते हैं। अतः जस्जेनिव के लिए, चाहे वे क्वीयर हों या न हों, इन्हें इस्तेमाल करना मुश्किल है, ख़ास तौर से युवावस्था में। बड़े होने पर वे कितनी आसानी से इन जगहों से जुड़ पाते हैं, यह हरेक के वर्ग, अपनी–अपनी पहुंच, और गतिशीलता जैसे पहलुओं पर निर्भर करता है।

वयस्क होने पर अधिकांश उत्तरदाता अपने दोस्तों से मिलने के लिए घर या अन्य निजी जगहें ही पसंद करते थे, हांलाकि कुछ को कॉफ़ी शॉप जैसी जगहें भी पसंद थीं, जहां कोई दखलंदाज़ी नहीं करता। कुछ लोग सार्वजनिक स्थानों में मिलना पसंद करते थे, क्योंकि एक ही जेन्डर के दो लोगों के बीच घनिष्ठ दोस्ती को समाज में स्वीकृति प्राप्त है। जेन्डर नियमों में फ़िट होने वाली जोड़ी की ओर, जहां दोनों "औरत" जैसी दिखती हों, कोई ध्यान भी नहीं देता।

जैसे की रंजना कहती है, "अपने पार्टनर के साथ मेरा बाहर घूमना आसान रहा है, किसी को हमारे रिश्ते का पता नहीं चलता।" आम तौर पर ऐसे रिश्तों की निगरानी नहीं की जाती, जब तक कि जेन्डर नियमों के उल्लंघन के कारण उन पर नज़र न पड़े।

निधि, जिनके छोटे बाल हैं और वे पॅन्ट–शर्ट पहनना पसंद करते हैं, कहते हैं "लोग गंदी–गंदी बातें कहते हैं – 'लड़के का कमी हो गया क्या, कि लड़की साथ–साथ है?' या 'आओ मेरे साथ सो जाओ।' एक दोपहर हम तालाब के किनारे बैठे थे . . . आठ–दस लड़कों ने अचानक हमें घेर लिया। हमारी पार्टनर को हमारा माल कहकर पुकारने लगे। फिर उसे धमका कर बोले, 'यह निधि तुम्हारे साथ हर वक्त तो नहीं रहेगी ना, हम तुम्हें ढूंढ लेंगे और तुम्हारे साथ बलात्कार करेंगे।" इस घटना में, निधि को चोट पहुंचाने के लिए, उस व्यक्ति को निशाना बनाया गया जो जेन्डर के नियमों का पालन करती थी। दूसरी कहानियों में, स्पष्ट रूप से जेन्डर नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को ही सीधे निशाना बनाया गया – उन्हें ताने देकर, और उनके साथ मार–पीट करके।

> ग्रामीण क्षेत्रों और कस्बों में, औरत और आदमी के व्यवहार और पहनावे के नियम इतनी सख्ती से लागू किये जाते हैं कि अगर कोई भी उन्हें तोड़े तो उसे गंभीर परिणाम झेलने पड़ते हैं। कीर्ति बताते हैं कि वे जहां रहते हैं, वहां के कुछ नियम ऐसे हैं, जिन्हें वे कभी नहीं तोड़ सकते। "गांव में हम सबको साड़ी पहननी पड़ती है। वैसे हमें पॅन्ट–शर्ट पहनना पसंद है। पर गांव में नहीं पहन सकते। . . . अगर हमारी मर्ज़ी चलती, तो हम छोटे बाल रखते। हम खुलकर सिगरेट और दारू पी सकते थे।" और मुरली को अपना गांव इसलिए छोड़ना पड़ा क्योंकि अपने मनचाहे ढंग से ज़िंदगी गुज़ारने का यही एक तरीका था, हालांकि उनके परिवार ने उनकी जेन्डर अभिव्यक्ति को स्वीकार कर लिया था। अब वे अपने पार्टनर के साथ अपने परिवार से मिलने जाते हैं, पर रहते शहर में ही हैं।

चूंकि बड़े शहरों में व्यवहार और ख़ास तौर पर पहनावे के नियम जपुजेनिव के मुकाबले जस्जेनिव के लिए कुछ ज़्यादा लचीले होते हैं, तो अक्सर कई जस्जेनिव अपने नज़दीकी महानगरों में शरण ले लेते हैं। हमारे कई उत्तरदाताओं ने शहर पहुंचते ही सबसे पहले बाल कटवाए या पॅन्ट–शर्ट पहनने लगे। कुछ ने तो और भी कई साहस किए। जैसा कि खुद को 'औरत' मानने वाली सरन कहती है, ". . . सुबह 10 या 11 बजे से मैं सारा दिन सड़कों पर घूमती। . . . कभी सिगरेट की दुकान पर, कभी किसी कार की पीछे की सीट पर, और कभी . . . पेड़ के नीचे बैठे हुए।"

> लेकिन शहरों में भी जेन्डर के आधार पर विभाजित जन सुविधाओं का प्रयोग करना सबसे विवादित और कष्टकर साबित होता है, जिसमें प्रमुख हैं शौचालय, बस या ट्रेन में आरक्षित सीटें, मॉल या हवाई अड्डे जैसे स्थानों में सुरक्षा जांच। अपेक्षित जेन्डर का दिखाई देने पर ज़ोर की वजह से होने वाले तनाव और बोझ के चलते कुछ क्वीयर जस्जेनिव अपना पहनावा बदल लेते हैं, कुछ अपनी आवाज़ से अपने "सही" जेन्डर का संकेत करते हैं, या फिर ऐसे साथी के साथ यात्रा करते हैं जो उनके प्रवक्ता बन सकें। सॅन्डी कहते हैं, "हमें मॉल में जाने से नफ़रत है, क्योंकि वहां गेट पर शारीरिक जांच करवानी पड़ती है, और वह हमेशा हमारे लिए तनाव पूर्ण अनुभव होता है। हवाई अड्डे के लिए तो . . . एक तरह से वह मेरी एयरपोर्ट वर्दी ही है, हम एक तंग टी–शर्ट पहन लेते हैं, जिससे कि छाती साफ़ नज़र आए।"
>
> केवल महिलाओं के लिए जन सुविधाओं में, जैसे ट्रेन के डिब्बे या शौचालयों में, जेन्डर नियमों का उल्लंघन करने वाले जस्जेनिव को अक्सर औरतों द्वारा उत्पीड़न, गालियां और हिंसा का सामना करना पड़ा है। इस कारण कुछ लोगों ने तो सार्वजनिक शौचालयों का इस्तेमाल ही करना छोड़ दिया। प्रेम को महिलाओं के शौचालय इस्तेमाल करने से डर लगने लगा, जब से उनके दो

जस्जेनिव दोस्तों को ऐसा ही एक शौचालय का उपयोग करने पर बुरी तरह से पीटा गया था। कुछ लोग इनका प्रयोग तभी करते जब कोई 'औरत' जैसी दिखने वाली उनके साथ होती। कभी–कभी केवल पुरुषों वाले शौचालय का इस्तेमाल करना ही ठीक लगता है। कार्तिक कहता है, "मैं हमेशा पुरुषों के शौचालय में जाता हूं। लेकिन अगर वहां केवल मूत्रालय होता है, तो मैं नहीं जाता, रोक लेता हूं।" जो लोग होटलों आदि में आसानी से जा पाते हैं, उनके लिए स्थिति थोड़ी आसान हो जाती है क्योंकि वहां महिला/पुरुष के लिए अक्सर एक ही शौचालय होता है, कोई सवाल नहीं उठता और सफ़ाई भी अच्छे से रखी जाती है। बाकी लोगों के लिए, यह हमेशा एक सवाल बना रहता है।

क्योंकि अलग–अलग जेन्डर पहचान के लोगों के लिए सार्वजनिक शौचालय का उपयोग करना एक समस्या हो सकती है, हमने अपने उत्तरदाताओं से पूछा कि उनके विचार में सबसे अच्छा क्या होगा। जो लोग सोच रहे थे कि महिला/पुरुष के लिए एक ही शौचालय हो, उन्हें चिंता थी कि क्या वे "औरतों" के लिए सुरक्षित होंगे, और क्या वे सफ़ाई की नज़र से ठीक रहेंगे। कुछ लोगों का मानना था कि "औरत" और "आदमी" के शौचालयों के अतिरिक्त ट्रांस* लोगों के लिए एक अलग शौचालय होना चाहिए। लेकिन ऐसे में इन लोगों की ट्रांस* वाली पहचान ज़ाहिर हो जाने का डर है। कुछ लोगों का सुझाव था कि एक ही प्रकार के शौचालय हों, जिनमें दरवाज़े वाले छोटे कमरे हों, तो सभी लोग उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

सार्वजनिक शौचालयों का मुद्दा सुलझाना आसान नहीं है। जैसे कि जूही का कहना है, मुद्दा तो बिना किसी श्रेणी की सुविधाएं देने का है, पर इसका समाधान श्रेणियों में ढूंढा जा रहा है। जैसे कि वे बताते हैं, इस प्रकार का विभाजन केवल नियामक जेन्डर पर ज़ोर देता है, और शायद उन्हें दरकिनार करता है जो पहले से ही जेन्डर की सीमाओं पर हैं।

जन सेवाओं का उपयोग

जैसा कि हमने देखा, हमारे उत्तरदाताओं की ज़िंदगी चुप्पी और हिंसा से भरी है। इसका सीधा प्रभाव उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उनके जीवन में स्वास्थ्य सेवाओं और पुलिस, दोनों की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। लेकिन स्पष्ट सवाल करने पर भी लोगों के पास इन दोनों के ही बारे में ज़्यादा कुछ बताने के लिए नहीं था। उनके अनुभवों से निकल कर आया कि या तो उनके लिए इन सेवाओं तक पहुंच पाना ही बहुत मुश्किल था, या फिर सहायता के बदले उन्हें यहां भी सदमे झेलने पड़े और हिंसा का सामना करना पड़ा।

कई लोगों ने स्त्रीरोग विशेषज्ञ के पास जाने में झिझक के बारे में बताया। सबको हेट्रोसेक्शुअल मान के चलने की प्रथा, ंऔर शादी से जुड़े सवाल, मुश्किल खड़ी कर देते हैं, खासकर जब आपको पता हो कि अगर असलियत बतायें तो होमोफ़ोबिया का सामना करना पड़ सकता है। जैसे कि जमुना कहती है, "अगर आप शादीशुदा नहीं हैं, तो वे मान लेते हैं कि आप सेक्स भी नहीं करते। . . . किसी अस्पताल में जाकर कहना आसान नहीं है कि मैं हमजिंसी सेक्स करती

हूं। इन सब झमेलों की वजह से मैं स्वास्थ्य की साधारण समस्याओं पर भी ध्यान नहीं देती हूं, क्योंकि मैं हमजिंसी रिश्तों के प्रति नफ़रत से गुज़रना नहीं चाहती।"

मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक तो पहुंच पाना भी क्वीयर जस्जेनिव के लिए मुश्किल बात है। उच्च वर्ग के लोग तो काउंसिलर की मदद ले सकते हैं और कभी–कभार छोटे स्वास्थ्य केंद्रों में भी इनकी सेवा उपलब्ध होती है। कुछ उत्तरदाता अपनी मर्ज़ी से काउंसिलर के पास गए, कइयों के मां–बाप उन्हें काउंसिलर के पास ले गए। कुछ काउंसिलर संवेदनशील निकले, कुछ उदासीन और होमोफ़ोबिक। कॉलेज के दिनों में जब कवी बेहद उदास थी, तो वह काउंसिलर के पास गयी लेकिन वह उसकी जिंसीयत का "इलाज" करने लगा, और उसके बारे में कवी की मां से यह कहकर उसकी परेशानी और बढ़ा दी, कि "यह सिर्फ़ कुछ दिनों की बात है, वह यह सब छोड़ देगी, शादी हो जाने के बाद सब ठीक हो जायेगा।" जय का भी ऐसा ही अनुभव रहा – जब उसे पहली बार एक जस्जेनिव से प्रेम हुआ, तो वह गांव के एक काउंसिलर के पास गया, ताकि वह अपनी भावनाओं को समझ सके। काउंसिलर ने जय को कहा कि वह अपने पार्टनर को भी लेकर आए, जिससे कि वह उन दोनों का "इलाज" कर सके।

इसके अतिरिक्त, ट्रांस* और इंटरसेक्स मुद्दों पर आम तौर पर कोई समझ नहीं है। चिकित्सा विज्ञान द्वारा क्या हस्तक्षेप संभव है, इसके क्या असर होंगे – इन सब पर ना तो सही जानकारी उपलब्ध है, ना ही आसानी से मिलती है। जेन्डर के नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को लगातार 'रोगी' के रूप में देखे जाने से वे और भी दरकिनार हो जाते हैं। एक उत्तरदाता, जिनकी इंटरसेक्स विविधता है, ने चिन्तित भाव में कहा, "अभी तक तो हम बीमार नहीं हुए। लेकिन हम चाहते हैं कि हमारे पास एक ऐसा डॉक्टर हो, जो हमारे बारे में सब जानता हो और उसके आधार पर हमें सलाह दे सके। हमें चिंता होती है कि अगर हम अचानक बीमार हो गए और हमें बेहोश हालत में पुलिस अस्पताल ले जाएगी, तो क्या होगा?"

पुलिस एक और महत्वपूर्ण सेवा है, और सरकार की ज़िम्मेदारी है की यह सेवा हर व्यक्ति को निष्पक्ष रूप से उपलब्ध हो। लेकिन जब सवाल जस्जेनिव का हो, तो "औरतों" के साथ पहले से हो रहे भेदभाव पर एक और परत चढ़ जाती है। हिंसा का शिकार हुए किसी भी उत्तरदाता को मांगने पर भी पुलिस से सहायता नहीं मिली। खुद को 'आदमी' की पहचान देने वाले वासु ने "औरतों" के लिए लागू प्रावधान इस्तेमाल करने की कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। "एक बार घर में लड़ाई हुई और मुझे बहुत पीटा गया। मेरा खून बुरी तरह बह रहा था और मैं पुलिस में शिकायत लिखाने गया कि मेरे सबसे बड़े भाई ने मुझे मारा है। मैंने यह शिकायत महिला सेल में दर्ज़ करवाई। . . . लेकिन उन्होंने भाई को पुलिस थाने में बुलाया तक नहीं। मुझे उन सबके सामने लगा कि मैं कितना बेकाम का हूं।"

पुलिस मामले पर तभी ध्यान देती है जब पैदाइशी परिवार द्वारा शिकायत दर्ज़ की जाती है, ख़ास तौर से जब दो क्वीयर जस्जेनिव घर छोड़कर साथ में भाग गए हों। जब एक उत्तरदाता का हमजिंसी रिश्ता उसके परिवार की नज़र में आया, तो उसे लगभग घर पर बंदी बना दिया गया। अंततः वह अपने पार्टनर और एक अन्य औरत के साथ घर छोड़कर भाग गयी। तीनों ने आत्महत्या करने का वचन लिया। लेकिन बाद में इरादा बदलने के बावजूद, तीसरी औरत ने ख़ुदकुशी कर ली जिसके कारण बाकी दोनों को गिरफ़्तार कर लिया गया। "पुलिस मेरे साथ गंदी भाषा में बोलते, मेरी खिल्ली उड़ाते; अश्लील सवाल पूछते और ऊंची आवाज़ में बोलकर रोब

जमाते। मुझे उनके हाथों जिंसी अत्याचार नहीं सहना पड़ा पर मेरी पार्टनर के साथ हुआ। वे हमें धमकी देते रहते और एफ टी एम लोगों के बारे में बुरा–भला बोलते।" कई और उत्तरदाताओं को भी पुलिस की धमकियां और अत्याचार सहना पड़ा, यहां तक कि एक पार्टनर पर आरोप लगाया गया कि उसने दूसरे का अपहरण किया है।

सरकार हर नागरिक को सुरक्षा प्रदान करने की अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में लगातार नाकाम रही है। दरकिनार किए गए लोगों को अलग–अलग तरह के सहारे और सुरक्षा की ज़रूरत रहती है, लेकिन सरकार और सरकारी तंत्र, उन्हें सहयोग देने के बजाए, उन्हीं को हिंसा का शिकार बनाती है। हमारे उत्तरदाताओं के अनुभवों से स्पष्ट होता है कि उनकी गैर–नियामक जेन्डर और जिंसीयत उन्हें उन सब चीज़ों से वंचित करने का और एक कारण बन जाता है जिनपर उनका हक़ बनता है।

औरत–आदमी के लिए अलग जगहें बनाने को एक सकारात्मक कदम माना जाता है, विशेषकर सार्वजनिक स्थानों में "औरतों" के प्रति हिंसा को रोकने के संदर्भ में। लेकिन ये प्रावधान क्वीयर जस्जेनिव के लिए उतने उपयोगी नहीं होते, क्योंकि ये बाइनरी जेन्डर की मान्यता पर टिके हैं। यह याद रखना होगा कि जो लोग अपने निर्धारित जेन्डर के नियम पूर्ण रूप से नहीं अपनाते, उनके लिए औरत–आदमी में विभाजित सार्वजनिक स्थान अत्याचार और हिंसा की जगहें बन सकती हैं। हमें जेन्डर की एक अलग समझ बनानी होगी, जिससे सार्वजनिक स्थान जेन्डर संवेदनशीलता बनाए रखते हुए, जेन्डर विशिष्टता के लिए भी जगह दें और साथ ही जेन्डर विविधता को भी बरकरार रखें, और यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन स्थानों में हर प्रकार की जेन्डर अभिव्यक्ति रखने वाले लोगों को सहूलियत और सुरक्षा मिले।

क्वीयर समूहों से संपर्क बनाना

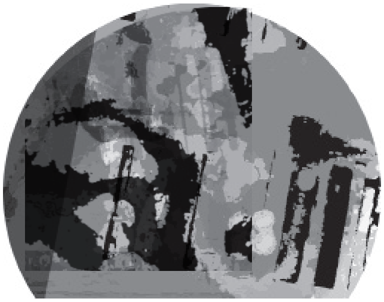

एक समुदाय की भावना पैदा हो ही जाती है, क्योंकि लड़ाई–झगड़े ज़्यादा देर तक नहीं खिंचते। हमें अहसास है कि इन्हीं लोगों के साथ हम अपने अनुभव बांट सकते हैं . . . गहरी दोस्ती बना सकते हैं। जहां आपको ऐसा नहीं लगता कि आप ही हर समय सहारा मांग रहे हैं। जैसे–जैसे समय बीतता है, आप पलट कर उन्हीं लोगों के साथ दोस्ती कर लेते हैं, जिन्होंने आप को गहरी चोट पहुंचाई थी।

हमारे दोस्तों और सोशल नेटवर्क्स ने हमें कुछ ऐसे लोगों से संपर्क करवाया जो अन्य लोगों के मुकाबले उच्च वर्ग के थे। लेकिन देश–भर में जो गिने–चुने सहयोग समूह हैं, उनकी सहायता के बिना शायद हम कभी भी उन दरकिनार लोगों से संपर्क न बना पाते, और न ही उनकी मौजूदगी और संघर्षों के बारे में जान पाते। हमारे अधिकांश उत्तरदाताओं के लिए इन समूहों से संपर्क बनाने का मतलब था कि वे सालों से चले आ रहे अपने जीवन के अकेलेपन को दूर कर पाए, भले ही वे कहीं और से भाग कर आये थे (जैसे बंगलूरु में लेस्बिट, या त्रिशूर में सहयात्रिका के कई सदस्य) या फिर पैदाइशी परिवार के साथ रह रहे स्थानीय निवासी थे (जैसे कोलकता में सॅफ़ो के कई सदस्य)।

जिस अजीब संयोग से कई लोग इन समूहों से संपर्क बना पाए, उससे लगता है कि न जाने कितने और लोग होंगे जो ऐसे समूहों के पास पहुंच ही नहीं पाते। कई ज़िंदगियों की कई कथाएं आज शायद केवल इसलिए सुनने–सुनाने को मिली हैं, क्योंकि हमारे उत्तरदाता इन समूहों तक पहुंच पाएः किसी ने अत्यंत उदासी के दौर में अलमारी में बिछे पुराने अख़बार में एक लेख पढ़ा; किसी की जान पहचान या परिवार में एक ऐसे व्यक्ति से भेंट हुई जिसने ज़िंदगी के दरवाज़े खोल दिए; और इस सबके बाद फिर शुरू – फ़ोन पर अनजान लोगों से बात करने का सिलसिला, जो आपसे हमदर्दी जताते और दिलासा देते।

एक जोड़ी की एक विचित्र कहानी सुनने को मिली, जो कई दिनों तक एक लंबे सफ़र की ट्रेन में यात्रा करते रहे, और उसी ट्रेन में क्वीयर समूह के एक सदस्य ने उनकी स्थिति को पहचानते हुए, उन्हें एक फ़ोन नंबर पकड़ा दिया, हांलाकि उन्होंने उसके सामने अपनी पहचान स्वीकार नहीं की। और एक उत्तरदाता, जो खुद को 'आदमी' की पहचान देता है, ने बताया कि एक दिन वह घर से भागने को मजबूर होकर शहर की सड़कों पर घूम रहा था। अपने जैसे एक व्यक्ति को देखते ही वह उल्टी दिशा में घबरा कर भागने लगा, लेकिन उस

व्यक्ति ने उसका पीछा करते हुए उसे उस जगह पहुंचा दिया, जो उसके लिए सुकून की जगह बन गई। कुछ लोगों का संपर्क इन समूहों से तब हुआ जब मीडिया ने उनके बारे में खुलासा कर दिया। इन हालात में समूह ने उन्हें कानूनी सहायता और काउंसिलर की मदद दिलायी, नयी जगह पर बसने में सहायता दी, और बहुत ही कठिन परिस्थितियों में परिवार और पुलिस का सामना करने में मदद की। ऐसे कई व्यक्ति आगे चलकर इन समूहों के सक्रिय सदस्य बन गए।

हमें यह याद रखना होगा कि हम मुट्ठी–भर समूहों और संस्थाओं की बात कर रहे हैं। इनमें से कुछ के पास ही वेतन पर काम करने वाले कार्यकर्ता हैं, और बाकी समूहों में स्वैच्छिक रूप से काम होता है; कुछ समूहों के अपने दफ़्तर या मीटिंग की जगह हैं, कई किसी सदस्य के घर से काम करते हैं और बड़ी मीटिंग रखने के लिए किसी समर्थक गैर–सरकारी संस्था के ऑफिस पर निर्भर रहते हैं। अगर हम उन समूहों की स्थिति देखें, जिनके द्वारा हम अपने अधिकांश उत्तरदाताओं से संपर्क बना पाए – जैसे कि लेबिया, लेस्बिट, सॅफ़ो, सहयात्रिका, तो इनके सक्रिय सदस्य कम संख्या में ही होते हैं, और वे भी बदलते रहते हैं। ये सदस्य खुद क्वीयर जस्जेनिव हैं, और उन्हीं समस्याओं से जूझ रहे होते हैं जो उनसे मदद मांगने वालों की हैं। ऐसे में इन समूहों को बनाए रखने और चलाते रहने के लिए उनकी अपनी माली और मानसिक हालत पर अक्सर ज़ोर भी पड़ता है।

सहायक समूहों को लगातार दो प्रकार के कार्यों के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है – एक ओर ऐसा माहौल बनाना कि उनके पास आए लोग अपनी पहचान की अभिव्यक्ति कर सकें, दूसरी ओर, उन्हें इन लोगों की विभिन्न समस्याओं का समाधान भी करना होता है। साथ ही हमें यह भी मानना होगा कि ज़रूरी नहीं है कि यह समूह हरदम सहयोगी और सुरक्षित ही साबित हों। समूह में कई लोगों के विचार, ज़रूरतें या परेशानियां नज़रंदाज़ हो सकती हैं क्योंकि कुछ लोग ज़्यादा बोलने से, ऊंची आवाज़ में बोलने से, अंग्रेज़ी बोलने से या प्रभावी लोगों के संपर्क में होने से औरों पर हावी हो जाते हैं।

यदि कोई समूह बड़े संगठन का हिस्सा है, तो खतरा बना रहता है कि उस संगठन की नीतियां समूह के अपने विचारों पर छा जायेंगी। जैसे कि एक उत्तरदाता ने कहाः

हमें नहीं पता था कि पैसा न होने के कारण संस्था बंद हो सकती है। हमारे विचार में, हो सकता है कि गैर–सरकारी संस्थाएं हमेशा के लिए न चल पाएं, तो सामुदायिक समूहों को मज़बूत बनाना होगा। . . . हमने देखा है कि गैर–सरकारी संस्थाओं में बोर्ड के सदस्य एक गुट हो जाते हैं और समुदाय का हित भूल जाते हैं। इसलिए गैर–सरकारी संस्थाओं पर निर्भर न होकर भी समुदाय के लिए कुछ करना चाहिए।

यहां पर "समुदाय" शब्द प्रमुख है। कई उत्तरदाता इन्हीं समूहों में क्वीयर दोस्त ढूंढ पाए और इनके व समूह के ज़रिये समुदाय में अपनापन हासिल कर पाए।

अपने पार्टनर के साथ रिश्ता टूट जाने के बाद कनिका के मन में आत्महत्या करने की भावना घर कर गई। कहते हैं "अभी भी मन में ऐसा विचार आता है, इसलिए अकेले न रहकर हम समूह के दोस्तों के साथ ही रहते हैं। हम अपने से उम्र में बड़े किसी सदस्य से बात कर लेते हैं। जब भी हमें रोना आता है, हम उन्हें फोन कर लेते हैं और वे हमारी मदद करती हैं।" तुली और भी ज़ोर देकर कहती है, "मेरा खून का रिश्ता तो मां–बाप, बहन, भतीजी से है। मैं उन्हें कभी नहीं छोड़ सकती, मुझे उनकी देखभाल करनी है। लेकिन मेरे दिल से कोई

पूछे, तो मेरा परिवार, मां—बाप के अलावा, मेरे क्वीयर समूह का हर सदस्य है। यही वे परिवार है जिससे मैं खुलकर बात कर सकती हूं, जो मुझे समझता है और जिसके बीच मैं सुखी हूं। यह समूह मेरी जन्मभूमि है”

कीर्ति गांव में रहता है और उसका उस समूह के सदस्यों से संपर्क बहुत कम रहता है, जिसने उसकी मदद ऐसे समय में की जब एक स्थानीय अख़बार ने उसके निजी रिश्ते का खुलासा कर दिया, लेकिन फिर भी उसे यह सोच कर ही सुकून मिलता है कि उसके दोस्त कहीं दूर बैठे हैं पर हैं तो सही। कहता है, ”मुझे लगता था कि मैं ही अकेला लेस्बियन हूं। अब जानता हूं कि मेरे जैसे और भी लोग हैं। दो महानगरों में मेरे दोस्त भी हैं। इन लोगों के बिना मैं न जाने क्या करता।”

सहायक समूह इतनी प्रतिकूल स्थितियों में काम करतें हैं कि हर लाभ पाने वाले व्यक्ति का ऐसा दावा उनके लिए जीवन दान है। मुश्किल यह है कि देश में सहायक क्वीयर या एल बी टी समूह बहुत कम संख्या में हैं, जबकि उनकी आवश्यकता बहुत ज़्यादा है।

हालांकि पिछले दशक की तुलना में आज क्वीयर लोगों के लिए कई वास्तविक या वर्चुअल स्थान खुल गए हैं, यह निहित रूप से विशिष्ट हैं, अतः इन तक सब लोगों की पहुंच नहीं है। इन हालात में ज़रूरी है कि जो समूह प्रमुख रूप से एल बी टी लोगों के साथ काम कर रहे हैं, वे एक—दूसरे के साथ गठबंधन बनाएं, जिससे कि वे संसाधन आपस में बांट सकें, एक साथ ज़ोरदार आवाज़ उठा सकें, अपनी दृश्यता बढ़ा सकें और क्वीयर संगठन व औरतों के साथ काम करने वाले समूहों में ज़्यादा प्रभावशाली भूमिका अदा कर सकें। इनके अतिरिक्त वे सभी समूहों को, जो जेन्डर और सेक्शुॲलिटी पर काम कर रहें है, क्वीयर जस्जेनिव के मुद्दों और चिंताओं पर गौर करना होगा। साथ ही, उनके लिए साधन नियुक्त करने होंगे और उन्हें अपनी सेवाओं के दायरे में लाना होगा।

”समुदाय”
यह प्रमुख शब्द है

जेन्डर बाइनरी
एक
काल्पनिक नियम है

(ज़िन्दगी की वास्तविकता तो कुछ और ही है)

हमने यह अध्ययन इसलिए किया ताकि हम जेन्डर पर बातचीत कर सकें। और हमने खूब बातें कीं, बड़े विस्तार से कीं। बातचीत की शुरुआत में ही हमने अपने उत्तरदाताओं से पूछा कि वे अपनी वर्तमान जेन्डर पहचान क्या मानते हैं और इस प्रश्न के पूछते ही कहानियां एक के बाद एक बतलाई जाने लगीं। बचपन से लेकर युवावस्था की टीस तक; अपने व्यक्तित्व और शरीर की बढ़ती जागरुकता से लेकर चाहत, प्रेम और यौन रिश्तों की तलाश में भटकने तक; बालों की लम्बाई, शर्ट के कॉलर के मोड़ जैसी बारीकियों से लेकर, निजी और सार्वजनिक स्थानों में पेश आने की उलझनों तक; या अपना वर्णन करने के लिए शब्द ढूंढने से, जहां सहमति से जेन्डर की पहचान तराशी जा सके, ऐसे स्थान बनाने की कोशिश तक – हमारी बातचीत इन सब पहलुओं पर हुई और इसके दौरान सब उत्तरदाताओं के साथ अनेक भावनाओं का अहसास बांटा गया – खुशी, ग़म, दमन, हिंसा, क्रोध, चुप्पी, खोज, संघर्ष, सखापन, प्रेम, आशा और निराशा।

इस भाग में हम उस जटिल प्रक्रिया पर ध्यान देंगे, जिससे हमारे उत्तरदाताओं ने अपनी जेन्डर पहचान स्वयं निर्धारित की; समाज द्वारा निर्धारित जेन्डर नियमों से घिरे हुए, हमारे उत्तरदाताओं ने स्वयं निर्धारित जेन्डर पहचान के अनुसार ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी; उन्होंने अनेक संस्थाओं का दबाव कैसे झेला; और अपनी सच्चाई जीने के लिए क्या क्या समझौते किये; इस दौरान उनके अंदर क्या द्वंद्व पैदा हुए, और उन्हें क्या क्या सफलताएं मिलीं।

जेन्डर की रचना समाज में किस तरह होती है; समाज, संस्कृति और विज्ञान तक में, जेन्डर निर्धारण को प्राथमिकता क्यों दी जाती है; इस निर्धारण का जेन्डर पहचान और जेन्डर भूमिकाओं से सम्बन्ध; और इस सन्दर्भ में ट्रांससेक्शुअल और इंटरसेक्स विविधता वाले लोगों का अनुभव – इन सब मुद्दों पर सुज़ॅन केस्लर और वेंडी मकेना[12] ने काम किया है, जिसका विस्तृत प्रयोग – केट बॉर्नस्टाइन से लेकर डीन स्पेड तक – सभी क्वीयर और ट्रांसनारीवादियों ने किया है। इस जेन्डर आरोपण का प्रभाव हमारे अध्ययन में भी दिखाई दिया – एक के बाद एक, उत्तरदाताओं ने अपनी पहचान को निर्धारित करने के संघर्ष के बारे में बताया; किस तरह वे अपना जेन्डर व्यक्त करते हैं और लोग उन्हें कैसे देखते हैं – कैसे लोगों की नज़र उनके जेन्डर चिन्हों[13] पर लगातार नज़र टिकी रहती, और किस तरह उन्हें निजी और सार्वजनिक स्थानों में जेन्डर नियमों का विरोध करना पड़ता।

12 केस्लर, एस., मकेना, डब्ल्यू. (1978) जेन्डर : एन एथनो–मेथडॉलॉजिकल अप्रोच। शिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
13 जेन्डर चिन्ह, जैसे कि पहनावा, बालों की लंबाई, चाल ढाल, आवाज़ का मोटा/पतला होना आदि।

अपनी पहचान को नाम देना

हमारे इंटरव्यू गाइड के शुरुआती भाग में उत्तरदाता की वर्तमान जेन्डर पहचान के बारे में सवाल रखा गया था। यानि कि, उत्तरदाता अपने आप को क्या जेन्डर पहचान देते हैं और समाज में इस पहचान को लेकर कैसे जीते हैं। हमे विभिन्न जवाब मिले : हमने 'आदमी' श्रेणी में उन लोगों को डाला, जो अपने आप को आदमी या पुरुष से पहचानते थे; हमने 'औरत' श्रेणी में उन सब को डाला जो अपने आप को औरत या स्त्री से पहचानते थे; और 'अन्य' श्रेणी में उन सब को जिन्होंने इन दो श्रेणियों से अलग जवाब दिए। यह सारिणी उनके जवाब दर्शाती है।

आदमी (10)

आदमी

लड़का

पुरुष

आदमी (पर औरों को समझाने के लिए

एफटीएम प्रयोग करते है)

औरत (22)

औरत

बाईसेक्शुअल औरत

औरत पर औरों से अलग

लड़की

स्त्री

अन्य (18)

अस्पष्ट

स्त्री से पुरुष की ओर जाते हुए

अस्पष्ट और बदलते हुए

जेन्डर क्वीयर

एन्ड्रोजिनस औरत

एफ टी एम

कुछ कहते नहीं

समाज ने मुझे औरत होने का अहसास दिलाया पर मैंने इसे नकारा और ललकारा

ट्रांसजेन्डर और लेस्बियन के बीच

अन्य

एन्ड्रोजिनस

50 प्रतिशत पुरुष और 50 प्रतिशत स्त्री

आदमी, पर समाज की नज़र में औरत

ट्रांसजेन्डर

शायद औरत, पर पक्का पता नहीं

बाहर से औरत, पर पूरी तरह औरत नहीं

औरत पर अस्थिर जेन्डर

अतः अध्ययन का पहला निष्कर्ष यह रहा कि लोगों को जन्म से जो जेन्डर दिया जाता है, और वे खुद को किस रूप से देखते हैं, इसमें बहुत अंतर है। महत्वपूर्ण है कि 50 में से 28 उत्तरदाताओं ने जन्म से दिए गए जेन्डर से हटकर खुद को अलग जेन्डर पहचान दी। इससे भी महत्वपूर्ण यह है, कि 50 में से 18 उत्तरदाताओं

ने अपनी पहचान जेन्डर बाइनरी के बाहर बतायी, यानी नियामक जेन्डर की परिभाषा उनकी जेन्डर पहचान का वर्णन करने में अपर्याप्त थी।

> उत्तरदाताओं के जवाब बहुत विभिन्न रहे – कुछ ने एक शब्द में ही कह डाला, कुछ ने वाक्य में और कुछ को लम्बा कहने की आवश्यकता हुई, इससे समझ सकते हैं, कि नियामक भाषा का प्रयोग करते हुए खुद की गैर–नियामक पहचान का वर्णन करना कितना कठिन हो सकता है। मोनू कहते हैं "हमारी वर्तमान पहचान बताने के लिए हमें अपनी कहानी शुरू से बतानी होगी। हमें बचपन के दिनों से कहानी शुरू करनी होगी।" निधि जैसे उत्तरदाताओं के लिए उनके प्रेमी का नज़रिया उनकी जेन्डर पहचान को प्रभावित करता है। "हमारी प्रेमिका हमें आदमी जेन्डर का मानती हैं, जिंसीयत के मामले में हम खुद को लेस्बियन मानते हैं।" मंजुला अपने जेन्डर पहचान के बारे में कहते हैं "अस्पष्ट है – बदलती रहती है, कभी औरत, कभी आदमी, कभी बच्चों जैसा होना ही बेहतर है। जेन्डर के मामले ने हमें चकरा दिया है।" अरुण कहते हैं "इंटरजेन्डर, जेन्डर क्वीयर। सबसे अच्छा लगता है जब लोग हमें हमारे नाम से पुकारते हैं।"

कुछ लोगों ने अपनी वर्तमान जेन्डर पहचान कम उम्र में ही तय कर ली, कुछ लोग घूम फिर के कोई नतीजे पर पहुंचे और कुछ अपने जेन्डर को स्थायी रूप से नहीं देखना चाहते थे। अन्य लोगों व समूहों से मिलकर नए नामों/परिभाषाओं की जानकारी मिलने के बाद खुद को नए नाम/जेन्डर पहचान देना संभव हो पाता है।

एक ही जेन्डर पहचान होते हुए भी, लोग अलग–अलग तरीकों से उसे व्यक्त करते हैं। 'औरत' 'आदमी' की मौजूदा जेन्डर पहचान कई उत्तरदाताओं के लिए बहुत ही अलग मतलब रखती थी।

इंटरव्यू के दौरान कुछ उत्तरदाता अपनी जेन्डर पहचान व्यक्त करने के लिए कभी एक शब्द का प्रयोग करते, कभी किसी दूसरे का – इससे हमे अहसास हुआ कि वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि ये शब्द आम प्रयोग में नहीं हैं।

नियामक जेंडर की अपर्याप्त भाषा

> यह सब रेखांकित करता है कि लोग किस प्रकार अपने जेन्डर का निर्माण करते हैं – कुछ लोग समाज के जेन्डर नियमों को पलट देते हैं, कुछ उन्हें थोड़ा–बहुत बदलते हैं, और कुछ उनका सीधे से पालन करते हैं।

शरीर पर लिखा हुआ जेन्डर

शरीर जेन्डर का एक अहम चिन्ह माना जाता है। अतः आम धारणा है कि यदि कोई अपना जेन्डर बदलना चाहते हैं, तो वे अपने शरीर को भी बदलना चाहेंगे। इस कारण उत्तरदाताओं से शरीर के बारे में विस्तार से बात करना अति आवश्यक था – वे अपने शरीर को किस नज़र से देखते हैं, वे इससे कितने संतुष्ट हैं, उनकी नज़र में क्या उनके जेन्डर और शरीर में मेल है।

शरीर की बाहरी दिखावट के अनुसार हमारे सभी उत्तरदाताओं को जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित किया गया था। खुद को 'औरत' की पहचान देने वाले अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा कि उनका शरीर उनके जेन्डर से मेल रखता है। पर ये ज़रूरी नहीं कि जो लोग सिसजेन्डर हैं, वे अपने "स्त्री" शरीर से, या जेन्डर के सामाजिक नियमों से बिलकुल संतुष्ट हैं और ना ही ये किसी विशेष जेन्डर अभिव्यक्ति का संकेत था।

झरना को अपने "औरत शरीर" से चिढ़ है। "यह सब गोलाई क्यों है – मेरा बस चलता, तो मैं ऐसा शरीर अपने लिए नहीं चुनती . . . संभव होता तो मैं अपने लिए मेहनत–कश शरीर चुनती।" दूसरी ओर हेमलता कहती है, "मेरा शरीर मेरे जेन्डर से मिलता है। मैंने शरीर संबंधी मिथ्याओं और प्रतिबंधों का विरोध किया है।" हेमलता का कथन उन लोगों की याद दिलाता है, जिन्होंने नारीवादी सोच अपनाई और इस सफ़र में अपने शरीर को फिर से गर्व से देख पाए।

> 'अन्य' श्रेणी में रखे गए कई उत्तरदाताओं ने भी अपने शरीर के बारे में बदलते नज़रिए की बात कही। अपने शरीर से संतुष्ट होना सब के लिए संभव नहीं था पर कुछ चीज़ों से मदद मिली। कुछ लोगों ने लंबे अरसे के दौरान अपने शरीर और जेन्डर के बीच की जटिल आपसी संबंध को लेकर उलझनों के बारे में बताया।

खुद को 'एन्ड्रोजिनस' मानने वाले जूही कहते हैं, "जब हमने एक प्रेमिका से रिश्ता बनाया, और उसके साथ जाकर अपने लिए एक आरामदायक पसंद की ब्रा खरीदी, तो हमें बहुत खुशी हुई . . . उसके बाद हमें अपना शरीर अटपटा नहीं लगता, न ही ऐसी ब्रा को पसंद करने में झिझक होती – जो आरामदायक हो, और हमारे विचार में कामुक। कुल मिलाकर हम कहेंगे, कि रिश्तों में रहने से ही हमें अपने शरीर से संतुष्टि मिली।"

अरुण जो अपने आप को 'जेन्डर क्वीयर' की पहचान देते हैं, मानते हैं कि शरीर के माध्यम से भी सामाजिक नियमों पर सवाल उठाए जा सकते हैं। कहते हैं:

> *हां, हम अपने शरीर से संतुष्ट हैं, वह हमारे जेन्डर से मेल रखता है। पहले हमारी सोच अलग थी। हम जानते थे कि हमारा आकर्षण इस तरह का है, तो पहले लगा कि अगर हमें एक औरत के साथ रिश्ता बनाना है तो हमें आदमी बनना होगा। पर फिर हमने सोचा, हम समाज के नियमों को क्यों स्वीकार कर रहे हैं, कि हमें औरत या आदमी ही होना है। हमारा सेक्स जो भी हो, हम जैसा चाहें वैसे जीने की आज़ादी होनी चाहिए . . . इसके बाद हम अपने में संतुष्ट हो गये।*

फिर भी, कुछ लोगों के लिए अपने शरीर के साथ एक सहज रिश्ता बनाना संभव नहीं हो पाता, क्योंकि उसपर लोगों की नज़र टिकी रहती है। संध्या का शरीर औरों से अलग है, उनमें इंटरसेक्स विविधता है। उनके विचार में द्वंद्व पैदा होता है, क्योंकि समाज तय करता है कि औरत के शरीर को कैसा होना चाहिए, कैसा दिखना चाहिए। इस कारण, चाहते हुए भी वे खुद को 'औरत' की पहचान नहीं दे पातेः

> *किसी चीज़ की कमी महसूस होती रहती है . . . कोई चारा नहीं, जैसा है उसे स्वीकारना होगा, पसंद हो या नहीं . . . हमारे हाथ बहुत सख्त दिखते हैं, नसें उभरी हैं, हम उन्हें दिखाना नहीं चाहते इसलिए हमेशा पूरे बाजू की कमीज़ पहनते हैं। हम चाहते हैं कि औरतों जैसा शरीर हो और उनके जैसे कपड़े पहनें, पर कर नहीं पाते, इसलिए नाखुश हैं। अपनी मर्ज़ी के अनुसार जी नहीं सकते, हमेशा औरों के बारे में सोचना पड़ता है। फिर भी हम अपना आदर करने की कोशिश करते हैं, अपने आप को स्वीकारने की कोशिश करते हैं . . . अब हमने अपने शरीर की चिंता छोड़ दी है।*

कई उत्तरदाताओं ने बताया वे किस तरह अपने शरीर और जेन्डर से समझौता कर पाए, साथ ही इस संदर्भ में उन्होंने अटपटापन भी व्यक्त किया। ऐसी भावना किसी एक जेन्डर पहचान से संबंधित नहीं थी। ना ही इसका मतलब था कि ऐसे सभी उत्तरदाता अपने शरीर को किसी चिकित्सा द्वारा बदलना चाहते थे, या शरीर में परिवर्तन लाना चाहते थे।

कीर्ति अपने आप को 'आदमी' मानता है और कहता है कि वह अपने शरीर से खुश है, परन्तु आगे कहता है, "मुझे अपने स्तन नहीं चाहिए। पर मैं उन्हें काट कर फेंक तो नहीं सकता। मुझे अपने स्तनों से तब से चिढ़ है, जबसे वे बढ़ने लगे। मुझे माहवारी से भी नफरत है। मैंने माहवारी रोकने के लिए कभी कोई दवाई नहीं ली . . . पता नहीं कितने और साल चलेगी।"

जो भी उनकी जेन्डर पहचान रही हो, कई उत्तरदाता स्तन और माहवारी को लेकर नाखुश थे।

ॲलेक्स अपनी पहचान 'ट्रांसजेन्डर और लेस्बियन के बीच' मानते हैं। कहते हैं, "हम तकरीबन भूल जाते हैं कि हमारा शरीर औरत का है। जब माहवारी आती है तो याद दिलाती है कि हमारा शरीर औरत का शरीर है। फालतू का झंझट है।" सारा खुद को 'औरत' मानती है और कहती है, "मेरी माहवारी नियमित रूप से आती है। मुझे लगता है कि अगर उसे माहवारी ना हो तो कोई भी औरत खुश होगी। परन्तु माहवारी होती है, उसे स्वीकारना पड़ता है।" भार्गवी अपने जेन्डर को 'औरत से आदमी की ओर बदलते हुए' मानते हैं। कहते हैं, "हम सर्जरी द्वारा अपने स्तन को निकालना चाहते हैं। हमने इसके बारे में टी वी पर सुना है, पर दुष्प्रभावों के डर से सर्जरी के लिए नहीं गये। हमें इसके दुष्प्रभावों से डर लगता है। हमें कमा करके खुद की देखभाल करनी है। अगर हमारी ताकत कम हो गयी तो हम काम कैसे करेंगे?"

> जो अपने आप को 'आदमी' मानते थे या फिर 'अन्य' की श्रेणी में रखे गए थे, वे उत्तरदाता अपने शरीर से सबसे ज़्यादा परेशान थे। इन लोगों को इतना गहरा अहसास था कि उनका शरीर उनके जेन्डर से अलग है, कि यह भावना उनके जीवन के हर पहलू में बस गयी थी। उन्हें इस हकीकत से हर जगह, हर पल जूझना पड़ता। एक ओर वे अपने शरीर के मौजूदा आकार से दुखी थे, दूसरी ओर जो उनके शरीर में नहीं था, उसके लिए तरसते थे।
>
> जेन्डर का सबसे प्रकट चिन्ह है चेहरे के बाल। कई उत्तरदाता अपने चेहरे पर (और शरीर पर) ज्यादा घने बाल चाहते थे। कुछ ने बारंबार हजामत करके, या कोई दवा खाके, बाल उगाने की

कोशिश भी करी, पर असफल रहे। कई उत्तरदाताओं की स्पष्ट इच्छा थी कि कोई ऐसा हॉरमोन मिल जाए जिससे वे चेहरे और शरीर के बाल उगा पायें।

कमल अपने आप को 'आदमी' की पहचान देता है। कहता है, "मेरे बाल नहीं है। मैं चेहरे पर बाल चाहता हूं। मैंने दवा की दुकान पर जाकर दाढ़ी और मूछ उगाने की दवाई मांगी। उन्होंने कहा मैं पागल हूं, मुझे काउंसिलर की ज़रुरत है, दवा की नहीं। मैं किसी भी कीमत पर दवाई खरीदने को तैयार था।" सुमित अपनी पहचान 'ट्रांसजेन्डर' बताते हैं। कहते हैं, "हमारे शरीर पर बाल बिलकुल नहीं है, होते तो अच्छा लगता। बगल में भी बाल नहीं हैं। कई लड़कियों के भी काफ़ी बाल होते हैं – उनके भी जो खुद को लड़की के रूप में पहचानती हैं। एक किरायेदार की लड़की है, उसकी ठोड़ी पर काफी घने बाल हैं, पर हमारे नहीं हैं . . . हमने हजामत करके या और तरीके से बाल उगाने की कोशिश नहीं की क्योंकि जानते हैं कोई असर नहीं होगा।"

छाती एक और ऐसा चिन्ह है, जिससे कि व्यक्ति का जेन्डर ज़ाहिर होता है। कई उत्तरदाताओं ने कहा कि जब कोई व्यक्ति उनके जेन्डर को समझना चाहता है तो उनकी नज़र छाती पर टिकती है। हालांकि विभिन्न जेन्डर पहचान के उत्तरदाता अपने स्तनों से असंतुष्ट थे – कुछ स्तन चाहते ही नहीं थे, कुछ छोटे स्तन चाहते थे, कुछ को उनसे बेहद तकलीफ़ थी – पर जो उत्तरदाता अपने आप को 'आदमी' या 'एफ टी एम' मानते थे, वे इनको छिपाने के हर प्रयास करते।

स्तन को छिपाने के प्रयास में कुछ उत्तरदाता तंग स्पोर्ट्स ब्रा और टी–शर्ट के ऊपर ढीली शर्ट पहन लेते, कुछ गर्मियों में भी चार कपड़े एक के ऊपर एक चढ़ा लेते, कुछ लचीली पट्टी से स्तन को कसकर बांध लेते और उसके ऊपर कई परत में कपड़े पहन लेते, कुछ बाकी कपड़ों के ऊपर बड़ी जेब वाली जॅकेट या शर्ट पहन लेते, कुछ ऐसा ही कोई और तरीका अपना लेते। कुछ उत्तरदाताओं ने स्तन बांधने का तरीका खुद ढूंढ़ निकाला, कुछ ने *बॉएज़ डोंट क्राय* फिल्म देखने के बाद ऐसा करने की कोशिश करी। कुछ एक उत्तरदाता को यह भी पता था कि इन्टरनेट पर स्तन बांधने के लिए बाइन्डर्स उपलब्ध है, जो कि भारत में अभी नहीं मिलते। इस प्रकार से कस कर बांधना आसान नहीं है, ये ना केवल छाती को दबा देते है, पर खून के बहाव को भी कम कर देते हैं। इससे किसी को काले निशान पड़ जाते, किसी को घमौरियां निकल आतीं, बहुत दर्द होता, किसी को सांस लेने में या भागने में तकलीफ होती और किसी एक को खाने तक में परेशानी होती।

स्तन को लेकर परेशानी केवल इस कारण नहीं होती कि अगला हमें किस नज़र से देखेगा, परन्तु इससे भी कि हम अपने आप को किस नज़र से देखते हैं। कुछ उत्तरदाताओं ने कहा वे नहाते समय अपने आप को कभी नहीं देखते, कुछ घर में आईना ही नहीं रखते। इन उत्तरदाताओं के लिए स्तन शरीर का हिस्सा तो थे, पर उनके अस्तित्व का भाग नहीं थे और उनकी भाषा इस नज़दीकी और दूरी को स्पष्ट व्यक्त करती है। एक उत्तरदाता ने इस बात को समझाते हुए कहा, ''हम स्तन को 'बच्चा' कहते हैं, क्योंकि वह छाती से चिपके रहते हैं! मैं इस शब्द का प्रयोग नहीं करता पर यह समुदाय में प्रचलित है – 'बच्चे उछल रहे हैं, बाहर आ रहे हैं,' इत्यादि।" अतः यह जानकर आश्चर्य नहीं होता कि कई उत्तरदाता टॉप सर्जरी करवाने को प्राथमिकता देते थे।

परन्तु हमारे उत्तरदाता शरीर में और भी बदलाव लाना चाहते थे। जैसे कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं, अधिकांश लोग माहवारी से परेशान थे। इससे सबसे ज़्यादा कष्ट उनको होता है जो खुद को 'आदमी' या 'एफ टी एम' की पहचान देते हैं। वे खुद को लड़के के रूप में देखने के आदी थे और जब माहवारी शुरू हुई, तो उन्हें गहरा धक्का लगा। जैसे कि कार्तिक कहता है, "मैं इसे नहीं चाहता, यह क्यों होती है? मुझे माहवारी

को लेकर उतना ही गुस्सा आया, धक्का लगा, जितना मुझे तब लगा जब मुझे आधी साड़ी पहनने को कहा गया।" ऐसे कई उत्तरदाता माहवारी बंद करना चाहते थे और कई अपना गर्भाशय भी निकलवाना चाहते थे।

इन सब शारीरिक बदलावों के अलावा, कुछ उत्तरदाता लिंग भी चाहते थे। जैसे कि जय कहता है, "मैं शरीर में यह सब परिवर्तन चाहता हूं – स्तन और गर्भाशय को निकालकर वे सब चीज़ें चाहता हूं जो किसी आदमी में होती हैं, चेहरे और शरीर पर बाल, और लिंग भी।" परन्तु, कई उत्तरदाता जानते थे कि इस प्रकार की सर्जरी (*रीकन्स्ट्रक्टिव बॉटम सर्जरी*) बहुत महंगी होने के साथ साथ हमेशा भरोसेमंद भी नहीं होती है। मुरली, खुद को 'एफ टी एम' की पहचान देते हैं और अपनी इच्छा से समझौता करते हुए कहते हैं ''हम सम्पूर्ण एस आर एस (*सेक्स रीअसाइन्मन्ट सर्जरी*) करवाना चाहते हैं – पता चला बहुत महंगी है। इसलिए सबसे पहले हम चेहरे पर बाल उगवाएंगे और स्तन और गर्भाशय को निकलवाएंगे।"

इस तरह, अपने शरीर के आकार को बदलकर अपने जेन्डर अनुसार बनाना, कुछ उत्तरदाताओं के लिए ज़रुरी था। साथ ही उन्हें डर था कि सर्जरी से उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा और कमज़ोरी के कारण कमाई पर बुरा असर पड़ेगा। कुछ उत्तरदाताओं को ऐसी सर्जरी के बारे में जानकारी काउंसिलर द्वारा मिली, कुछ को डॉक्टरों से और कुछ को टी वी या मित्रों से। आम तौर पर, चिकित्सीय हस्तक्षेप और उनके संभावित प्रभावों को लेकर विश्वसनीय और व्यापक जानकारी बहुत कम है। आज की तारीख में कुछ ही लोग इन तकनीकों का प्रयोग कर पाते हैं, परन्तु ऐसा करने से इन गिने–चुने लोगों का आत्मविश्वास बहुत बढ़ जाता है।

खुद को 'लड़के' की पहचान देने वाला राहुल एक मात्र उत्तरदाता था, जो हमसे मिलने के समय सर्जरी की तैयारी में था और हॉरमोन्स ले रहा था। वह अपने में बदलाव का अहसास इस प्रकार व्यक्त करता हैः

> *पहले मुझे लगता कि शब्द तो मेरे हैं पर आवाज़ किसी और की है। मुझे बात करने में झिझक होती। अब मैं आत्मविश्वास से बात कर सकता हूं। आवाज़ भी मेरी है और शब्द भी मेरे . . . डॉक्टर ने कहा कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं पर अभी तक कुछ नहीं हुआ। हो सकता है हारमोन्स मुझे जंच रहे है, या फिर क्योंकि मैं बेहद खुश हूं . . . इच्छा अनुसार दिखाई देने के लिए काफी काम करना पड़ेगा। मैंने सुना है कि हारमोन्स लेने के बाद भी ट्रांसपर्सन्स को संतुष्टि नहीं मिलती, उनका वज़न बढ़ जाता है, वगैरह। इसे सुनकर मैंने अपना निश्चय और भी मजबूत कर लिया, कि मैं चिंता में न पड़कर, जो चाहता हूं उसे हासिल करने के लिए मेहनत करूंगा। मैं नाचता हूं, वर्ज़िश करता हूं और जहां संभव हो चल के जाता हूं। होने वाले फ़ायदे पर नज़र टिकानी चाहिए ना की दुष्प्रभावों पर।*

शरीर, किसी भी व्यक्ति की जेन्डर पहचान का अटूट हिस्सा है। परन्तु ऐसा नहीं है कि जेन्डर पहचान के अनुसार शरीर किसी एक प्रकार/आकार का होना चाहिए। फिर भी यह समझना आवश्यक है कि, जो लोग अपने शरीर को चिकित्सीय हस्तक्षेप द्वारा बदलना चाहते हैं, उनके सुख के लिए यह अनिवार्य है, केवल एक विकल्प नहीं।

इंटरसेक्स विविधताएं

हमारे दो उत्तरदाताओं में इंटरसेक्स विविधताएं हैं, जिनका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। दोनों का जन्म ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों में हुआ था। हांलाकि उनके मां–बाप, और एक के पड़ोसी भी, जानते थे कि उनके बच्चे कुछ अलग हैं, उन्होंने बच्चों से इस बारे में कभी बात नहीं करी। दोनों को जन्म पर स्त्री जेन्डर निर्धारित किया गया, और दोनों की परवरिष भी लड़कियों जैसे हुई। एक को कम उम्र में ही अहसास हो गया कि उसका षरीर अलग है, और वे उसे अपनी मां से भी छिपाने लगे। दूसरे को युवावस्था में अहसास हुआ कि उसका षरीर कुछ अलग है क्योंकि, बाकी बहनों की तरह, उसे माहवारी नहीं हुई।

संध्या ने एक क्वीयर समूह के साथ संपर्क बनाया, क्योंकि वे अपने आप को लेस्बियन मानते थे, और धीरे–धीरे समूह में अपने इंटरसेक्स विविधता की बात रखने का हौसला जुटा पाए। हांलाकि वे अपनी जिंसीयत को स्पष्टता से पहचानते हैं, उन्हें लगता है कि और लोग इसे आसानी से नहीं समझ सकते। लोगों से रोज़मर्रा की बातचीत करते समय वे डरे रहते हैं। ”क्योंकि हमने अपनी असलियत गुप्त रखी है, राज़ कभी भी खुल सकता है और सब को पता लग जाएगा।”

दिवाकर औपचारिक रूप से अपना जेन्डर आदमी के रूप में दाखिल करवाना चाहता था, ताकि वह नौकरी ढूंढ पाए। इस दौरान उसका संपर्क एक क्वीयर समूह से बना। 20 की उम्र के आद उसका शरीर अचानक बदलने लगा, मर्दानगी के उपलक्षण प्रकट होने लगे – चेहरे पर बाल उग आये, आवाज़ भारी हो गई। दिवाकर को इस बदलाव से अत्यंत परेशानी हुई, अपने अन्दर भी और आस पास के लोगों से भी। अंत में वह एक अस्पताल पहुंचा, जहां से वह एक दस्तावेज़ बनवाना चाहता था, कि उसका जेन्डर आदमी है। अस्पताल में अत्यधिक जांच के साथ कई दिनों तक, डॉक्टरों, कर्मचारियों, छात्रों के हाथों उसकी दुर्दशा होती रही। उनकी नज़र में वह अनोखा था। कई संस्थाओं से मिलने के बाद उसका संपर्क एक स्वयं सेवी संस्था से बना जो जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दों पर काम कर रही थी। आज दिवाकर कहता है वह अपने षरीर और 'आदमी' जेन्डर पहचान से खुष है।

विश्व–भर में इंटरसेक्स मुद्दों पर कार्यकर्ताओं का काम यही दर्शाता है, जो लेबिया ने अपने काम में पाया और जो हमारे इंटरव्यूज़ भी दिखाते हैं। हमारा विश्वास है कि इंटरसेक्स विविधताएं होने पर भी लोग अपने शरीर के साथ एक सुखद रिश्ता बना सकते हैं। समस्या तब होती है, जब इन लोगों के शरीर को लगातार परखा जाता है, और उन पर जेन्डर नियम थोपे जाते हैं। इंटरसेक्स कोई जेन्डर पहचान नहीं है, जिसे लोग अपनी मर्ज़ी से अपनाते हैं, हांलाकि कभी–कभी कुछ लोग इसे एक पहचान के रूप में भी लेते हैं। इंटरसेक्स ना तो एक विशेष जेन्डर पहचान है, ना ही किसी की जिंसीयत का वर्णन है।

बाकी लोगों की तरह, जिन लोगों में इंटरसेक्स विविधता होती है, उनकी परवरिश भी किसी एक जेन्डर अनुसार होती है। सब लोगों की तरह, इनमें से कुछ लोग अपने निर्धारित जेन्डर से संतुष्ट हैं और कुछ नहीं। अतः इंटरसेक्स विविधता वाले कुछ लोग अपने आप को ट्रांस* मान सकते है, पर ऐसा होना ज़रूरी नहीं। अपने शरीर को स्वयं चुने जेन्डर के अनुरूप बनाने के लिए, ऐसे कुछ लोग चिकित्सीय हस्तक्षेप द्वारा अपने शरीर को बदलने के इच्छुक होते हैं, और यह सुविधा उन्हें उपलब्ध होनी चाहिए। आज, सबसे बड़ी आवश्यकता यह है, कि इन लोगों के साथ बातचीत हो और उन्हें ऐसी स्पष्ट जानकारी उपलब्ध हो, जो इंटरसेक्स विविधता को रोग की नज़र से ना देखे।

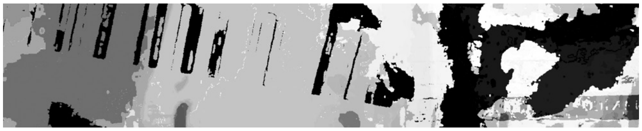

हम कैसे दिखते हैं और आप किसे देखते हैं

खुद की जेन्डर पहचान को नाम देने और शरीर से रिश्ता बनाने के साथ जुड़ा है अपनी जेन्डर पहचान के अनुसार दूसरों के सामने "सही" ढंग से पेश आना। साथ ही आवश्यक है कि अपना जेन्डर इस रूप में पेश आये, ताकि देखने वाला उसे सही रूप से पहचान सके। यह सार्वजनिक स्थानों में और भी ज़रूरी है। दिखावट, व्यवहार, रवैया – इन सब द्वारा जेन्डर व्यक्त होता है और अगला उसे पहचानता है, और ये सब सामाजिक नियमों के अधीन है।

हमारे अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा, कि भले ही उनकी जेन्डर पहचान कुछ भी हो, उनकी जेन्डर अभिव्यक्ति अक्सर सामाजिक नियमों के विरुद्ध थी। मनचाही जेन्डर अभिव्यक्ति कठिन हो सकती है, हालांकि वर्ग और निवास–स्थान पर आधारित खास सुविधाएं जिन लोगों को मिलती हैं उनके लिए यह कुछ आसान हो जाता है। अपने वर्ग अनुसार लोग अलग स्थानों में जाते हैं और उसपर निर्भर करता है कि उचित व्यवहार क्या माना जाता है। वर्ग, जाति, धर्म–आधारित विशेषाधिकार रखने वाले जस्जेनिव कई बार ऐसे तौर तरीके अपना पाते हैं, जो एक "औरत" के लिए अनुचित माना जाता है: कभी–कभी, एक हद तक, ऐसी गैर–नियामक चाल–ढाल को बढ़ावा भी दिया जाता है।

"लेकिन अब हम कुछ भी पहन सकते हैं"

इंटरव्यू गाइड में कई प्रश्न दिखावट के बारे में थे – शारीरिक दिखावट, पहनावा, बालों की लम्बाई इत्यादि। वे किन स्थितियों में इनको लेकर मन मर्ज़ी कर पाए – वे मनपसंद कपड़े कब और कहां पहन पाए, मनचाहे बाल कब और कहां रख पाए?

हालांकि अधिकांश उत्तरदाता यह स्पष्ट रूप से जानते थे कि वे कैसा दिखना चाहते हैं, लेकिन अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक नियम इसके आड़े आ जाते। कइयों को पॅन्ट–शर्ट या निक्कर–शर्ट पहनने के लिए संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि ऐसा पहनावा जेन्डर नियमों के खिलाफ़ था। सभी का ऐसा अनुभव रहा, चाहे उनकी जेन्डर पहचान कुछ भी हो। कुछ लोग युवावस्था तक मनचाहे कपड़े पहन पाए, पर कुछ को बचपन से ही

ऐसा करने के लिए लड़ना पड़ा।

> मनचाहे कपड़े पहनने पर रोक केवल उनके लिए नहीं थी, जो खुद को 'औरत' के रूप में नहीं देखते थे। लक्ष्मी एक छोटे शहर में पली–बढ़ी। वहां उसे केवल स्कर्ट या साड़ी जैसे कपड़े पहनने की इजाज़त थी। कुछ साल पहले वह अपने पार्टनर के साथ एक बड़े शहर पहुंच गयी, और स्थिति अनुकूल बन गयी। "अब मुझे जीन्स पहनने की छूट है। पहले मुझे वही पहनना पड़ता जो मां खरीद के देती, पर अब मैं कुछ भी पहन सकती हूं।"

रोमा भी मनचाहे कपड़े नहीं पहन पाती थी, हालांकि उसकी स्थिति बिलकुल अलग है। वह खुद को 'औरत' की पहचान तो देती थी, पर औरतों के कपड़े नहीं पसंद करती थी। "बचपन में मैं तकरीबन हर समय पॅन्ट–शर्ट या निक्कर और टी–शर्ट पहनती। तब मैं आज से दुबली थी, और मां–बाप मुझे यह कपड़े दिलवाते। युवावस्था के बाद मैं मोटी हो गयी, और पता लगा मुझे पॉलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम है। . . . पिछले साल तक मां और आंटी मुझे जीन्स नहीं पहनने देते थे, कहते थे कि मैं बहुत मोटी हूं, गेंडे जैसी दिखती हूं, हर तरफ़ से मोटापा दिखता है।"

कुछ लोगों के लिए अपना जेन्डर अभिव्यक्त करने की आज़ादी, आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ गयी। सौम्या का ही उदाहरण लीजिये, जो एक धार्मिक जैन परिवार से थी और शहर में बड़ी हुई। बचपन में वह अपनी फ्रॉक की जगह भाई के कपड़े पहनती और बाद में भी ऐसे ही कपड़े पसंद करती। परिवार के दबाव में आकर कॉलेज में वह सलवार–कमीज़ पहनने लगी, पर उसे यह पसंद नहीं था। वह मनपसंद पॅन्ट और जीन्स तभी पहन पायी, जब कॉलेज के बाद वह कमाने लग गयी। परिवार से आर्थिक रूप से अलग होने के बाद ही वह अपनी पसंद जाहिर कर पाई।

कमल खुद को 'आदमी' की पहचान देता है, पर उसकी मनचाही जेन्डर अभिव्यक्ति अजीब हालात में संभव हुई। बचपन से ही वह लड़कों जैसे पॅन्ट–शर्ट पहनना चाहता था, जबकि उसके मां–बाप चाहते थे की वह लड़कियों जैसे कपड़े पहने और व्यवहार करे। मां उसे चूड़ियां पहनने को देती और वह उन्हें तोड़ देता। अंत में उसकी विकलांगता उसके मनचाहे पॅन्ट–शर्ट पहनने का कारण बन गयी क्योंकि यह कपड़े ज़्यादा सुविधाजनक थे। फिर भी उसे लगातार संघर्ष करना पड़ा।

> कई लोगों ने कहा कि वे मनचाहे तरीके के बाल नहीं रख सकते थे। संतोष खुद को 'आदमी' की पहचान देता है और याद करता है, "जब मैं घर पर रहता था, मुझे परिवार के कहे अनुसार चलना पड़ता था। पहनावे, बालों की लंबाई के मामले में परिवार की बात माननी पड़ती थी।" 10वीं कक्षा के बाद, जब उसे नौकरी मिली, उसने अपने बाल कंधे तक काट दिए, और घर छोड़ने के बाद छोटे बाल रखने लगा, जैसे उसके आज भी हैं। अक्सर घर छोड़ने के बाद लोग सबसे पहले अपने बाल कटवाते हैं। कुछ लोगों को संकट की स्थिति में भी, जैसे घर से भागते समय, बाल कटवाना ज़रूरी लगता है।

हर समाज तय करता है कि निर्धारित जेन्डर के व्यक्ति, अपनी उम्र, शारीरिक बनावट इत्यादि के अनुसार अपना जेन्डर किस प्रकार से अभिव्यक्त कर सकते हैं। साथ ही सामाजिक नियम यह भी तय करते हैं की इनका उल्लंघन कौन, किस स्थितियों में और किस हद तक, कर सकता है। सामने वाला आपके जेन्डर को किस नज़र से समझेगा, इसमें कोई एकरूपता नहीं है, और यह हर व्यक्ति के लिए अलग अलग रूप से काम

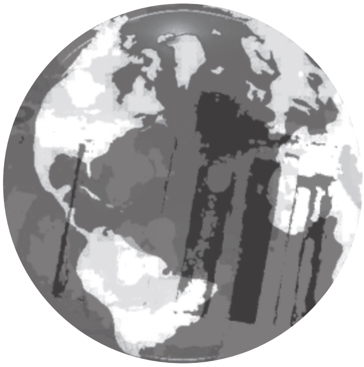

करता है। इस कारण किसी की जेन्डर अभिव्यक्ति को इस नज़रिए से भी देखना होगा, कि सामने वाले उसे कैसे समझते हैं, विशेषकर सार्वजनिक स्थानों में।

आम स्थानों में अपने जेन्डर को इस तरह अभिव्यक्त करना, ताकि सामने वाला उसे उसी रूप में पहचाने जैसा हम चाहते हैं, एक रोज़ का मुद्दा बन जाता है। हमारे अध्ययन में जो उत्तरदाता अपने आप को 'आदमी' मानते थे, उन्हें पहनावे और बाहरी दिखावट के ज़रिए अपनी मर्दानगी साबित करना ज़्यादा ज़रूरी लगता था। इसलिए ऐसे कई लोगों को बहुत खुशी होती जब लोग उन्हें लड़का या आदमी समझ बैठते। राहुल खुद को 'लड़का' मानता है और याद करता है, "एक पार्टी में मैं खूब नाच रहा था और कुछ गे आदमी मेरे साथ नाचने लगे। मैंने उन्हें बताया की मैं गे नहीं हूं, मैं एफ टी एम ट्रांसव्यक्ति हूं, पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ! मुझे इतनी खुशी हुई!"

लोग अपनी दिखावट पर बहुत मेहनत करते हैं, ताकि सामने वाला उन्हें उसी रूप में पहचाने जैसा वे चाहते हैं। लेकिन फिर भी पर्दाफाश होने का डर बना रहता है। कुछ उत्तरदाताओं को सार्वजनिक स्थानों में पुलिस या अन्य व्यक्तियों द्वारा हिंसा और यौन अत्याचार सहना पड़ा क्योंकि उन्हें उनकी जेन्डर पहचान पर शक हो गया। सॅम खुद को 'आदमी' की पहचान देता है। बस में एक हादसे को याद करते हुए वह कहता है:

> *मैं महिलाओं की सीट में नहीं बैठता था। . . . कुछ युवा लड़के बस में चढ़े और मुझे छेड़ने लगे 'लड़का है या लड़की? नीचे क्या है?' इत्यादि, और मां की गाली देने लगे। गुस्से में आकर मैं उनपर चिल्लाने लगा। मेरी आवाज़ सुनकर उन्हें समझ आया कि मैं लड़की हूं। पर अब यह साबित करने को, वे मेरे कपडे उतारना चाहते थे। बस में किसी ने मेरी मदद नहीं करी। ड्राईवर और कंडक्टर ने भी बस नहीं रोकी। जैसे ही बस की गति थोड़ी धीमी हुई मैं चलती बस से कूद गया। . . . उस दिन से मैं हमेशा महिलाओं की सीट में बैठता हूं।*

कई बार लोगों की अपनाई जेन्डर पहचान स्वीकृत हो जाती है। इस स्थिति में उनसे यह नहीं पूछा जाता कि उनका व्यवहार "आदमी" जैसा क्यों है, बल्कि, उन्हें "आदमी" मानते हुए पूछा जाता है कि व्यवहार "आदमी" जैसा क्यों नहीं है। कार्तिक की कहानी यह स्पष्ट करती है।

बचपन से कार्तिक बिल्डिंग बनाने की जगह पर काम करता था। 9 साल की उम्र में वह मां के साथ खदान में पत्थर तोड़ता। "काम की जगह पर आस पास के लोग मुझे आदमी समझते। मैं भारी, शक्तिशाली आवाज़ करके लोगों से बोलता।" पर लोगों को उसकी कुछ आदतें अजीब लगतीं। "काम शुरू करने से पहले सब लड़के

खुले में अपने कपड़े बदलते, और काम के अंत में नहाकर कपड़े फिर बदलते। औरतें मुझसे पूछती, 'तुम कपड़े क्यों नहीं बदलते, पसीने में भरे हो फिर भी कपड़े क्यों नहीं बदलते? पता नहीं कैसे आदमी हो?"

स्थिति तब और भी उलझ जाती है, जब अपनाई हुई जेन्डर पहचान औपचारिक रूप से स्वीकृत हो जाती है। एक ओर, बहुत अच्छा लगता है कि दस्तावेज़ बनाने वाले अधिकारी ने आपकी दिखावट अनुसार आपको 'आदमी' जेन्डर दे दिया; दूसरी ओर, पर्दाफ़ाश होने का डर बना रहता है।

सनी हमेशा पॅन्ट–शर्ट पहनते थे और छोटे बाल रखते थे। कहते हैं हर दस्तावेज़ में उनका जेन्डर 'आदमी' लिखा गया था। "हमारी शकल देखकर सब दस्तावेज़ में 'आदमी' जेन्डर दर्ज़ किया गया। . . . पॅन कार्ड में, पासपोर्ट में, वोटिंग कार्ड में . . . एक समय हम बहुत खुश होते जब लोग दस्तावेज़ में हमारा जेन्डर 'आदमी' लिखते, पर इसे बार–बार बदलवाने के लिए मां को इतनी परेशानी हुई और इतना खर्च उठाना पड़ा कि अब हमें खुशी नहीं होती। अब हम पूरा ध्यान देते हैं कि 'औरत' जेन्डर ही दर्ज़ हो।"

> परन्तु हर स्थिति में झगड़ने या झांसा देने से काम नहीं चलता। हवाई अड्डे, मॉल के प्रवेश, जहां पर जेन्डर के आधार पर चेकिंग होती है या फिर, महिलाओं के लिए आरक्षित सार्वजनिक शौचालय या जेन्डर के आधार पर बंटी हुई अन्य जगहों पर, हर समय उठते सवालों से अपमानित किए जाने पर और हिसां का सामना करते–करते वे बेहद हताश हो जाते हैं।
>
> इन परिस्थितिओं में अपमान और शर्मिंदगी से बचने के लिए लोग अलग–अलग उपाय अपनाते हैं। उत्तरदाताओं ने बताया कि, अगर उनकी आवाज़ उनकी जेन्डर अभिव्यक्ति से मेल नहीं रखती थी, तो वे क्या करते थेः अगर वे चाहते थे कि लोग उन्हें आदमी मानें, तो कुछ लोग सार्वजनिक स्थानों में बोलते ही नहीं थे; अगर वे महिलाओं के लिए बने शौचालय का प्रयोग करना चाहते थे तो कुछ लोग जान बूझ कर अपनी "औरत" जैसी तीखी आवाज़ में बात करते; और कुछ लोगों को यह भी दिक्कत होती थी कि फोन पर क्योंकि उनकी आवाज़ "आदमी" जैसी सुनाई देती है, उन्हें "आदमी" समझा जाता है।

जिन जगहों में जेन्डर विभाजन सख्ती से लागू होता है, वहां औरत या आदमी दिखाई देने वाले लोगों के लिए भी समस्या खड़ी हो सकती है। उदाहरण के लिए, महिला छात्रावास में एक जेन्डर के लोग एक साथ रहते हैं, क्योंकि माना जाता है कि उनके शरीर एक जैसे हैं और दूसरे (पुरुष) शरीर से अलग हैं। इसलिए, जब कोई जेन्डर नियमों का उल्लंघन नहीं भी करते, पर उनका शरीर सामान्य से अलग प्रतीत होता है, तो लोगों को आशंका होने लगती है।

संध्या इंटरसेक्स विविधता वाले व्यक्ति हैं। उन्हें लगता है उनका जेन्डर औरत है, पर यह भरोसे से नहीं कह सकते, क्योंकि उनका शरीर औरतों के शरीर से अलग है। जब वे महिला छात्रावास में रहते थे, एक डर बना रहता था की कोई उनके शरीर के अंतर को देख लेगा। "कॉलेज के पहले वर्ष में, हम 40 लोगों के लिए एक ही स्नान–घर था। हम सुबह 4 बजे, सब के पहले उठकर, ठंडे पानी में स्नान करते, ताकि कोई हमें देख न सके। हमें डर लगता था कि अगर किसी ने हमारे शरीर के फ़र्क को देख लिया तो हमें कॉलेज से बेदखल कर देंगे, और हमारी पढ़ाई छूट जाएगी।"

उनका डर वाजिब था। केवल औरतों के लिए आरक्षित जगहों में कई लोगों को इसलिए हिंसा झेलनी पड़ती है, क्योंकि उनका रवैया जेन्डर नियमों से अलग प्रतीत होता है। कई उत्तरदाताओं ने कहा कि ट्रेन के

महिला–आरक्षित डब्बों में सफ़र करते हुए, या शौचालय का प्रयोग करते समय उन्हें डर लगता और हिंसा का सामना करना पड़ता।

40–वर्षीय ॲलेक्स अपने जेन्डर को 'लेस्बियन और ट्रांसजेन्डर के बीच' मानते हैं। सार्वजनिक शौचालय इस्तेमाल करने के अपने अनुभव बताते हुए वे कहते हैं, "हमें पुरुषों के शौचालय इस्तेमाल करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। पिछले 4 –5 वर्षों से हमारे शरीर में बदलाव आ रहे हैं, जिस कारण हमें महिलाओं का शौचालय इस्तेमाल करना पड़ता है। परन्तु बहुत मुसीबत है, सब लोग हमें घूरते हुए देखते है . . . कई बार औरतें चिल्लाकर कहती हैं, 'यह महिलाओं का शौचालय है!' और हम भी चीखते हुए कहते हैं, 'देख नहीं सकते मैं आदमी नहीं हूं?'"

ऐसे अनुभवों के कारण, और सार्वजनिक स्थानों में लगातार झंझट से बचने के लिए कुछ लोग, स्थायी या अस्थायी रुप से, अपनी जेन्डर अभिव्यक्ति बदल लेते हैं – बाल बढ़ाकर, या कुछ ऐसा पहनकर जिससे कोई भी जेन्डर स्पष्ट न होता हो।

अपनी दिखावट बदलकर उसे अपनी पहचान के अनुरूप बनाना, फिर इसमें और बारीक परिवर्तन लाना, और फिर इसके साथ खेल पाना, ज़िन्दगी–भर का प्रयास हो सकता है। परन्तु ऐसा करने का मज़ा अपने जैसे लोगों के बीच ही आता है, जहां लोग इन बारीकियों को समझते हैं और समर्थन देते हैं। बाकी की दुनिया के लिए, यह सब केवल जेन्डर के नियमों का उल्लंघन है।

फ़िलहाल, जेन्डर बाइनरी नियम इतने शक्तिशाली हैं कि जेन्डर के नियमों के उल्लंघन को भी अपनी लपेट में ला सकते हैं। सॅन्डी अपना जेन्डर 'अन्य' बताते हैं। जेन्डर नियमों का लगातार विरोध करने की आवश्यकता पर बोलते हुए, वे इसमें एक नया पहलू जोड़ते हैं। कहते हैं:

> *हम कभी भी जेन्डर की 'अन्य' श्रेणी में रहना पसंद करेंगे, जो कि एक अलग जेन्डर का प्रतीक है। एक बार यह भी व्यवस्था का अंश बन गया, तो खतरा है, कि यह भी एक नियम बन जाएगा। हमारे समुदाय में ऐसा होता भी है – 'अगर आप बुच हैं, तो कान में बाली क्यों पहनते हैं?' 'आप फेम्म कैसे हो सकते हैं, आपके तो बाल इतने छोटे हैं?' 'आप क्वीन कैसे हो सकते हैं, अगर आप टांगों के बाल नहीं साफ़ करते?' परंतु जेन्डर को ललकारने की खूबी यह है कि यह चुनौती लगातार जारी रहती है, हर नियम के खिलाफ़।*

नज़दीकी रिश्तों में जेन्डर की अभिव्यक्ति

लोग अपने जेन्डर को किस तरह अभिव्यक्त करते हैं, और देखने वाले उसे किस तरह समझते हैं, यह अपने आप में एक उलझी हुई प्रक्रिया है, जो तब और उलझ जाती है, जब इस अभिव्यक्ति को निर्धारित जेन्डर भूमिकाओं की नज़र से देखा जाता है। पितृसत्तात्मक, जेन्डर विभाजित, हेट्रोनॉर्मेटिव समाज में जेन्डर बाइनरी के अनुसार भूमिकाएं स्पष्ट हैं और इनका पालन करना अनिवार्य है। परन्तु पिछले कुछ दशकों में इन जेन्डर भूमिकाओं का इस कदर उल्लंघन हो चुका है, की आज औरत व आदमी की कोई तयशुदा भूमिका निश्चित करना मुश्किल है। हमारे उत्तरदाताओं के कथन इस बदलती समझ में कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण जोड़ते हैं।

जेन्डर भूमिकाएं हर लम्बे समय के रिश्ते में प्रकट होती हैं – जैसे पारिवारिक, दोस्ती, निजी या कार्यस्थान के रिश्तों में। इस भाग में हम उत्तरदाताओं की उन कहानियों पर ध्यान देंगे, जो बताती हैं कि उनपर कौन सी भूमिकाएं थोपी गईं, कौन सी उन्होंने खुद अपनाईं या समय के साथ उनमें ढल गए, या फिर कौन सी उन्हें एक न एक समय पर निभानी पड़ीं। यहां हम केवल निजी और घनिष्ठ रिश्तों पर ध्यान देंगे, क्योंकि इनमें जेन्डर नियमों के बदलने की कई परतें नज़र आती हैं।

बेटा बनना, बेटी बनना

जैसा कि अपेक्षित था, पैदाइशी परिवार में जेन्डर भूमिकाएं परिवार के वर्ग और अन्य परिस्थितिओं से प्रभावित रहीं। अक्सर इच्छा के विरुद्ध, कई लोगों को बचपन में कुछ घरेलू काम–काज मजबूरन करने पड़े, हालांकि मध्यम या उच्च वर्गीय परिवारों में ये काम औरों से करवाना मुमकिन था। कुछ उत्तरदाता घरेलू काम करने से बच गए, क्योंकि उनकी बड़ी बहनें इसे संभाल लेतीं, परंतु जो लोग इकलौते या घर के बड़े बच्चे थे, उन्हें घर का कुछ काम संभालना पड़ा। यह स्थिति सभी उत्तरदाताओं के बचपन में पाई गयी, भले ही वे ग्रामीण क्षेत्रों से हों या शहर के निवासी।

कई किस्से सुनने को मिले जहां पैदाइशी परिवार, विस्तृत परिवार और कभी आस–पड़ोस के लोगों ने भी जेन्डर भूमिकाओं के उल्लंघन को स्वीकारा, या कम से कम विरोध नहीं किया। एकाध बार परिवार ने अपने "बेटे" की जेन्डर पहचान को इतने अच्छे से स्वीकारा, कि परिवार के रीति–रिवाज़ों में उसे "आदमी" का दर्ज़ा भी दिया।

कमल एक मध्यम वर्गीय खेतीहर परिवार से है। कमल की पार्टनर पर शादी करने का अत्यंत दबाव था, इसलिए दोनों घर छोड़कर भाग गए। हाल में जब कमल ने अपने परिवार से रिश्ता फिर जोड़ा, उन्होंने दोनों की शादी रीति–रिवाज़ के साथ कर दी – शादी में कमल ने पति की रस्म पूरी करी और उसकी पार्टनर ने पत्नी की।

> जिस सामाजिक–सांस्कृतिक माहौल में बेटे–बेटियों की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित है, और बेटों की चाहत सर्वोपरि रहती है, वहां जेन्डर नियमों का उल्लंघन करने वाली "बेटियों" को "बेटे" के रूप में स्वीकारा जाता है, पर कुछ ही हद तक। आम तौर पर ऐसा व्यवहार उन परिवारों में ज़्यादा बर्दाश्त होता है, जहां वे उस व्यक्ति पर आर्थिक या किसी अन्य रूप से निर्भर हैं। फिर भी, ज़रूरी नहीं कि परिवार इस "बेटे" के हर निर्णय को समर्थन देंगे।

सुमित खुद को 'ट्रांसजेन्डर' की पहचान देते हैं और बचपन से ही वे अपने आप को लड़का मानते थे। सुमित के पिता उनके जेन्डर का समर्थन करते और उन्हें लड़कों वाले खिलौने या उपहार ला कर देते। आज भी उनके अंकल और बहनें उनकी जेन्डर पहचान को काफी हद तक स्वीकारते हैं। इंटरव्यू के समय सुमित अपनी मां की देखभाल कर रहे थे और उनका अनुमान था कि उन्हें परिवार का घर विरासत में मिलेगा। फिर भी, दो मामलों में उन्हें समर्थन का अभाव महसूस होता है। पहला, वे सर्जरी द्वारा अपने शरीर को बदलना चाहते हैं। "इस मुद्दे को लेकर बहुत तनाव है, पर हमने अभी कुछ नहीं किया है। . . . क्या करें, हम अपने परिवार को बहुत चाहते हैं। अगर हम कुछ करना चाहें, तो हमें परिवार छोड़कर जाना पड़ेगा। वे कहते हैं, कि हम उनके लिए लड़के के सामान ही हैं, तो कुछ बदलने की क्या ज़रुरत है।" दूसरा मामला सुमित की जिंसीयत से संबंधित है। "अगर हमारी कोई प्रेमिका हुई और वह हमारे साथ रहना चाहे, तो परिवार नहीं मानेगा। हम जैसे हैं वह उनके लिए ठीक है, पर वे हमारी प्रेमिका को स्वीकार नहीं करेंगे।"

हमने अध्ययन में पाया की जेन्डर नियमों का उल्लंघन करने वाले "बेटों" को फिर भी स्वीकृति मिल जाती है, परन्तु, जेन्डर नियम उन लोगों पर ज़्यादा सख्ती से लागू किये जाते है जो जस्ज़ेनिव अपने आप को 'औरत' की पहचान देते हैं, या जिन लोगों की औरत से अलग जेन्डर पहचान परिवार में नकारी जाती है।

कवी खुद को 'औरत' मानती है। उसका क्रिकेट में उज्ज्वल भविष्य हो सकता था, पर उसके परिवार ने रोक लगा दी।

> *मुझे 7 दिनों में क्रिकेट खेलना बंद करना पड़ा – मां का कहना था मैं लड़की हूं और मुझे सुरक्षा की ज़रुरत है। मेरे भाई मुझसे 6 और 10 साल बड़े थे, और उन्हें भी ऐसा ही लगा। . . . उस समय मैं परिवार का विरोध नहीं कर सकी। एक बार राज्य की क्रिकेट टीम के खिलाड़ी से मेरी भेंट हुई और उसने कहा 'बहुत बढ़िया होता अगर तुम टीम में जुड़ जातीं, पर तुम नहीं आओगी।' मुझे बहुत बुरा लगा, बहुत ही बुरा। मैं क्रिकेट खेलने को मरती हूं।*

कभी–कभी अपने आप में दृढ़ रहने का परिणाम हिंसा और दमन हो सकता है। विमला याद करती है कि जब उसने परिवार के पुरुषों का रोब नकारने की कोशिश करी तो नतीजा क्या हुआ। उसके परिवार ने एक "गुरु"

से सलाह लीः

> *गुरु ने कहा कि मेरे अंदर जन्म से ही कोई बुरी शक्ति है जिस कारण मैं परिवार का हमेशा विद्रोह करती हूं। इसलिए मैं अपनी दिशा खुद चुन रही हूं और परिवार की बात नहीं मान रही। . . . परिवार की नज़र में वे मेरा बचाव कर रहे थे, पर मेरी नज़र में वे मुझे बर्बाद कर रहे थे। इतना ही नहीं, वह व्यक्ति पूजा करने घर आता और मेरे ऊपर भभूत डालता, मेरे शरीर पर उसे मलता और इस प्रक्रिया में मेरे शरीर को छूता। मुझे पसंद नहीं कि मेरे शरीर को कोई छुए। 7वीं कक्षा से मैं यह पीड़ा सह रही थी जो मेरा परिवार मुझ पर थोप रहा था। मैं अपने आप में सिमट गयी। मैं अपने आप को व्यक्त करना भूल गयी। मेरे कोई अधिकार नहीं रहे। . . . मुझे पूजा के लिए राज़ी करने के प्रयास में वे मुझे तीन तीन दिन खाना नहीं देते थे।*

यहां तक कि, जब कभी ऐसा लगता भी है की पैदाइशी परिवार अपने बच्चों की जेन्डर पहचान स्वीकार रहा है, वास्तव में उनकी स्वीकृति उस हद तक ही होती है, जो उनके विचार में एक सही बेटे या बेटी की छवि के अनुरूप हो। यह समर्थन इस आधार पर नहीं होता, कि बच्चे अपनी जेन्डर और जिंसीयत किस रूप में समझते हैं।

पति, साथी, प्रेमी, पत्नी

बढ़ती उम्र के साथ जीवन में नए निजी रिश्ते बनते हैं। हमारे अधिकांश उत्तरदाता लंबे अरसे के निजी यौन रिश्तों में नहीं थे, इस कारण, वे किसी के साथ जीवन गुजारने की दिनचर्या स्थापित नहीं कर पाए। परन्तु उनके कथन याद दिलाते हैं, कि सामाजिक जेन्डर भूमिकाएं और नियम कितने स्पष्ट और गढ़े हुए है, और इनमें ढल जाना कितना आसान है। हालांकि कुछ लोगों के लिए यह जीवन को सीमित कर देते हैं, लेकिन कुछ लोग इन नियामक जेन्डर भूमिकाओं को पसंद करते हैं। किन्तु हमारे अध्ययन का एक सबसे महत्वपूर्ण

निष्कर्ष यह था, कि जो जेन्डर भूमिकाएं देखने में नियामक प्रतीत होती हैं, वास्तव में वे नियामक नहीं होतीं। क्वीयर लोगों की ज़िंदगियां और हकीकतें उन्हें गड़बड़ा देती हैं।

एक रिश्ते में आनंद को अपने जेन्डर का भरपूर समर्थन मिला। बड़े स्नेह से वह याद करता है, "घर में छोटे–मोटे नलसाज़ी के काम मेरे को मिलते, खाना पकाना उसका काम था, बिस्तरे वे बनाती और मैं मदद करता। यह सब कुछ कहे बिना हो जाता। खरीददारी मैं करता।" आनंद को घरेलू काम–काज में हाथ बंटाना अच्छा लगता। केवल खाना पकाना उसे रास नहीं आता, क्योंकि समाज में यह औरतों का काम माना जाता है। एक तरफ़ वह पारंपारिक आदमी बनना चाहता है, दूसरी तरफ़ उसकी कल्पना है कि उसकी पार्टनर उसकी हर मांग को इनकार कर सके। आनंद के नज़रिए में एक पारंपारिक पति वह होता है जो खुले विचारों वाला होता है, जो पत्नी का ध्यान रखता है और जो उसके काम–काज में टांग नहीं अड़ाता!

आनंद एक नारीवादी सोच के अनुसार भले ही पति की परिभाषा बदल रहा हो, पर सब लोगों को समानता का रिश्ता नहीं मिल पाता। एक प्रेमिका के साथ रिश्ता जोड़ने से पहले प्रिया अकेले रह रही थी और अच्छा कमा रही थी। फिर वे साथ रहने लगे और उसे जेन्डर से जुड़े तनाव का सामना करना पड़ा। हालांकि घर में खाना बनाने और अन्य काम–काज के लिए किसी को रखा गया था, और प्रिया देर तक काम में व्यस्त रहती, अपेक्षा थी कि वह पत्नी की भूमिका अदा करेः

> *मेरी पिछली प्रेमिका अपने आप को बुच मानती थी और उस रिश्ते में मैं लड़की/पत्नी बन गयी। मैं घरेलू काम–काज कम ही करती थी, जिससे वह नाराज़ हो जाती। . . . वह मेरे परिवार को लेकर भला–बुरा कहती, मेरे आने–जाने पर निगरानी रखती, मेरे आदमी मित्रों से बात नहीं करने देती। कई बार वह मार–पीट पर उतर आती और स्थिति बिगड़ती ही गयी। वह मेरे पिता जैसी ही थी। एक बार उसने मेरा बलात्कार करने की धमकी दी। उस दिन मैंने उसे ज़ोर से धक्का दिया। भावनात्मक स्तर पर भी वह रिश्ता बहुत हिंसात्मक था।*

तुली अपने आप को 'औरत' मानती है, पर निजी रिश्तों में उसे अनपेक्षित जेन्डर भूमिकाएं अदा करनी पड़ीं। हर रिश्ते में वह पति या बॉयफ्रेन्ड की भूमिका अपनाने को विवश हो जाती। हालांकि उसे "पति" बनने का खास शौक नहीं था, पर इस भूमिका के कुछ पहलू उसे पसंद आये। "मैं अपनी आधी कमाई अपनी प्रेमिका को दे देती और आधी अपनी मां को। जब मेरी प्रेमिका कमाने लगी, उसके बाद भी, सब भुगतान मैं ही करती, दुकान में, दोस्तों के बीच। बाहर जाने के पहले वह मुझे पैसे दे देती।"

तुली का एक ट्रांसजेन्डर औरत से भी रिश्ता रहा। वह तुली को पति के रूप में देखती, पर तुली की नज़र में वह प्यार का या जिंसी रिश्ता नहीं था। जब उस औरत ने एक बच्चा गोद लिया, वह तुली को सह–पालक बनाना चाहती थी। तब तुली ने औपचारिक रूप से उस बच्चे को गोद लिया और इस परिवार के साथ समय बिताने लगी – जिसमें एक "पत्नी" थी, एक बच्चा और "पिता समान" तुली।

> बार–बार हमारे उत्तरदाताओं ने नियामक कहानियों को नया मोड़ दे दिया। रंजना अपने "मर्दाना" दिखने वाले पार्टनर के साथ रहने का वर्णन करती हैः

सिसजेंडर सुविधाएं

हमारे बीच मर्दानगी और नारीत्व का कोई निश्चित नियम नहीं है। लोगों की नज़र में वह मर्दाना है और मैं औरत जैसी। पर घर के काम को देखो तो वह खरी औरत का स्वरुप है। वह घर को साफ सुथरा रखती है, खाना पकाती है . . . ऐसा हो गया क्योंकि वह घर से काम करती है। . . . जब मैं घर पर होती हूं, तब मैं भी खाना पकाती हूं। . . . वह मुझसे इतना प्रेम करती है, कि मुझे घर का काम नहीं करने देती। पितृसत्ता का अच्छा उदाहरण लग रहा है ना? कई आदमी जैसे कहते हैं ना, मेरी पत्नी मुझे इतना प्यार करती है, कि काम ही नहीं करने देती।

विमला ने खुद को 'आदमी' मानने वाले एक जस्जेनिव से शादी कर ली है। वह बड़ी बारीकी से अपनी नारीवादी सोच और अपने रिश्ते को व्यक्त करती है। ऐसा नहीं है कि रिश्ते में कोई परेशानी नहीं है पर वह बड़ी नाज़ुकता से अपने पार्टनर के जेन्डर के बारे में बताती है:

. . . अपने आप को आदमी समझने के अलावा, मेरा पार्टनर पारंपारिक औरत–आदमी के रिश्तों में ही विश्वास रखता था . . . वह शुरु से ही शादी में विश्वास करता था और अपने प्रेमी से शादी कर पति–पत्नी का रिश्ता बनाना चाहता था . . . मेरी राजनैतिक समझ तब से बदल चुकी है, आज मैं उसे पति की जगह पार्टनर बुलाने को तैयार हूं। पर यह मेरी सोच है, मेरे साथी की नहीं। . . . वह अभी भी उसी सामाजिक ढांचे में है . . . कभी ऐसा लगता है मैं अपने आप से कुछ छिपा रही हूं, दुनिया से झूठ बोल रही हूं कि मैंने एक आदमी से शादी की है। . . . यह मेरा अंदरूनी संघर्ष है, जिसे मैं आपको समझाने की कोशिश कर रही हूं। . . . और स्थितियों में मैं सफाई नहीं दूंगी, केवल कहूंगी की मैंने एक आदमी से शादी की है।

सिसजेन्डर होने के नाते, विमला को जो फ़ायदे हैं, उसके साथी को नहीं। वह बहुत ध्यान से और सचेत रूप से रिश्ते में संतुलन लाने की कोशिश करती है:

उसे कई चीज़ें प्राप्त नहीं हो सकतीं, क्योंकि वह शारीरिक रूप से आदमी नहीं हैं। यहां मैं उसकी इच्छाओं की पूर्ति कर सकती हूं। अगर उसकी कोई और प्रेमिका होती, जो उसके लिए यह सब करती, तो शायद मैं यह सब नही करती। पर और कोई नहीं है, उसका रिश्ता केवल मेरे साथ है, तो थोड़ा बहुत समझौता करना पड़ता है। इसे समझौता कहना भी ठीक नहीं होगा। उसकी इच्छा पूरी करने में मुझे बहुत खुशी मिलती है।

निजी रिश्तों में इस प्रकार की सिस सुविधाओं को समझना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि बाहर से कुछ रिश्ते आम तौर के आदमी और औरत के रिश्तों जैसे दिखते हैं। लेकिन जो असुरक्षितता जेन्डर नियमों का उल्लंघन करने वाले पार्टनर महसूस करते हैं, वह इन रिश्तों में सत्ता पर खासा असर डालते हैं। हेट्रोनॉरमेटिव सत्ता के समीकरण उलट जाते हैं और मर्दानगी और नारीत्व की समझ भी बदल जाती है।

जैसा कि हमने पहले के एक भाग, *नज़रों से बचाकर निजी रिश्ते,* में देखा, जब किसी के जेन्डर को स्वीकृति नहीं मिलती या उसे नकारा जाता है, तो व्यक्ति को गहरी ठेस पहुंचती है। कुछ लोग जो खुद को 'आदमी' मानते हैं, इस अस्वीकृति के डर से रिश्ते ही नहीं बनाते।

जो लोग निजी रिश्तों में जेन्डर विविधता संभाल पाते हैं, उनके लिए यौन संबंध में जेन्डर भूमिकाओं की फेर बदल से अनेक और आनंदमय अनुभव संभव हो जाते हैं।

मोनू अपनी पहचान इस प्रकार बताते हैं, 'आदमी, जिसने मान लिया है, कि लोग उसे औरत ही मानेंगे'। वे कहते हैं:

> *पहले हम अपने शरीर को हमेशा ढंक के रखना चाहते थे। हमें अपने स्तन और योनि दिखाने में झिझक होती, लगता कि सामने वाले जान जाएंगे कि हमारा शरीर लड़की का है, इसलिए हमेशा गंजी पहने रखते थे। अब हमारी सोच बदल गयी है। . . . हमारी प्रेमिका समझती है और ध्यान रखती है। . . . एक मित्र ने हमसे एक बार पूछा, 'मान लो तुम्हारी प्रेमिका का हाथ तुम्हारी योनि पर जाता है। यदि तुम सोचते हो कि यह योनि नहीं, लिंग है और तुम्हारी प्रेमिका भी उसे लिंग समझती है, तो क्या समस्या है?' हमने सोचा कि यौन संबंध के दौरान हम भी इन्हें स्तन और योनि नहीं समझते। . . . फिर हमने अपनी प्रेमिका से पूछा, 'तुम क्या सोचती हो जब तुम हमें वहां छूती हो?' उसका भी वही जवाब था, कि 'मैं उसे योनि नहीं समझती, लिंग समझती हूं।' फिर हमने कहा, 'ऐसा है तो तुम हमारी योनि को कभी–कभी छू सकती हो, पर प्रवेश करना हमें मंजूर नहीं है।' और वह ऐसा कभी करती भी नहीं। . . . अब हम खुलकर बात कर सकते हैं। अब हम गंजी कभी पहनते हैं, कभी नहीं।*

कीर्ति अपने आप को 'आदमी' की पहचान देता है। वह अपने प्रेमी के साथ एक अनोखा तरीका अपनाता है:

> *मेरी प्रेमिका मुझे अपना पति मानती थी। छह महीने बाद मैंने उसे मेरा पति बना दिया। हम इस तरह समय बांट लेते थे, हर छह महीने बदल लेते थे। हम कॅलेंडर पर निशान लगा कर सही तारीख पर अदला–बदली करते थे। जब मैं पति होता मैं उसकी योनि प्रवेश करता, उसे वैसे प्यार करता जैसे एक पति अपनी पत्नी को करता है। जब वह पति होती, वह भी ऐसा ही करती। . . . हमने इस सिलसिले को बनाए रखा। अपनी दूसरी प्रेमिका के साथ मैं तीन साल से पति हूं। दोनों ही योनि प्रवेश करते हैं। इस रिश्ते में 'पति' होने का कुछ मायना नहीं है। . . . हमारे बीच इतनी समानता है तो पति–पत्नी का क्या मतलब?*

कनिका अपने आप को 'औरत पर अस्थिर जेन्डर' मानते हैं। वे यौन संबंध में जेन्डर के फेर–बदल का वर्णन इस प्रकार करते हैं। "जब हम अपने आप को औरत की तरह महसूस करते हैं, तब हमें योनि प्रवेश बहुत आनंद देता है। कभी–कभी हमारी पार्टनर योनि प्रवेश करती और हम दोनों सोचते की यह उसका लिंग है, और हम दोनों को बहुत मज़ा आता। ऐसे ही होता जब हम उसके लिए आदमी बनते। चूंकि हम दोनों जेन्डर की फेर–बदल करते रहते हैं, कभी–कभी हम कल्पना करते, कि हम दो लड़कियां एक दूसरे को प्यार कर रही हैं, और कभी सोचते हम दो लड़के एक दूसरे को प्यार कर रहे हैं।"

तो फ़िर पति–पत्नी का क्या मतलब?

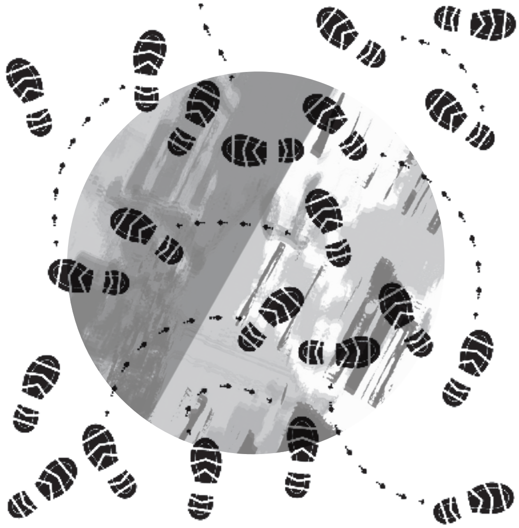

जेन्डर एक सफर है

जेन्डर एक ऐसा मिश्रण है, जिसमें व्यक्ति की अंदरूनी गहराई सामाजिक और सांस्कृतिक नियमों से टकराती है।

कुछ लोग अपनी जेन्डर अभिव्यक्ति में बारीक बदलाव करते रहते हैं, जब तक उन्हें असंगति के बजाए ताल–मेल का अहसास हो; कुछ औरों को वर्ग या अनुकूल परिस्थितियों का सहारा नहीं मिलता, ना ही वे समर्थक रिश्ता जोड़ पाते है। ऐसे लोग शायद अपने अंदर की और बाहर की हकीकत में एक दूरी महसूस करें। और कुछ लोगों को हो सकता है बस किसी–किसी जगह में अपने जेन्डर को व्यक्त करने का मौका या इजाज़त मिले। इस सब का मतलब बिल्कुल यह नहीं कि जेन्डर अपने आप में एक पत्थर की लकीर समान है – 50 लोगों से बातचीत करके हम समझ सके हैं कि जेन्डर अंदरूनी भी होता है और इसे रचा भी जाता है। किसी के लिए यह काफी हद तक तय हो सकता है, तो किसी और के पास इसे बदलते रहने की गुंजाईश और इच्छा हो सकती है।

जेन्डर अक्सर एक खोज होती है, एक बनती हुई तस्वीर होती है, जिसपर वर्ग और जाति और शिक्षा का भी असर पड़ता है; जिसके बनने में करीबी रिश्तों का भी हाथ होता है और अजनबी लोगों के साथ मुलाकातों का भी, जो राह में आई रुकावटों से जूझते हुए अपने लिए नई सीमाएं तय करता चला जाता है। क्योंकि यह शुरुआत का पड़ाव भी है, और मंज़िल भी, इसे एक सफर के रूप में देखना जायज़ बन जाता है।

छुटपन से हमने अपने अंदरूनी जेन्डर को एक तरह से बहला फुसला कर बाहर निकालने की कोशिश की है। शीशे में देख कर हम छोटे छोटे बदलाव करते रहे, तब तक जब तक ऐसी छवि सामने आई जो खुद को पसंद आई। एक तरफ वो छवि होती है जो दुनिया आपसे चाहती है, दूसरी ओर वो जो आप चाहते हैं। हम कह सकते हैं कि उस मायने में हमें ओरिजनल की दोबारा रचना करनी पड़ी है। ठीक–ठीक कहना मुश्किल होगा कि वह कौन सी उम्र थी जब हमें लगा कि हां, अब हम पूरी तरह कम्फर्ट महसूस करते हैं। माना जा सकता है कि 20 की उम्र तक वह नई छवि तैयार हो चुकी थी, जिसके अंदर से समाज के थोपे गए नियम और कायदे निकाले जा चुके थे, और जो चीज़ें खुद को पसंद हों वे आत्मसात की जा चुकी थीं। वैसे इस मकाम तक पहुंचने के बाद भी, सफर का एक और पड़ाव तय करना पड़ता है – जिसमें आपको भी उस छवि को देखकर मज़ा आए। क्योंकि वो आप को अच्छा तो लगती है, पर इस बात का तनाव भी रहता है कि कहीं यह 'गलत' तो नहीं? अंत में वह नौबत आनी चाहिए कि आप इस बात की खुशी मनायें, कि आप खुद उस छवि को देखकर खुश हैं, पर इस बात से भी खुश हैं कि बाकी दुनिया भी उसी छवि को देख रही है।" (सॅन्डी)

क्वीयर समूह एक बढ़ती समझ

लेबिया में हमारे अनुभव से हम जानते थे, कि हर क्वीयर समूह में जेन्डर की समझ को लेकर अपना ही एक सफर होता है। बदलती दुनिया में, समूहों के सदस्यों के नए विचार बनाने लगते हैं और इसके साथ ही एक नयी भाषा विकसित होती है, जिसका वह अपने जीवन और काम में प्रयोग करते हैं। जैसे–जैसे समूह में नए लोग जुड़ते हैं, वे भी अपनी पहचान और अभिव्यक्ति से, जेन्डर और जिंसीयत पर सामूहिक सोच को प्रभावित करते हैं। मिलजुलकर ये दोनों प्रक्रियाएं समूह की नीति और राजनीति को चुनौती देती हैं, और कभी कभी समूह को इस कारण ज़्यादा सम्मिलित बनने में मदद मिलती है, कम से कम जेन्डर, जिंसीयत, पहचान, नारीवाद जैसे मुद्दों पर उन्हें दोबारा गौर करने को विवश तो करती ही है।

आज लेबिया एक हमजिंसी, बाईसेक्शुअल औरतों और ट्रांसलोगों का समूह है, परन्तु हमारे बीच ट्रांस* लोगों के बारे में जागरुकता और उनके मुद्दों पर गहराई से चर्चा वर्ष 2000 से ही होने लगी। समूह की इस बदलती समझ के कई कारण रहे, जिन्हें हमने विस्तार से इस रिपोर्ट के परिचय और संदर्भ वाले हिस्से में लिखा है। जो जस्जेनिव खुद को 'औरत' नहीं मानते थे, उनके प्रति एक संवेदनशील समझ बनाने के लिए हमें पुरुषत्व के बारे में अपनी सोच में बदलाव लाना पड़ा – हमें बरसों से चले आ रहे अपने इस डर को भूलना पड़ा, कि आदमियों के हमारी क्वीयर नारीवादी जगहों में आने से पितृसत्ता दबे पांव इन में घुस कर उन्हें भ्रष्ट कर डालेगी। हमारे समूह में हुए वाद–विवाद, विस्तृत पढ़ाई और लोगों के साथ संपर्क ने अंततः हमें इस अध्ययन की ओर खींचा।

हमें पता था कि और समूहों में भी ऐसी चर्चाएं हो रही हैं। इसलिए, इन समूहों से विचार–विमर्श करना इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंश शुरु से ही रहा। हम कई सवालों को ज़्यादा गहराई से समझना चाहते थेः विविध जिंसीयत और जेन्डर पहचान रखने वाले लोगों को एक समुदाय दिलवाने में क्वीयर समूह क्या भूमिका निभाते हैं? क्या जेन्डर विविधता समूह को हमेशा मज़बूत करती है या कभी–कभी दरार भी पैदा कर सकती है? समूह में जेन्डर को लेकर किस प्रकार की चर्चाएं होती हैं? समूह किसी व्यक्ति की पहचान का समर्थन किस रूप में करता है? समूह के सदस्य अपने आप को किस प्रकार के नाम देते हैं, और यदि वह कोई नई पहचान या भाषा अपनाते हैं, तो इस पर किस प्रकार की चर्चा होती है ?

हमने कुछ एल बी टी समूहों से गहराई में चर्चा की – कोलकता में सॅफो, बंगलुरु में लेस्बिट, थ्रिस्सुर में सहयात्रिका – और सम्पूर्णा से, जो भारतीय ट्रांस लोगों का विश्वव्यापी नेटवर्क है। चर्चा कुछ पूर्वनिर्धारित मुद्दों पर ही नहीं हुई, हर समूह की विशेषताओं और अनुभवों पर आधारित भी रही। हमने हर समूह के इतिहास और उनकी सदस्यता के बारे में भी चर्चा की। यहां, हम इस चर्चा से उभरे कुछ मुख्य मुद्दों पर ध्यान देंगे।

समूहों के बारे में

लेबिया की तरह, सॅफो भी 90 की दशक में स्थापित हुआ और महिला आंदोलन और नारीवादी राजनीति में अपने आप को स्थित करता है। जब तक लेस्बिट, सहयात्रिका, सम्पूर्णा स्थापित हुए, तब तक जेन्डर के मुद्दे पर चर्चा शुरु हो चुकी थी, इसलिए इन समूहों का सफ़र लेबिया और सॅफो से थोड़ा अलग रहा।

सॅफो

1999 में सॅफो एक लेस्बियन और बाईसेक्शुअल औरतों के समूह के रूप में शुरु हुआ। बाद में उन्होंने अन्य पहचान के लोगों को भी अपना सदस्य बनाया। समूह के एक संस्थापक सदस्य कहते हैं, "ट्रांसजेन्डर पर हमारी समझ 5–6 साल बाद ही बन पायी। इस दौरान, जो नए लोग जुड़ रहे थे, वे अपनी जिंसीयत के साथ जेन्डर को भी समझना चाहते थे। साथ ही, वे यह भी परख रहे थे कि सॅफो उनके लिए उचित समूह है कि नहीं।" इस तरह सॅफो का विकास नए सदस्यों और फोन पर सहायता मांगने वालों की ज़रूरतों से प्रभावित हुआ।

सहयात्रिका

केरल में सहयात्रिका का गठन 2002 में हुआ। उस समय वहां, बढ़ती संख्या में लेस्बियन औरतों की आत्महत्या के किस्से मीडिया में फैल रहे थे। इसी मामले में खोज बीन करने के लिए सहयात्रिका को प्रोजेक्ट के रूप में अनुदान मिला। बाद में प्रोजेक्ट के कार्यकर्ताओं ने निर्णय लिया कि वे इस क्षेत्र में काम जारी रखेंगे। उन्होंने 24 घंटे फोन पर सहायता देनी शुरु की और फिर 2005 में सहायक समूह भी शुरु किया। समूह के एक संस्थापक सदस्य कहते हैं कि ट्रांसजेन्डर मुद्दे उनके लिए शुरु से ही महत्वपूर्ण थे। "हमने आत्महत्या के प्रोजेक्ट से काम शुरु किया पर जल्द ही 'ट्रांस* लोगों का मुद्दा हमारे सामने आया; जिन लोगों और परिवारों से हम मिलते, वे बार–बार कहते कि जोड़ी में से एक लड़की/औरत आदमी जैसी दिखाई देती थी। जेन्डर का मुद्दा इस तरह पहली बार हमारे सामने आया और इसीलिए यह मुद्दा हमेशा से जटिल रहा है।"

लेस्बिट

शुरु में लेस्बिट बंगलुरु में एक स्वयं सेवी संस्था, संगमा का अंश था। संगमा जिंसीयत और जेन्डर के सभी अल्पसंख्यांकों के अधिकार के लिए काम करता है, जबकि लेस्बिट शुरु में लेस्बियन और बाईसेक्शुअल औरतों, एफ टी एम, और औरतों को प्यार करने वाली औरतों का सहायक समूह था। चूंकि संगमा का मुख्य काम हिजड़ा समुदाय और एम एस एम के साथ था, उन्हें महसूस हुआ कि लेस्बियन और अपनी जिंसियत पर सवाल उठा रही अन्य औरतों और ट्रांस* लोगों के मुद्दों पर ध्यान देने के लिए अलग जगह की ज़रुरत है। 2005 में लेस्बिट ने संगमा से हटकर, अपनी अलग पहचान बना ली। आज वह अपने आप को "अंग्रेज़ी न बोलने वाले, श्रमिक वर्ग के लेस्बियन और बाईसेक्शुअल सिसजेन्डर औरतों और एफ टी एम ट्रांसजेन्डर" का सहायक समूह मानते हैं। लेस्बिट और सहयात्रिका ने कई बार मिल–जुल कर संकट की स्थितियों में हस्तक्षेप का काम किया है।

सम्पूर्णा

सम्पूर्णा का गठन वर्ष 2000 में हुआ। हमने जिन अन्य समूहों से बातचीत की उनके विपरीत, सम्पूर्णा का काम केवल जस्जेनिव के मुद्दों पर केन्द्रित नहीं है। यह अन्य समूहों से इसीलिए भी अलग हैं कि इस समूह में सिसजेन्डर लोगों के लिए जगह नहीं है। यानि, यह लेस्बियन और बाईसेक्शुअल औरतों के साथ काम नहीं करते, जबकि अन्य समूहों में ऐसी औरतों की सदस्यता बड़ी तादाद में है। इसके संस्थापक एक ट्रांसआदमी हैं, जिन्होंने "विश्व भर में भारतीय ट्रांस

लोगों के एक नेटवर्क" के रूप में इसे स्थापित किया। शुरु में सदस्य आपस में अनुभव, चिकित्सा संबंधी और कानूनी जानकारी बांटते। धीरे–धीरे इस समूह ने ट्रांस* लोगों के लिए एक सामाजिक जगह और एक छोटे से समुदाय का रूप ले लिया। उनकी ई–लिस्ट बढ़ती जा रही है, और मुंबई में इनकी बैठकें, जो पहले अलग–अलग कॉफी शॉप में होती थीं, अब एक समर्थक नारीवादी समूह के दफ्तर में होने लगी हैं।

इन समूहों की पहुंच (आउटरीच) में भी काफी अंतर है। लेस्बिट बंगलुरु में स्थित है, लेकिन इसके अधिकांश सदस्य, चारों दक्षिणी राज्यों से इस शहर में आए हुए प्रवासी हैं। इस कारण इनकी हर मीटिंग कई भाषाओं के मिश्रण में होती है, और उनके साथ हमारी चर्चा भी ऐसे ही हुई। दूसरी तरफ, सॅफो कोलकता में स्थित है। सॅफो के कुछ सदस्य राज्य के अन्य क्षेत्रों में निवास करते हैं लेकिन इनके नियत सदस्य मुख्यतः कोलकता के निवासी हैं, जो या तो पैदायशी परिवार के साथ रह रहे हैं या उनके संपर्क में हैं। सहयात्रिका थ्रिस्सुर के छोटे शहर में स्थित है और उनके सदस्य केरल राज्य में बिखरे हुए हैं। सम्पूर्णा एक विश्वव्यापी ऑनलाइन नेटवर्क है जिनकी मुंबई में मीटिंग होती है।

जेन्डर के मुद्दे पर काम

हर समूह जेन्डर बाइनरी को पार कर जेन्डर के बारे में चर्चा कर पाने के लिए एक नयी भाषा खोज रहा है। सम्पूर्णा से एक सदस्य का कहना है "बुच–लेस्बियन और एफ टी एम के बीच फ़र्क इतना धुंधला हो गया है, कि आज जेन्डर के इतिहास में पहली बार, ट्रांस के बारे में बात करना संभव हो पा रहा है। पहले हम इस भाषा का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि यह चर्चा शुरु ही नहीं हुई थी। इस शुरूआती दौर में एक प्रातिनाधिक भाषा अपनाना संभव नहीं है, इसलिए हर कोई अपनी पहचान एक व्यक्तिगत तरीके से करता है।"

अतः सम्पूर्णा में हर सदस्य का जेन्डर उनका व्यक्तिगत मामला है। इसमें शामिल हैंः औरतें जो कहती हैं 'मैं ट्रांससेक्शुअल हूं'। कोई कहते है, 'मैं औरत हूं', कोई और कहते है, 'हमें यह बीच का मामला समझ नहीं आता, या तो आदमी होता है या औरत', कोई कहते है, 'मैं ट्रांसआदमी हूं'। इसलिए हम जेन्डर की धारणाएं नहीं बना रहे, लोग अपनी जेन्डर पहचान जैसे बताते हैं, हम उसको लेकर चलते हैं। . . . हम समूह में चर्चा भी नहीं करते कि हमारे समूह में किस–किस पहचान के लोग शामिल हैं। जो जैसा है, वैसा है।

सहयात्रिका का अनुभव भी इससे कुछ मिलता–जुलता ही है। आज समूह के कई जस्जेनिव सदस्य अपने आप को जेन्डर बाइनरी के बाहर की कोई पहचान देते हैं, जो ज़रूरी नहीं कि एक दूसरे से मेल खाती हो। जैसा कि एक सदस्य कहते हैं, "शुरु से समूह के सक्रिय सदस्य, श्रमिक वर्ग के रहे हैं और उनकी जेन्डर पहचान अलग–अलग रही है। इसलिए जेन्डर को लेकर कोई एक साझा समझ नहीं है। मुझे संयुक्त समझ की ज़रुरत भी नहीं लगती। वास्तव में अनेक जेन्डर पहचानें होती हैं . . . किसी जोड़ी में भी, एक कह सकता है वह आदमी है, और दूसरा अपने आप को लेस्बियन कह सकता है।"

ज्ब–जब नए लोग समूह में जुड़ते हैं, संभव है वे समूह में प्रचलित भाषा को अपनाने लगें। हालांकि लेस्बिट का

नाम "लेस्बियन बाईसेक्शुअल ट्रांसजेन्डर" से बना है, आज सदस्यों में "एफ टी एम" शब्द प्रचलित है ना कि "ट्रांसजेन्डर"। समूह में जुड़ते हुए नए लोगों को एफ टी एम की पहचान मिलने से एक आज़ादी का अहसास हुआ, क्योंकि यह उनकी वास्तविकता का बेहतर वर्णन था। अपने जैसे और लोगों को मिलकर, अपनी एक पहचान पा कर खुशी भी होती है लेकिन बाद में, कुछ लोगों ने इस पहचान पर भी प्रश्न उठाया। लेस्बिट के एक सदस्य कहते हैं:

> *पहले हमें एफ टी एम पहचान के बारे में पता नहीं था। हम अपने आप को आदमी मानते थे। आने के पहले हमने अपने बाल कटवाए . . . हमारे आने से पहले यहां दो और एफ टी एम थे। हमें लगा वे हमारे ही जैसे हैं। हमें जिंसीयत के बारे में कुछ नहीं पता था। बाद में हमें जेन्डर और जिंसीयत के बारे में पता लगा और हमने सोचा शायद हम भी एफ टी एम ही हैं, क्योंकि जन्म पर हमें स्त्री जेन्डर दिया गया है। हम जेन्डर पहचान के बारे में सोचते रहते हैं। कभी कहते हैं कि हम आदमी हैं, पर मीडिया से बात करते समय अपने आप को एफ टी एम कहते हैं। हमें कभी लगता है कि हम आदमी हैं, और कभी लगता है कि हम एफ टी एम हैं।*

सॅफो के एक सदस्य ने बताया कि कैसे नियामक जेन्डर भूमिकाओं का उल्लंघन करने वाले अन्य लोगों से मिलकर उसकी अपनी समझ विकसित हुई। "हम बाहर से लोगों के बारे में जो अनुमान लगाते हैं, उससे उनके जीवन की वास्तविकता बिल्कुल अलग है। मुझे बहुत कुछ फिर से सोचना पड़ा – जो जीवन ऊपरी तौर पर नियामक दिखते हैं, वास्तव में उनमें बहुत सी परतें होती हैं, वे सब एक दूसरे से अलग होते हैं।" सॅफो के अन्य सदस्यों ने भी यह बताया कि नए सदस्यों के साथ चर्चा के दौरान, कई नए मुद्दे उभर के आये – चिकित्सीय हस्तक्षेप से लेकर, यह सवाल कि क्या जेन्डर शरीर पर ज़्यादा निर्भर करता है, या अपनी अंदरूनी भावनाओं पर, या प्रेमी की विशिष्ट चाहत पर।

बहरहाल, हर कोई जेन्डर पर व्यक्तिगत समझ बनाने की कोशिश करने के संघर्ष में जुटा है और संभव है, कि चर्चा के माध्यम से एक सामूहिक समझ विकसित हो भी जाए, चाहे अधूरी ही सही। जैसा कि लेस्बिट के एक सदस्य कहते हैं:

> *शरीर–आधारित जेन्डर में हम विशवास नहीं करते। . . . हमारे स्तन और योनि के आधार पर हमें स्त्री निर्धारित करना, हमें मंज़ूर नहीं। समाज ने तय किया है कि जिस शरीर में योनि है और जिसे माहवारी होती है, वह स्त्री का है, और जिस शरीर में लिंग है, वह पुरूष का है। . . . पर हमें अपने मन, विचारों, भावनाओं को देखना है, जिनमें बदलाव होते रहते हैं। इनके कारण विभिन्न जेन्डर होते हैं, नए जेन्डर उभरते हैं। . . . आपको जन्म पर स्त्री जेन्डर निर्धारित किया जाता है, फिर बढ़ती उम्र में लड़कियों के कपड़े पहनाये जाते हैं, लड़कियों का व्यवहार रखना पड़ता है, बाल लंबे रखने पड़ते हैं। एक ढांचे में धकेला जाता है। इसके बाहर कुछ भी स्वीकृत नहीं है। यह सब संस्कृति है। . . . और आपको आदमी से ही प्रेम करना है। इस प्रकार समाज ने दो जेन्डर बनाए हैं। जेन्डर वह है जो हम अपने अंदर महसूस करें। हां, जेन्डर हमारे अंदर की भावना है।*

तो एक तरफ यह साफ़ हो रहा है कि जेन्डर अपने अंदर की भावना से निर्धारित हीता है, जन्म पर मिले शरीर से नहीं। साथ ही, व्यापक स्तर पर एक स्पष्ट समझ और स्वीकृति यह भी है, कि कुछ लोगों को अपने जेन्डर में जीने के लिए शरीर में बदलाव करना अनिवार्य लगता है। जब लोग जाहिर तौर पर इन विरोधाभासी विचारों से जूझते हैं तो नए तरह के सवाल उभरने लगते हैं। जैसे कि सॅफो के एक सदस्य कहते हैं :

जब हम कहते हैं कि हम शरीर के किसी अंश को बदलना चाहते हैं, या कहते हैं कि हमें अपना शरीर या उसका कोई भाग पसंद नहीं, तो क्या यह हमारी अंदर की भावना है, या बाहरी दुनिया का विचार है, जो कह रहा है कि हमारे शरीर में कोई कमी है? आज मुझे अपना पूरा शरीर बहुत पसंद है, पर पहले मुझे पसंद नहीं था क्योंकि इसके कारण मुझ पर हिंसा हुई। तो मेरे अंदर क्या कोई बाहरी दुनिया का विचार है? लिंग होने का क्या मतलब है, यह और लोगों ने मुझे बताया है, तो क्या इसलिए अब मुझे भी लिंग चाहिए?

सब समूहों में चिकित्सा द्वारा शरीर को बदलने की चर्चा गंभीरता से चल रही थी। सॅफो ने एक डॉक्टर को बुलाकर इन मुद्दों पर बैठक आयोजित की, क्योंकि उनके इतने सदस्य अपने शरीर को बदलना चाहते थे। सम्पूर्णा में भी ज़्यादातर चर्चाएं इसी मुद्दे के इर्द–गिर्द होती थीं – न सिर्फ इस बारे में कि क्या विकल्प उपलब्ध हैं और उनके क्या असर होंगे, बल्कि ट्रांस* लोगों के अन्य स्वास्थ्य के मुद्दों को लेकर भी। जैसे कि एक सदस्य कहते हैं, ". . . जब आपको शरीर के किसी अंग को दिखाना पड़ जाए, जिससे सामने वाले को पता चल जाएगा कि आपने शरीर–परिवर्तन किया है, तो सेहत की रोज़मर्रा की समस्याएं भी मुश्किल लगने लगती है। क्या डॉक्टर समझ पायेंगे? लोगों में इसे समझने की भाषा ही नहीं है। ऐसी स्थिति में स्वास्थ्य की बात कहां से शुरु की जाए?"

एक तरह से समूह भी वही चिंताएं व्यक्त कर रहे थे, जो अध्ययन में हमारे उत्तरदाताओं ने कीं। इस बात की मान्यता थी, कि लोग विविध जेन्डर पहचान अपनाते हैं और नियामक जेन्डर बाइनरी को मानने से इंकार करते हैं। एक दूसरे के अनुभव पर गौर करने के बाद, समूहों में एक समझ बन रही थी, कि जेन्डर वह है, जो लोग अंदर से महसूस करते हैं, और अपनी पहचान तय करने में शरीर की बनावट भी महत्वपूर्ण है। अतः, जहां एक ओर यह जागरुकता आई है कि जन्म से निर्धारित जेन्डर को अस्वीकृत करने के लिए शरीर में बदलाव लाना ज़रूरी नहीं है, साथ ही, इस बात पर भी सहमति है, कि शरीर का जेन्डर से एक महत्वपूर्ण संबंध है। सभी समूह इन बारीकियों के साथ काम करने की बेजोड़ कोशिश कर रहे हैं।

समूह का सदस्य कौन बन सकता है

जेन्डर पर एक नयी समझ बनाना, और इसे समूह की ज़मीनी सच्चाई में लाना एक मुश्किल काम है। जब समूह यह तय करने की कोशिश करते हैं कि वे प्राथमिक तौर पर किस समुदाय के लिए हैं, तब यह पेचीदा स्थिति ज़्यादा स्पष्ट होती है। आज, सम्पूर्णा के अलावा, हमने जिन से बात की वे सभी समूह एल बी टी (लेस्बियन, बाईसेक्शुअल और ट्रांस* लोगों) के लिए हैं। सहयात्रिका और सॅफो जैसे समूह शुरु में लेस्बियन और बाईसेक्शुअल औरतों के लिए थे। यानी, ये समूह मुख्यतः केवल औरतों के लिए थे, पर बाद में उन्हें इस पर विचार करना पड़ा।

कई क्वीयर समूहों को शुरु में अपने आप से एक सवाल पूछना पड़ा, जिसका सार सॅफो के एक सदस्य देते हैं। "एक ओर हम यह मानते हैं कि जेन्डर समाज निर्धारित करता है . . . पर कोई व्यक्ति अपने आप को औरत मानते हैं या आदमी मानते हैं, तो क्या उन्हें सॅफो का सदस्य होना चाहिए? यह तय करते वक्त हम शरीर से निर्धारित जेन्डर को अहमियत देंगे या व्यक्ति के अपने जेन्डर के एहसास को? यदि कोई शरीर से स्त्री निर्धारित है, पर अपने आप को 'आदमी' मानता है, तो क्या वह सॅफो का सदस्य हो सकता है?" एक और सदस्य कहते हैं, उनके लिए आज, "जिंसीयत और जेन्डर एक दूसरे से अलग नहीं हैं, दोनों एक दूसरे में जुड़े हैं, दोनों की कोई स्पष्ट सीमा नहीं है।"

> जेन्डर पर सामूहिक चर्चा, और धीमी गति से बनती हुई समझ को पार करते हुए, सॅफो के एक सदस्य भावुकता से कहते हैं, "अगर हम एक सहायक समूह होने का दावा करते हैं, तो हमें अपनी वर्तमान जेन्डर समझ से सीमित नहीं होना चाहिए।" आगे कहते हैं, "कई लोग ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, और शायद ज़्यादा पढ़े–लिखे न हों; संभव है वे सॅफो के अलावा किसी और सहायक समूह के बारे में नहीं जानते। अतः वे बहुत उम्मीद लेकर आते हैं कि 'यह मेरी जगह है'। इसलिए हमें ध्यान रखना चाहिए की हम उन्हें एक सुरक्षित स्थान दें। . . . जहां वह अपनी पहचान खुलकर व्यक्त कर सकें और आश्वस्त हों की उनकी जिंसीयत का खुलासा नहीं होगा।"

उनका आग्रह है की नए लोगों को इन जटिल सवालों से जूझने के लिए बहुत समय मिलेगा, जैसे कि, "जेन्डर क्या है? जिंसीयत क्या है? कौनसे मुद्दे जिंसीयत और जेन्डर से जुड़े है?" संभव है कुछ लोगों के लिए यह सवाल इतने महत्वपूर्ण ना हों और वे केवल "एक ऐसा स्थान चाहते हैं, जहां वे दिल खोलकर बात कर सकें", इसलिए समूह को हर आने वाले जस्जेनिव के लिए दरवाज़े खुले रखने चाहिए।

इस तरह सॅफो, जस्जेनिव लोगों के लिए एक सामुदायिक जगह बन गई है; जो लोग राजनैतिक स्तर पर जुड़ना चाहते हैं, या कोई विशेष पहचान नहीं रखना चाहते, या फिर जपुजेनिव हैं, उनके लिए एक अन्य व्यापक मंच है – सॅफो फॉर इक्वॉलिटी (एस एफ ई) – जहां सैद्धांतिक चर्चा संभव है और वास्तव में होती भी है। हर सॅफो का सदस्य एस एफ ई से जुड़ा है, और एस एफ ई के कई सदस्य औपचारिक रूप से सॅफो के सदस्य ना होते हुए भी, सॅफो में सक्रिय रूप से काम कर सकते हैं। यह दोहरा ढांचा सॅफो को अपनी सदस्यता सम्मिलित रखने में मदद करता है और मानव अधिकार संगठनों से भी संबंध बनाए रखने में सहायक है।

समय के साथ साथ सम्पूर्णा की सदस्यता भी बदल गयी है। एक सदस्य कहते हैं, "शुरु में हम एफ टी एम लोगों के साथ काम करते थे। पर आप जानते हैं क्या होता है। . . . कोई आकर कहता है 'हमें समूह का सदस्य बनना है', और आप उसको सम्मिलित कर लेते हैं।" इसे समझाते हुए वे आगे कहते हैं, यह नेटवर्क "हर ऐसे व्यक्ति के लिए है, जो नियामक जेन्डर में फिट नहीं होता। . . . यह असंगति किसी भी रूप में हो सकती है, हर व्यक्ति का सफ़र अलग है।" हालांकि इस नेटवर्क का उद्देश्य ट्रांस* लोगों के साथ काम करना है, "इस समूह में अभी तक ऐसा कोई नहीं आया जो कहता है 'मेरा शरीर आदमी का है पर मैं किसी भी जेन्डर का चिन्ह नहीं चाहता' या 'मेरा शरीर औरत का है पर मैं किसी भी जेन्डर का चिन्ह नहीं चाहती'। हमारे समूह में लोग सर्जरी द्वारा शरीर को बदलने की सोच रहे हैं, या वे चिकित्सक तरीकों से शरीर में बदलाव लाना चाहते हैं।"

कुछ जटिल मुद्दे जिन पर अभी विवाद जारी है

जेन्डर की विभिन्न पहचानों को मान्यता देना एक तरफ है, समाज और राज्य की मुख्यधारा में इन पहचानों को बैठाना कुछ और ही। हाल में सरकार द्वारा कोशिश की जा रही है कि औरत व आदमी के अतिरिक्त एक '"अन्य" जेन्डर की श्रेणी का विकल्प भी रखा जाए है, पर इस कदम को पूरी तरह से सकारात्मक नहीं माना जा सकता। जैसे कि सम्पूर्णा के एक सदस्य समझाते हुए कहते हैं, "व्यावहारिक रूप से यह ठीक है, पर राजनैतिक रूप से नहीं। हम 'अन्य' नहीं कहलाना चाहते। एक ऐसी संरचना होनी चाहिए, जो औरत–आदमी के ढांचे को पार करे, पर ये क्या हो सकती है यह अभी हमें स्पष्ट नहीं है।"

> अपने जेन्डर को नाम देना कोई सरल प्रक्रिया नहीं, क्योंकि इस नाम के साथ बहुत कुछ और जुड़ा रहता है। लेस्बिट के सदस्यों ने चर्चा की कि वे किसी के जेन्डर को कैसे नाम देते हैं। "जब गांव से कोई जोड़ी आती हैं तब वे 'सामान्य' दिखते हैं, और हमें लगता है कि वे दोनों औरतें हैं। पर यहां आने के बाद वे अपना पहनावा, बाल इत्यादि बदल देते हैं। फिर हमें लगता है शायद उनमें से एक एफ टी एम है।" एक और सदस्य कहते हैं, "जब हम किसी को पॅन्ट–शर्ट में देखते हैं, हम खुद कहते हैं वे एफ टी एम है। हम उन्हें नहीं पूछते, 'तुम्हारा जेन्डर क्या है', हम खुद ही तय कर लेते हैं।" कई लोग अपने इस अन्तर्विरोधी व्यवहार से जूझ रहे हैं। हालांकि सब ये मानते हैं कि हर किसी का जेन्डर उनकी अपनी अंदरूनी भावना पर निर्भर है, फिर भी अधिकतर लोग किसी के जेन्डर को खुद ही नाम दे देते हैं, उनसे पूछ कर तय नहीं करते।

इस तरह के अनुमान लगाने का एक और पक्ष है। लेस्बिट में एक "एफ टी एम स्टाइल" उभरती जा रही है, जिसके बारे में कोई बात नहीं करता, पर कहीं न कहीं जो भी यहां आते हैं, वे उस रीति में ढल से जाते हैं, एक तरह से, बिना किसी के कहे उसे अपनाने के लिए सब मजबूर हो जाते हैं। एक सदस्य कहते हैं वे चाहते हुए भी अब दुपट्टा या आधी–साड़ी नहीं पहन सकते, हालांकि कभी–कभी उनका मन करता है। "हमने (ये कपड़े) पहनने बंद कर दिए क्योंकि हमने सब को कह दिया कि हम एफ टी एम हैं, और हालांकि हमें औरतों

के कपड़े पहनने पसंद हैं, अब हमें झेंप आती है।" आगे कहते हैं, "अगर हम साड़ी पहन लें, इसका यह मतलब नहीं कि हम एफ टी एम नहीं हैं!"

> हर नियम पर सवाल उठाने पर नई अनपेक्षित परेशानियां खड़ी हो जाती हैं। सॅफो फॉर इक्वॅालिटी के दो जपुजेनिव सदस्य अपने आप को लेस्बियन मानते हैं। उनकी इस पहचान ने समूह की जेन्डर और जिंसीयत पर समझ को हिला दिया। हांलाकि आज उन दोनों की स्वयं–निर्धारित पहचान समूह में स्वीकृत है, इसके पहले, और अब भी, इसके बारे में बहुत चर्चा होती रही है। इन दोनों में से एक सर्जरी करवाना चाहते हैं; दूसरे कहते हैं कि वे अपने शरीर को बदलना नहीं चाहते पर "अंदर से अपने आप को औरत महसूस करते हैं और औरतों से प्यार करते हैं" – जिनके साथ वे "औरतों जैसे लेस्बियन यौन संबंध" रखना चाहते हैं। विस्तार से कहते हैं, वे योनि में लिंग प्रवेश नहीं चाहते। यह सब सुन कर जहां हम सब इस चर्चा में उलझ जाते हैं कि क्या "लेस्बियन यौन संबंध" कोई विशेष यौन–कृत्य हैं, या ये कई सारे यौनिक–कृत्य हैं, जिसमें योनि–प्रवेश भी एक हो सकता है, वहीं, इन सब चर्चाओं के बावजूद, ये व्यक्ति अपनी पहचान के साथ, समूह में सम्मिलित हैं।

इंटरव्यू के समय यह दोनों जपुजेनिव सॅफो में नहीं थे, क्योंकि सॅफो मुख्य रूप से जस्जेनिव के लिए है। परन्तु एस एफ ई की सदस्यता ज़्यादा खुली और विस्तृत है, इसलिए वे इससे जुड़ पाए और यह एकमात्र स्थान है, जहां वे खुल कर अपने आप को व्यक्त कर सकते हैं। दोनों कहते हैं कि इस समूह से उन्हें बहुत समर्थन मिला।

इन समूहों के लिए एक और गंभीर मुद्दा रहा है जेन्डर–आधारित सत्ता का – समूह के अंदर और समाज में इसे कैसे पहचानें, और कैसे एक जागरुकता पैदा करें कि ये समाज और हर आपसी रिश्ते में किस तरह काम करती है। एक तरफ तो हर समूह और उसके सदस्य जेन्डर–नियमों को लगातार चुनौती देते हैं, और स्वयं चुनी जेन्डर–पहचान के अनुसार जीने की कठिनाइयां झेलते हैं, पर इस चुनौती को और आगे ले जाने के मकसद से सहयात्रिका के एक सदस्य कहते हैं:

> *पितृसत्ता हर तरफ है। पर लोग अपने बीच इसे पहचान नहीं पाते। . . . हमारे विचार में, जेन्डर और नारीवाद की समझ में कोई एकरूपता नहीं है। हम नारीवादी हैं, पर इस समूह में हमारे बीच केवल जिंसीयत एक साझा मुद्दा है। हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में हम जेन्डर के मुद्दों को अपने काम में ज़्यादा सम्मिलित कर पायेंगे, एक नारीवादी समझ बना पायेंगे, और तीसरा, अन्य अभियानों और संगठनों से जुड़ पाएंगे।*

सहयात्रिका के एक और सदस्य का कहना है, अभी तक हम "एक नारीवादी संस्था नहीं हैं, हम एक लोकतान्त्रिक संस्था हैं।" सम्पूर्णा के एक सदस्य के विचार में, "सामूहिक स्थान बनाना एक बात है, पर इसके ज़रिये एक राजनैतिक जगह स्थापित करना, कुछ और ही है। बहुत मुश्किल है। समूह के बहुत सारे सदस्य इसे राजनैतिक रुप से नहीं समझते।" अधिकांश समूह ऐसे मुद्दों पर एक साझी समझ बनाने की कोशिश कर रहे हैं, परन्तु यह काम धीमी गति से आगे बढ़ रहा है, क्योंकि तत्कालीन ज़रूरतों से निपटने में ही बहुत ताकत लग जाती है।

दैनिक स्तर पर यह नज़र आता है कि जेन्डर–आधारित सत्ता किस तरह काम करती है इस बारे में समूहों में जागरुकता है और कुछ चर्चा भी होती है। जिन क्वीयर जस्जेनिव की जेन्डर पहचान ऊपरी तौर से ऐसी नज़र आती है कि उन्हें कुछ विशेषाधिकार मिल सकते हैं, या जिनके निजी रिश्ते बाहर से हेट्रोसेक्शुअल दिखाई देते है, इनपर ये सवाल उठाए जाते हैं कि कहीं वे समाज के हेट्रोसेक्शुअल नियमों को तो नहीं दोहरा रहे? समूहों में यह अहसास बढ़ रहा है कि चर्चा इस बात पर केंद्रित होनी चाहिए कि हमारे बनाए गए रिश्तों में जेन्डर–आधारित सत्ता का क्या प्रभाव है, ना कि इस पर, कि किस जेन्डर पहचान में कैसा व्यवहार उचित है।

और आख़िर में

हमने जिन समूहों से गहराई में चर्चा की, वे सब अनेक रूप से जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दों से जूझ रहे थे, तथा क्वीयर जस्जेनिव और ट्रांस* लोगों की वास्तविकताओं को समझने के प्रयास में एक नयी भाषा विकसित कर रहे थे। हर समूह अपने सफर में जेन्डर–आधारित सत्ता, विशेषाधिकार, अधिकारहीनता के बारे में जागृत हैं, लोकतंत्र के नियम सूझ–बूझ से अपना रहे हैं, और नए विचारों और हकीकतों को अपने काम में लगातार जोड़ रहे हैं।

इन समूहों में क्वीयर जस्जेनिव और जेन्डर बाइनरी से हटकर जेन्डर विविधता को लेकर जो नयी समझ बन रही है, उसे महिला समूहों, अन्य क्वीयर समूहों और मानवाधिकार संगठनों को अपनाने की आवश्यकता है। ऐसा करने पर ही हम वे आवश्यक राजनैतिक, सामाजिक, और आर्थिक संसाधन जुटा पाएंगे जिससे सब जस्जेनिव अधिकारहीनता अनुभव करे बिना अपना जीवन व्यतीत कर पायेंगे। हेट्रोनॉर्मेटिव पितृसत्ता के विरुद्ध हमारे साझे संघर्ष का ये एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

एक कल्पित भविष्य की ओर

रिपोर्ट के पिछले अध्याय स्पष्ट करते हैं कि बाइनरी जेन्डर और हेट्रोनॉर्मेटिव जिंसीयत या अनिवार्य विषमलैंगिकता के नियमों पर आधारित हमारी सामाजिक व्यवस्था जेन्डर नियम उल्लंघन करने वालों के प्रतिकूल है, उसी तरह जैसे समाज वर्ग, जाती, धर्म, क्षमता–अक्षमता और उम्र के आधार पर कई व्यक्तियों और समुदाय के प्रतिकूल है। हमने यह भी देखा है कि हर निजी तथा सार्वजनिक स्थान में जस्जेनिव विशेष रूप से अलग–थलग कर दिए जाते हैं, और वे भेद–भाव और उत्पीड़न का शिकार बन जाते हैं। इसलिए जब हम उन लोगों के अधिकार की मांग उठाते हैं जो आम तौर पर इन जगहों में अधिकारहीन और कलंकित किए जाते हैं, तब ज़ाहिर है कि हमें जीवन के हर पहलू और हर संस्था को नयी नज़र से परखना होगा।

रिपोर्ट के इस अध्याय में हम, भिन्न श्रेणियों के नीचे, कुछ व्यापक चिंता के मुद्दों पर ध्यान देंगे, जिसमे कुछ स्थायी ज़रूरतों के साथ कुछ विशेष तत्कालिक मांगें और कार्य बिंदु भी शामिल हैं, जिन पर आसानी से अमल किया जा सकता है।

परिवार

अब तक गैर–नियामक जेन्डर वालों के साथ काम करने वाले समूहों की मांगें पुलिस अत्याचार से उन्हें मुक्ति दिलाने या सार्वजनिक स्थानों में उनको हिंसा से बचाने के मुद्दों तक सीमित रही हैं। परन्तु हमारा अध्ययन स्पष्ट करता है कि जस्जेनिव की विशेष परेशानियों का निवारण करने के लिए निजी स्थानों में, खास तौर पर परिवार में, हो रही हिंसा ये जूझना बेहद ज़रूरी है।

हमारे अध्ययन के निष्कर्ष बताते है की पैदायशी परिवार का रवैया न केवल क्वीयर जस्जेनिव के प्रति पर सब जस्जेनिव के प्रति अक्सर बहुत ही हिंसात्मक और रूखा होता है। जेन्डर और जिंसीयत प्रकट होने के पहले ही कई उत्तरदाताओं को उपेक्षा, अत्याचार और अन्य प्रतिबंध सहने पड़े; गैर–नियामक जेन्डर पहचान और पसंद ने उनकी ज़िंदगी और भी कठिन बना दी। परन्तु जब कभी मां–बाप, भाई–बहन या कियी अन्य रिश्तेदार ने भी उनका साथ दिया, तो समाज में उनका संघर्ष उस हद तक आसान हो गया। इसलिए पैदायशी परिवार में हस्तक्षेप करना अत्यावश्यक है।

§ अनिवार्य है कि क्वीयर समूह परिवार जैसे निजी स्थानों में हो रही हिंसा को अहमियत दें, साथ ही उन्हें ऐसी संस्थाओं से जुड़कर काम करना होगा जिनकी परिवारों तक पहुंच है।

§ विशेषकर महिला समूहों को, परिवार में हो रही हिंसा के मुद्दे को उतनी ही तीव्रता से उठाना होगा जैसे वह आज वैवाहिक हिंसा के मुद्दे को उठाते हैं।

§ अक्सर जस्जेनिव को शादी करने के लिए, अत्यंत दबाव और हिंसा द्वारा, मजबूर किया जाता है। इस मामले में, परिवार और समुदाय के दबाव को कम करने के लिए एक लगातार अभियान चलाने की आवश्यकता है।

§ परिवार में दमन और हिंसा के मुद्दों को उठाने के अतिरिक्त, आवश्यक है कि जस्जेनिव की बचपन से परवरिश इस तरह की जाए कि उन्हें आर्थिक आत्म–निर्भरता पाने का प्रोत्साहन मिले जिससे वह सामाजिक नियमों का विरोध कर सकें और अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकें

स्कूल और कॉलेज

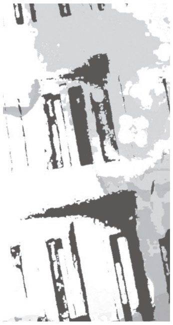

हांलाकि अपेक्षित है की औपचारिक शिक्षा प्रणाली हमें जीवन और आजीविका के कौशल प्रदान करेगी, असल में कई उत्तरदाताओं के लिए यह और एक हिंसक स्थान बन गयी। जेन्डर नियमों को सख्ती से लागू करने से युवकों की जिंसीयत पर कड़ी निगरानी रखने तक स्कूल विशेष रूप से सामाजिक नियमों को और मजबूत बनाते हैं ना कि उनमें परिवर्तन लाते हैं। जब उनकी जेन्डर और जिंसीयत बाधा बन गई, कई उत्तरदाताओं को पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी।

जस्जेनिव को स्कूल में अधिक स्वीकृति और समर्थन दिलाने के लिए एक रणनीति पर चिंतन करने की घोर आवश्यकता है, जिससे विभिन्नता को बढ़ावा मिले और शिक्षा प्रणाली में गढ़े पितृसत्तात्मक विचारों को जड़ से उखाड़ा जा सके।

§ स्कूल भी एक स्थान है जहां युवा अपनी जिंसीयत आज़माते हैं। हमारे अध्ययन में आधे से ज़्यादा उत्तरदाता अपनी यौन इच्छा और भावनाओं को छोटी उम्र में ही पहचान गए थे। यह सत्य हमारे विचार को बल देता है की यौन शिक्षा इस उम्र के लोगों के लिए अनिवार्य है।

§ अध्यापकों और प्रशासकों में होमोफोबिया और ट्रांसफोबिया इतना प्रचलित है (ट्रांस* और हमजिंसी लोगों के प्रति इतना वैर–भाव है) कि उन्हें जिंसीयत और जेन्डर के मुद्दों पर जागृत करना आवश्यक है। इस प्रक्रिया से धीरे–धीरे स्कूल एक ऐसा स्थान बन सकता है जहां युवा को अपनी जेन्डर और जिंसीयत का समर्थन मिले और उन्हें लगातार निगरानी, हिंसक रूप से खुलासा और कलंक न सहना पड़े।

§ स्कूल व्यवस्था में कुछ मामलों में जेन्डर विभाजन पर कम ज़ोर होना चाहिए – उदाहरण के लिए, स्कूल की वर्दी में, खेलों के चुनाव में, शौचालय के प्रावधान में। इसका यह मतलब नहीं कि जेन्डर को नकार दिया जाए; जेन्डर–विभाजित स्कूल की आवश्यकता है क्योंकि आज भी कई मां–बाप अपनी "लड़कियों" को ऐसी स्कूल में नहीं भेजेंगे जिस में लड़के भी हों। इसलिए जेन्डर के बंधे–बंधाए नियमों को खोल देने पर ज़ोर

होना चाहिए।

§ पाठ्य पुस्तकों में संस्कृति, समाज और इतिहास का एक सामान्य, छंटा–कटा, हेट्रोनॉर्मेटिव विवरण के बजाए अलग तरह से जी गई ज़िंदगियों की हक़ीकतों के बयान सचेत तौर पर शामिल करने चाहिए। जिस तरह आज पाठ्य पुस्तकों में जेन्डर पक्षपात व जातीय और सांप्रदायिक भेद भाव को मिटाने के लिए काम हो रहा है, उसी तरह इन पुस्तकों में जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दे लाने और परिवार के चित्रण को बदलने के लिए विश्लेशण और काम की ज़रुरत है।

§ क्वीयर जस्जेनिव जो दमन या हिंसा के कारण घर छोड़ने पर मजबूर हो जाते है, अपना शिक्षण पूरा नहीं कर पाते और अपने आप को मझधार में पाते हैं। ऐसी स्थिति में स्कूल और कॉलेज को सहायता करनी चाहिए जिससे यह लोग शिक्षा जारी रख सकें और/या कोई व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।

खेल

हमारे कई उत्तरदाताओं के लिए खेल का मैदान एक महत्वपूर्ण स्थान था। युवावस्था में जहां लोग अपने शारीरिक बदलाव और अपने जेन्डर की उलझनों से परेशान थे, वहां खेलों में भाग लेने से वह अपने शरीर के साथ एक सकारात्मक रिश्ता बना पाए।

हमारे इंटरव्यूज से स्पष्ट है कि खेल जगत में विशिष्ट हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है। जबकि अन्य औपचारिक स्थानों में जस्जेनिव को अक्सर अलगपन महसूस करना पड़ता है, खेल का मैदान उनके लिए एक सुखद विकल्प बन सकता है।

§ खेलों को स्कूल के कार्यक्रम में समर्थक रूप से जोड़ना आवश्यक है।

§ खेल जगत में जेन्डर की अहमियत कम करनी चाहिए और जेन्डर नियमों को तोड़ने वाले व्यक्तियों के लिए यह स्थान ज़्यादा सुरक्षित होना चाहिए। जेन्डर कोई भी हो, हर व्यक्ति को अपनी पसंद की खेल खेलने या किसी अन्य कार्य में भाग लेने का अधिकार होना चाहिए।

§ खेल के मैदान में हर व्यक्ति को अपनी पोषाक तय करने का अधिकार होना चाहिए।

§ स्कूल–कॉलेज के दौरान और शिक्षण की समाप्ति के बाद भी, सब जस्जेनिव को खेलों में भाग लेने के अवसर और खेल की जगहें, दोनों मिलनी चाहिएं।

§ प्रतियोगी खेल जेन्डर विभाजित होते हैं। इंटरसेक्स विविधता वाले लोगों को उनकी अपनी, जी जा रही, जेन्डर पहचान के अनुसार इन खेलों में भाग लेने की अनुमति मिलनी चाहिये, ना कि कोई शारीरिक परीक्षण के आधार पर।

मानसिक स्वास्थ्य

हमारे उत्तरदाताओं में से 18 ने आत्महत्या करने की कोशिश की, कुछ ने कई बार, और कई औरों ने इसके बारे में गंभीरता से सोचा। इसके अलावा, मानसिक तनाव के कई और रूप पेश आये : अपने आप को हानि पहुंचाना, बचपन में बहुत उदास रहना, कम आत्म सम्मान होना, अत्यंत अकेलापन होना, छिप–छिप के रिश्ते बनाना और टूटने पर एकांत में दर्द सहना। एक उत्तरदाता कई देर तक यह सोच कर घुलती रही की उसके हमजिंसी रिश्ते की वजह से उसके मां बाप जल्दी गुज़र गए; एक और को सार्वजनिक यातायात इस्तेमाल करते समय बेहद शर्म आती क्योंकि उसे बार बार कहना पड़ता वह "लड़की" है। कई मां–बाप अपने बच्चों को नाना प्रकार के नीम–हकीम और मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सक के पास ले गए इस उम्मीद से कि बच्चे के इस "समस्याजनक" व्यवहार का "इलाज" हो जाएगा।

क्वीयर जस्जेनिव के जीवन में इतना सामाजिक और पारिवारिक नियंत्रण रहता है और उन्हें इतना अकेलापन, हिंसा और मानसिक तनाव झेलना पड़ता है कि उनके लिए अच्छी मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं और सलाहकार उपलब्ध कराना अत्यावश्यक हो जाता है।

§ शुरुआती तौर पर, अलग–अलग इलाकों में ऐसे मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की सूचि तुरंत तैयार करनी चाहिए जो क्वीयर जस्जेनिव का समर्थन करते हों। कुछ समूह ऐसी सूचि, अनौपचारिक रूप से, स्थानीय स्तर पर बना रहे हैं पर इस जानकारी को एकत्रित करके क्वीयर समूहों में फैलाने की आवश्यकता है।

§ स्वास्थ्य क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को क्वीयर समूहों का सहयोग लेकर संवेदनशीलता अभियान चलाने चाहियें जिससे अच्छे सलाहकारों और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की संख्या में बढ़त हो सके।

§ मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों को सक्रिय रूप से क्वीयर लोगों तक पहुंच बनानी चाहिए। अपने काम के दौरान, पर्चियों के ज़रिए, अपने क्लीनिक में पोस्टर द्वारा, स्कूल में कार्यशाला रखकर, उन्हें प्रचार करना चाहिए कि वे क्वीयर लोगों के प्रति संवेदनशील हैं।

§ जेन्डर और जिंसीयत को लेकर टकराव काफी छोटी उम्र से शरू हो जाता है, इसलिए इन मुद्दों के जानकार सलाहकारों की बहुत ज़रुरत है, ना केवल क्वीयर जस्जेनिव के लिए पर उनके परिवार के लिए भी; ना केवल वयस्कों के लिए पर शिक्षा संस्थाओं के लिए भी।

§ आज तक क्वीयर लोगों का "इलाज" पुराने घिसे–पिटे पर फिर भी प्रचलित चिकित्सीय तरीके से होता रहा है, जिसके अनुसार वे और उनके रिश्ते रोगी माने जाते हैं क्योंकि ये समाज के नियमों के प्रतिकूल है। इसके बदले एक समानुभूति–युक्त दृष्टिकोण अपनाना होगा, जो उन्हें समझे, उनके बारे में पूर्व अनुमान ना लगाए, और हर व्यक्ति की विशेष ज़रूरतों को ध्यान में रखे।

चिकित्सा प्रणाली

कई उत्तरदाताओं के लिए चिकित्सा प्रणाली – डॉक्टर, नर्स, प्राइवेट क्लिनिक, अस्पताल वार्ड, अन्य रोगी – के साथ संपर्क का अनुभव अच्छा नहीं था। जो लोग अपने आप को "औरत" मानते थे या "औरत" माने जाते थे, उनको भी वैवाहिक स्थिति के बारे में टेढ़े सवाल झेलने पड़े और वास्तव या संभावित होमोफोबिया का सामना करना पड़ा; जो लोग खुले रूप से जेन्डर नियमों का उल्लंघन कर रहे थे, उन्हें नासमझी, असंवेदनशीलता और अत्याचार सहना पड़ा। इसी सब से बचने के लिए कई लोग डॉक्टर के पास जाते ही नहीं थे, चाहे उनकी समस्या गंभीर रही हो या छोटी–मोटी, और यूं उनके स्वास्थ्य पर सीधा असर पड़ा।

हालांकि चिकित्सकों और अन्य संस्थाओं ने जपुजेनिव की स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतों पर ध्यान दिया है और एचआईवी/ऐड्ज़ के संदर्भ में संसाधन भी उपलब्ध हैं, आम तौर पर चिकित्सा प्रणाली इस बात से बिल्कुल अनजान रहती है कि लोग जेन्डर और जिंसीयत को लेकर अपने जीवन में किस प्रकार के विविध चुनाव करते हैं।

§ चिकित्सा शिक्षण में नवीनीकरण की आवश्यकता है। लोगों की जी गयी वास्तविकताओं से सेक्स, जेन्डर, जिंसीयत और शरीर के बारे में जो नया ज्ञान प्राप्त हो रहा है, इसमें शामिल किया जाना चाहिए। व्यापक परिवर्तन लाने के लिए चिकित्सा और मानसिक स्वास्थ्य के पाठ्यक्रम बदलने होंगे ताकि इनमें जेन्डर और जिंसीयत के मुद्दे अपने सभी पहलू समेत शामिल हों।

§ चिकित्सकों और स्वास्थ्य सेवा कार्यकर्ताओं को क्वीयर जस्जेनिव की विशेष ज़रूरतों पर ध्यान देना चाहिए, उनके यौन संबंधी स्वास्थ्य के मुद्दों और उनके प्रजनन संबंधी अधिकारों को मान्यता देनी चाहिए। साथ ही, गैर–नियामक जिंसीयत, स्वयं चुनी जेन्डर पहचान और ट्रांस* शरीर को मान्यता देनी चाहिए और इनका सम्मान करना चाहिए।

§ संवेदनशील चिकित्सकों की घोर आवश्यकता है – स्त्रीरोग विशेषज्ञ, एन्डोक्रिनॉलजिस्ट, शल्य–चिकित्सक, मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ – ताकि जो लोग चिकित्सा हस्तक्षेप द्वारा शरीर को बदलना चाहते हैं, इन तक आसानी और सुरक्षित रूप से पहुंच सकें। इससे संबंधित, कई मुद्दों पर जानकारी सबको आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए, जैसे कि, हॉर्मोन उपचार किस उम्र से आरंभ हो सकता है, शल्य संबंधी प्रक्रियाओं की जानकारी, हर चरण में संभावित मानसिक और शारीरिक दुष्प्रभाव और इनसे निपटने का उत्तम तरीका। ट्रांस* समुदाय की मांग स्पष्ट है; वे अनुमति नहीं, जानकारी चाहते हैं, वे मनोरोग चिकित्सक नहीं, सलाहकार चाहते हैं।

§ हमारे इंटरव्यूज़ से स्पष्ट हुआ कि इंटरसेक्स विविधता वाले लोगों के मुद्दों पर जानकारी बहुत ज़रूरी है। विशेषकर चिकित्सकों को इन मुद्दों पर शिक्षित होना चाहिए। नवजात शिशु के शरीर को "पुरूष" या "स्त्री" के मानक अनुसार बदलने के लिए कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। यदि कोई हस्तक्षेप होता है, व्यक्ति की सूचित सहमति से होना चाहिए।

जीविका

हमारे कई उत्तरदाता उस अधिकारहीनता की जकड़ में फंसे हुए थे जिसको हमने "अभावों का घेरा" कहा है, और उनके लिए यह स्थिति लगातार बनी रही। गरीबी, गैर–नियामक जेन्डर और जिंसीयत के कारण भेद भाव और हिंसा, अकेले या प्रेमी के साथ घर से भाग जाने पर मजबूर होना, स्कूल या कॉलेज की पढाई पूरी ना कर पाना, नौकरी ढूंढने और उसमें टिके रहने का संघर्ष, नयी जगह में पैर जमाना, और इन कठिन परिस्थितियों के कारण अपने स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों से निपटना . . . कुल मिलाकर एक दुष्चक्र बन जाता है।

मौजूदा हालात में नौकरी मिलना वैसे ही मुश्किल है, पर क्वीयर जस्जेनिव की और भी कुछ खास परेशानियां होती है, जिन्हें सबको स्वीकारना और संबोधित करना होगा।

§ क्वीयर समूहों को दृढ़ता से प्रयास करना चाहिए, कि ज़रुरतमंद लोगों के लिए शैक्षिक स्कॉलरशिप और कौशल प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध कराएं। इससे ये लोग स्थिर, सतत् और सार्थक आजीविका ढूंढ पायेंगे या लघु उद्योग स्थापित कर पायेंगे।

§ युवा और किशोर जस्जेनिव के साथ काम कर रहे समूहों को ध्यान देना चाहिए कि वे उन्हें कुशलता और क्षमता प्राप्त करने में सहायता दें जिससे वे आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर बन पायें और जेन्डर आधारित निम्नतम स्तर के काम में ना फंसे रहें।

§ कुछ बड़ी कंपनियों ने क्वीयर लोगों को नौकरी देने की नीतियां बनायी हैं। ऐसी नीतियां अन्य निजी और सार्वजनिक कंपनियों को भी अपनानी चाहिए।

सार्वजनिक स्थान

ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों में जेन्डर के नियम सख्ती से लागू होते हैं, इसलिए कई उत्तरदाता निकट के बड़े शहर की ओर आकर्षित हुए, जहां पॅन्ट पहनने, या छोटे बाल रखने की इजाज़त होती है, और जहां सार्वजनिक स्थान एक तरह से गुमनाम रहने का मौका भी देते हैं। परन्तु यहां भी, जेन्डर विभाजित स्थान परेशान करते रहे, जैसे सार्वजनिक शौचालय, ट्रेन या बस में आरक्षित सीटें, या मॉल और हवाई अड्डे में सुरक्षा जांच। इन स्थानों में "औरत" ना दिखने वाले जस्जेनिव को अक्सर उत्पीड़न और अत्याचार सहना पड़ा।

हांलाकि जेन्डर विभाजन महिला आंदोलन की एक जायज़ मांग रही है, क्योंकि इससे कई जस्जेनिव के लिए कई मामले सहज, सुरक्षित और संभव हो जाते हैं, परिणाम उल्टा भी हो जाता है, जिससे कई और जस्जेनिव (और जपुजेनिव) के लिए मामले और कठिन, असुरक्षित और असंभव भी हो जाते हैं।

§ अपने जेन्डर व्यवहार को लेकर दूसरों की अपेक्षाओं से लगातार जूझने की चिंता, लोगों के ताने और धमकियों से बचने के तरीके ढूंढ़ने की आवश्यकता, ये साफ़ करते हैं कि हम सब को जेन्डर विविधता के प्रति संवेदनशील होना होगा।

§ हमें स्वीकारना होगा की सार्वजनिक स्थानों में पितृसत्ता के कारण, सिसमेन के अलावा, बाकी सभी जेन्डर के व्यक्तियों का दमन होता है। इसके तरीके एक समान हो सकते है या विभिन्न। हांलाकि इस जटिल समस्या का कोई तत्कालीन या व्यापक हल नहीं है, हमें छोटे और बड़े पैमाने पर, विशिष्ट और सामान्य विकल्प ढूंढते रहना चाहिए।

§ कम से कम, जब लोग मॉल या हवाई अड्डे जैसी जगहों पर जाते हैं, जहां सुरक्षा जांच होती है, उन्हें इच्छा अनुसार "पुरुष" या "महिला" की लाइन चुनने का हक़ होना चाहिए, चाहे वे अपना जेन्डर जिस भी तरह से व्यक्त करते हों।

सहायक समूह

हमने देखा है किस तरह कई उत्तरदाता क्वीयर समूहों से संपर्क बनाने के बाद ही सालों के अकेलेपन को दूर कर पाए। इसे नकारा नहीं जा सकता कि क्वीयर एल बी टी सहायक समूहों की बहुत ज़्यादा आवश्यकता है, भले ही वे आर्थिक सहयोग से काम करते हों या नहीं, क्योंकि उनकी मौजूदा संख्या बहुत कम है।

हालांकि एक दशक पहले की तुलना में आज क्वीयर लोगों के लिए ज़मीनी तौर पर या फिर साइबरस्पेस में, कई सारी मिलने–जुलने की जगहें बन गई हैं, इन तक शहरी और उच्च वर्ग के लोग ही पहुंच पाते हैं। इनमें और लोगों को सम्मिलित करने के लिए विशेष रणनीति बनानी होगी।

§ उन क्वीयर जस्जेनिव तक पहुंचना अत्यावश्यक है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में या छोटे कस्बों–शहरों में रहते हैं, और जिनकी इन्टरनेट या अंग्रेज़ी प्रसार माध्यम तक पहुंच नहीं है।

§ एल बी टी समूह, महिला समूह, मानव अधिकार समूह और वे समूह जो जेन्डर और जिंसीयत पर काम कर रहे हैं, इन सब को अपने काम में क्वीयर जस्जेनिव की विशेष परेशानियों को ध्यान में रखना चाहिए। ऐसा होने से क्वीयर जस्जेनिव इन समूहों से बेझिझक संपर्क बना पायेंगे। ज़रूरी है कि और भी बहुत सारे महिला और क्वीयर समूह क्वीयर जस्जेनिव की स्थायी और तत्कालिक ज़रूरतों पर ध्यान देकर उनका समर्थन करें।

§ क्वीयर जस्जेनिव के लिए ऐसे स्थान भी होने चाहिए जहां वे, केवल संकट में नहीं, पर यूं ही आ सकें, अपने जैसे लोगों को मिल सकें, मित्र और समुदाय बना सकें, संगठित हो सकें और एक दूसरे को सहारा दे सकें। इस प्रकार की व्यवस्था ज़रूरी है और संभव भी, अगर अन्य सामुदायिक और लाभ–निरपेक्ष संस्थाएं अपनी जगह का उपयोग दूसरों को करने दें।

§ आवश्यक है की जो समूह एल बी टी लोगों के साथ मुख्य रूप से काम कर रहे हैं, वे एक दूसरे के साथ गटबंधन बनाएं ताकि वे साधन आपस में बांट सकें, एक साथ ज़ोरदार आवाज़ उठा सकें, अपनी दृश्यता बढ़ा सकें और ज़्यादा प्रभावशाली रूप से क्वीयर संगठन और महिला समूहों में भूमिका अदा कर सकें।

कानून और सरकार

स्पष्ट है की जिन लोगों को वर्ग और जाती आधारित विशेषाधिकार नहीं हैं या जिन्हें शिक्षण और नौकरी पाने के लिए बराबरी का मौका नहीं है, उनके लिए गैर–नियामक जेन्डर और जिंसीयत का चयन उन्हें और भी अधिकारहीन बना देता है। अतः जब हम अधिकारों की बात करते हैं तब हमें क्वीयर जस्जेनिव के जीवन में अलगाव के इन सारे पहलुओं को देखते–समझते हुए ही उनके लिए सरकार से अधिकार, सहायता और सुरक्षा की मांग करनी होगी।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने आईपीसी धारा 377 की महत्वता कम करके सरकार को मजबूर कर दिया कि वे क्वीयर व्यक्तियों को कानूनी न्याय दिलाने की पहल करे। उत्तरदाताओं और एल बी टी कार्यकर्ताओं से बातचीत के दौरान स्पष्ट प्रकट हुआ कि कई और विशिष्ट उपाय की ज़रुरत है। ये सुझाव क्वीयर और ट्रांस* कार्यकर्ताओं की सहमति से तय होने चाहिए ताकि ये पितृसत्ता, ट्रांसफोबिया और होमोफोबिया से बचाव का काम कर सकें।

§ भेद–भाव के खिलाफ़ ऐसा कानून होना चाहिए, जो धारा 377 के फैसले के अनुसार क्वीयर जस्जेनिव (और सब क्वीयर और ट्रांस* लोगों) के मूल नागरिकता के अधिकार सुरक्षित करे।

§ जस्जेनिव को एकसाथ जोड़ी के रूप में रहने का कानूनी हक़ मिलना चाहिए, जिससे उन्हें भी वे सब अधिकार प्राप्त हों जो अन्य हेट्रोसेक्शुअल जोड़ों को प्राप्त हैं, जैसे संपत्ति से जुड़े अधिकार, संयुक्त बैंक खाता खोलने का अधिकार, अपने साथी के लिए चिकित्सा संबंधी निर्णय लेने का अधिकार, और वसीयतनामा में साथी का नाम लिख पाने का अधिकार।

§ जैसे कि ऊपर विस्तार में कहा जा चुका है, कई विषय सरकार के हाथ में हैं, जैसे शिक्षण के पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों की विषय सूची से लेकर हवाई अड्डे जैसे सार्वजनिक स्थानों में विनियम, जिन्हें जेन्डर के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है, जिससे वे कम हेट्रोनॉर्मेटिव हों और विभिन्न लोगों की जी गई वास्तविकताओं को सम्मिलित करते हों।

§ सरकार को विविध तरीकों के ज़रिये ऐसी स्थिति पैदा करनी चाहिए जिससे हर व्यक्ति अपनी जेन्डर पहचान के अनुसार जी सके। जेन्डर पहचान को औपचारिक रूप से बदलने के लिए नियमों को स्पष्ट बनाना, और लोगों को अपने स्वयं चुने जेन्डर के अनुसार पहचान पत्र जारी करना (भले उन्होंने शारीरिक बदलाव किये हैं या नहीं) अत्यावश्यक है। यह परिवर्तन हर कानूनी दस्तावेज़ के लिए लागू होना चाहिए – जैसे राजपत्र, राशन कार्ड, पासपोर्ट इत्यादि।

§ जेन्डर विविधता को मान्यता देने के लिए जेन्डर की परिभाषा औपचारिक रूप से विस्तृत होनी चाहिए। कुछ राज्यों ने स्त्री व पुरुष जेन्डर के अतिरिक्त एक "अन्य" जेन्डर की श्रेणी जोड़ी है। यह एक स्वागत के योग्य पर अपर्याप्त कदम है।

§ कुछ देशों में सरकार जेन्डर संबंधी चिकित्सा और हस्तक्षेप के लिए आर्थिक सहायता देती है। ऐसा प्रावधान हमारे यहां भी होना चाहिए।

क्वीयर जस्जेनिव के मुख्य मुद्दों और परेशानियों को समझने के प्रयास में इस अध्ययन ने सार्वजनिक और निजी, दोनों क्षेत्रों पर ध्यान दिया क्योंकि परिवार, स्कूल, निजी प्रेम के रिश्ते, आम तौर पर अदृश्य होते हुए भी, उनके जीवन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। यही वे स्थान और संस्थाएं हैं, जो हमारे जीवन को नियंत्रित करती हैं और जिनमें हम सबसे ज़्यादा अदृश्य हैं, या फिर शोषित, असुरक्षित और अपमानित हैं। ऊपर दी गयी मांगें व्यापक तो नहीं हैं पर वे उन सब मुद्दों की तरफ इशारा करती हैं जो ज़ोरदार रूप से उत्तरदाताओं के कथन से उभर कर आए। क्योंकि बात लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी की है, बदलाव भी सभी स्तरों पर ज़रूरी है।

गठबंधन अनिवार्य होते हैं

हेट्रोनॉर्मेटिव, पितृसत्तात्मक, जेन्डर बाइनरी दुनिया में इतने बुनियादी बदलाव लाने के लिए गठबंधन बनाने अनिवार्य हो जाता है। कम से कम हमें क्वीयर जस्जेनिव के लिए समर्थक ढांचे बनाने होंगे, चाहे वे अलग रहें या परिवार के बीच, और इस काम की ज़िम्मेदारी क्वीयर और महिला समूहों को लेनी होगी। इस दौरान, क्वीयर और महिला समूह के बीच और उनके बाहर भी, इस पूरी चर्चा को आगे ले जाना होगा। हमें चाहिए कि क्वीयर जस्जेनिव की तरफ़ से सरकार को मांगें पेश करते समय नारी आंदोलनों में जो हमारे मित्र–सहयोगी हैं वे मज़बूती से हमारे साथ खड़े हों; हमें उनका समर्थन चाहिए उस लड़ाई में जो गैर–नियामक जस्जेनिव पर होने वाले उस नियंत्रण और हिंसा के खिलाफ़ है जिसे उन्हें इसलिए झेलना पड़ता है कि वे बस अपनी चुनी ज़िन्दगी जीना चाहते हैं और जिस सिलसिले में वे आए दिन और नाकाम साबित होने वाली दो जेन्डर प्रणाली अनायास तोड़ा करते हैं।

सुराख़दार जेन्डर सीमाओं की ओर

हमारा अध्ययन एक ऐसी कल्पित जेन्डर व्यवस्था की झलक दिखलाता है जो मौजूदा दर्जाओं वाले, अलंघ्य, बाइनरी ढांचे को परिवर्तित करके उसे सबके लिए समान, सुराख़दार और अनेकता पर आधारित बना दे।

जैसे की हमने देखा, उत्तरदाताओं की जी गई वास्तविकताएं और उनकी बातें स्पष्ट करती हैं की मर्दानगी और नारीत्व की कोई एक परिभाषा नहीं है। जब लोग अपने लिए एक जैसे शब्द इस्तेमाल करते भी हैं, हरेक के लिए इनके मायने अलग हो सकते हैं। विविध जेन्डर पहचानों से ताक़त पाकर सीमाओं को खींचा, ढकेला, मसला जा रहा है, यानी लोगों का जेन्डर की एक श्रेणी से दूसरी में आते–जाते रहने का सिलसिला तो वैसे भी जारी है।

एक तरफ़ उत्तरदाताओं ने इस जेन्डर विभिन्नता की बात की, और दूसरी ओर उन्होंने लगभग लगातार हिंसा की बात की, जो उन्हें घर, स्कूल–कॉलेज, सार्वजनिक स्थानों, अपने काम की जगह में, अपने समुदाय में, और दोस्तों व अनजान व्यक्तियों से झेलनी पड़ी, जब भी उन्होंने जेन्डर और जिंसीयत के किसी भी नियम को लांघा। जेन्डर नियमों का यूं हिंसात्मक ढंग से अनुपालन करवाने की बजाय एक समानतावादी और स्वैच्छिक जेन्डर व्यवस्था बनानी होगी। जो लचीलापन लोगों के व्यक्तिगत जीवन में देखने को मिलता है, उसे समाज की सामूहिक चेतना का भाग बनाना होगा।

> भले दुनिया में जेन्डर की अहमियत कम हो या ज़्यादा, जेन्डर की श्रेणियों को कम कड़ा होना होगा, और जेन्डर के निदेश ढीले करने होंगे। जब जेन्डर श्रेणियों की सीमा ही अस्पष्ट होगी, तो नियंत्रण और नियमों के घटने से उन्हें पार करना आसान होगा। ऐसी स्थिति में लोग इच्छानुसार किसी जेन्डर की सीमा को पार कर, या इसके दोनों ओर अपने लिए जगह बनाकर, दावे के साथ विविध जेन्डर पहचानों को अपना पायेंगे और नए मायने दे पाएंगे।

यह परिवर्तन, तत्कालीन और लंबे अरसे के दौरान, सार्वजनिक और निजी स्तर पर, समाज की सभी संस्थाओं और व्यवस्थाओं में लाना होगा। जेन्डर विभाजित स्थानों की कार्यप्रणाली परिवर्तित करना एक तात्कालिक कदम हो सकता है। लंबे अरसे के बदलाव के लिए जागृति और संवेदनशीलता पैदा करने के लिए व्यापक अभियान की ज़रुरत है।

ऐसे परिवर्तन के प्रभाव से समाज की पूरी व्यवस्था बदल जाएगी। हेट्रो पितृसत्तात्मक व्यवस्था सिसजेन्डर लोगों को विशेषाधिकार देती है और जेन्डर आधारित सत्ता निर्धारित करती है। हमें जेन्डर के बीच के इस वर्गीकरण को मिटाने का प्रयास करना होगा। यदि हम चाहते हैं कि लोग एक जेन्डर से दूसरे के बीच आसानी से जा सकें, तो किसी भी जेन्डर को दरकिनार नहीं किया जा सकता।

शरीर और जेन्डर की इस ऊबड़–खाबड़ ज़मीन पर, हमारे लिए कुछ मुद्दे साफ़ उभर के आते हैं :

लोग अपनी ज़िंदगी नाना प्रकार से जी रहे हैं। हांलाकि मन करता है कि हम तमाम जेन्डर को एक बहती लहर के रूप में देखें, हर एक जेन्डर पहचान की विशिष्टता पहचानना भी ज़रूरी है। शायद हम जेन्डर की परिभाषा में एक अलग तरह का लचीलापन ढूंढ रहे हैं जिसमें बहाव वाले निराकार, अस्थिर मायने न हों पर जिसके अंतर्गत हम यह समझ सकें कि लोग किसी एक मकाम पर बिल्कुल स्पष्ट जेन्डर स्थान और पहचान अपनाते हैं, लेकिन अपनी ज़िंदगी के सफ़र के दौरान इस पहचान की रूपरेखा भी बदल सकते हैं, और एक स्थान से दूसरे स्थान तक भी जा सकते हैं। 8

कुछ लोगों के लिए जेन्डर बिल्कुल स्थायी है, औरों के लिए जेन्डर एक खोज और परिवर्तन का सफ़र है। इसलिए थोपी गयी बाइनरी के नियमों से हटकर जेन्डर विविधता के लिए जगह बनाते रहना ज़रूरी है।

व्यक्ति का शरीर उसकी पहचान का अटूट हिस्सा है। बाइनरी के वे नियम बहुत ही सीमित हैं, जिनके आधार पर तय किया जाता है कि कौन से शरीर "सामान्य" हैं, लेकिन उन सब प्रकार के शरीर को भी मान्यता मिलनी चाहिए जो उस सीमित "सामान्य" से अलग हैं। साथ ही, यह समझना आवश्यक है कि जो लोग अपने शरीर को चिकित्सिय हस्तक्षेप द्वारा बदलना चाहते है, उनके सुख और स्वास्थ्य के लिए यह अनिवार्य है, केवल एक विकल्प नहीं।

अंत में, हम सब को अपने सोचने, काम करने और लोगों से बर्ताव करने का ढंग बदलना होगा, सामने वाले के जेन्डर को खुद ही पढ़ने, समझने के बदले उनसे पूछना होगा वे किस पहचान से जाने जाना चाहते हैं।

और जेन्डर का एक बहुत ही ज़रूरी अंश है सहमति!

परस्पर
निर्मित
मान्यता देना
खुली सीमाएं
नयी परिभाषाएं
लचीलापन
सहमति
सृजन
ंदरूनी
परिवर्तन
संफर

परिशिष्ट

परिशिष्ट 1 :

yfc;k & ,d ukjhoknh Doh;j ,y ch Vh leg

1995 में बंबई में स्त्री संगम के रूप में हमारी शुरुआत हुई, और तब से ही हमारी मुख्य चिंता यह रही है कि हम क्वीयर ज़िंदगियों के अकेलेपन और अदृश्यता को कैसे दूर करें और एल बी टी लोगों के लिए सुरक्षित जगह कैसे बनाएं। स्वायत्त नारीवादी आंदोलन और क्वीयर अधिकारों के संगठनों, इन दोनों में ही हम अपनी जगह पाते हैं। नारीवादी और मानव अधिकार संगठनों के साथ सामाजिक अन्याय, हिंसा, राजकीय दमन, और कट्टरवाद के खिलाफ़ हम काम करते आए हैं; और अलग–अलग अधिकारहीन समुदायों के संघर्षों के साथ जुड़ कर काम करते रहना चाहते हैं।

हमारा काम मुख्य रूप से इन मुद्दों के इर्द–गिर्द रहा है:

§ vfHk;ku & क्वीयर समुदायों के विशिष्ट मुद्दों के साथ–साथ महिला अधिकारों के मुद्दों पर अभियान। 1997 में, मुंबई में अन्य संगठनों के साथ मिलकर एल जी बी टी अधिकारों पर रणनीति तैयार करने के लिए हमने भारत की पहली राष्ट्रीय कार्यषाला का आयोजन किया था। स्वायत्त नारीवादी आंदोलन के 1997 और 2006 के, और विमेन्स स्टडीज़ के 2005 और 2008 के राष्ट्रीय सम्मेलनों और ऐसी ही अन्य संगोष्ठियों में जेन्डर और जिंसीयत के कारण दरकिनार लोगों के मुद्दों पर हम नियमित रूप से सत्र व कार्यशालाएं आयोजित करते आए हैं। 2011 में हमने *हमारी ज़िंदगी, हमारी चॉइस* नाम के अभियान का संचालन किया, जो पसंद, सहमति और जिंसीयत के मुद्दों पर केन्द्रित था और इसमें शहर के कई अन्य नारीवादी समूह भी शामिल थे।

§ lkfyMfjVh & अन्य क्वीयर समूहों, नारीवादी संगठनों और सामाजिक आंदोलनों के साथ निरंतर सहयोग। धारा 377 के विरुद्व चल रहे अभियान, और मुंबई में क्वीयर आज़ादी मार्च तथा अन्य कार्यक्रमों के आयोजन का हम हिस्सा रहे हैं। औरतों और क्वीयर लोगों पर होने वाली यौन हिंसा के लिए बेहतर कानूनों की मांग पर चल रहे अभियान में भी हम सक्रिय रहे हैं।

§ yfLc;u vkj ckbZlsDl'kqvy vkSjrksa rFkk Vªkal* yksxksa dks lg;ksx & फ़ोन व रूबरू काउंसलिंग के ज़रिये (हम छः वर्षों से एल बी टी लोगों के लिए एक फ़ोन हेल्पलाईन चला रहे हैं); परिवारों द्वारा हिंसा व दमन की स्थिति में हस्तक्षेप करके; आश्रय व आजीविका ढूंढ़ने में सहयोग देकर; आजीविका प्रशिक्षण / पढ़ाई चालू रखने में नारीवादी व क्वीयर संगठनों की मदद से पैसा इकट्ठा करके मदद। हमने राष्ट्रीय स्तर पर तीन रिट्रीट और बैठकें भी आयोजित की हैं, खासकर ऐसे लोगों के लिए जिन्हें अपने शहरों / कस्बों / गांवों में क्वीयर समूहों की गैर–मौजूदगी में इस तरह का सहयोग नहीं मिल पाता।

§ Doh;j vfHkO;fDr dks fy, txg cukuk & हम 1997 से *स्क्रिप्ट्स* नामक एक पत्रिका निकालते आए हैं, जिसके अब तक 14 संस्करण छाप चुके हैं। यह पूरी तरह से स्वायत्त व सामूहिक प्रयास है। हमने क्वीयर लोगों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विविध कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं, और हमारे फ़िल्म क्लब *सिनेलेबिया* में हर महिने क्वीयर और नारीवादी फ़िल्मों का प्रदर्षन किया जाता है।

हमसे संपर्क करने के लिए हमें stree.sangam@gmail.com पर ईमेल करें

हमारी वेबसाईटः www.labiacollective.org

परिशिष्ट 2

STATEMENT OF ACCOUNTS

A project of this nature and scope would not have been possible without some funding, even for a group like LABIA that otherwise functions as a non-funded collective. We received two grants, one for the initial research and the other for the writing and dissemination, for a total of INR 14,00,000.

The broad expenditure breakup is as given below (in INR).

Expenses for data collection (travel, accommodation, logistics) x 6 cities	2,50,000
Honorarium for research team: 11 persons x 1 year	1,75,000
Honorarium for analysis and writing team: 4 persons x 3 years	5,00,000
Projected costs for design, printing and translation of report (Hindi)	1,00,000
Dissemination programme costs (travel, accommodation, logistics) x 6 cities	2,50,000
Equipment, reference materials, stationery, postage & overheads	1,00,000
Miscellaneous	25,000
Total	**14,00,000**

परिशिष्ट 3

SELECT RESOURCES

§ Bettcher, T., Garry, A. (Eds.). (2009). Transgender Studies and Feminism: Theory, Politics, and Gendered Realities. (Special issue). Hypatia, 24(3).

§ Bornstein, K. (1995). Gender outlaw: On men, women, and the rest of us. (vintage books ed.) New York. Vintage Books.

§ Bornstein, K., Bergman, S., B. (Ed.). (2010). Gender outlaws: The next generation. Berkeley, California. Seal Press.

§ Broom, K., (Producer), & Rosskam, J. (Director). (2008). Against a trans-narrative [Documentary]. (Available from The Video Data Bank, www.vdb.org).

§ Creating Resources for Empowerment in Action. (2012). Count me IN!: Research report on violence against disabled, lesbian, and sex-working women in Bangladesh, India, and Nepal. New Delhi.

§ Feinberg, L.(1996). Transgender warriors: Making history from Joan of Arc to Dennis Rodman. Boston. Beacon Press.

§ Fernandes, B. (Ed.). (1999). Humjinsi : A resource book on lesbian, gay and bisexual rights in India. Bombay: India Centre for Human Rights and Law.

§ Ghosh, S., Bandyopadhyay, B., S. (Eds.). (2010). Of horizons and beyond: Glimpses of lesbian, bisexual women and transpersons lives. Kolkata: Sappho for Equality.

§ Ghosh, S., Bandyopadhyay, B., S. & Biswas, R., (2011). Vio-Map: Documenting and mapping violence and rights violation taking place in the lives of sexually marginalized women to chart out effective advocacy strategies. Kolkata: Sappho For Equality.

§ Hart, P. (Producer & Director). (2010). Orchids: My intersex adventure [Documentary]. (Available from Women Make Movies, www.wmm.com).

§ Human Rights Commission of the City & County of San Francisco. 2005. A human rights investigation into the medical “normalization” of intersex people.(http://www.sfhrc.org/modules/showdocument.aspx?documentid=1798).

§ Kessler, S., McKenna, W. (1978). Gender: An ethno-methodological approach. Chicago: University of Chicago Press.

§ Living Smile Vidya, (2007). I am Vidya. (V. Ramnarayan, Trans.). Chennai. Oxygen Books.

§ Narrain, A., Bhan, G. (Eds.). (2005). Because I have a voice: Queer politics in India. New Delhi. Yoda Press.

§ Narrain, A., Gupta, A. (Eds.). (2011). Law like love : Queer perspectives on law. Delhi: Yoda Press.

§ Reddy, G. (2006). With respect to sex: Negotiating hijra identity in south India. New Delhi. Yoda Press.

§ Research Centre On Violence Against Women, Tata Institute Of Social Sciences. (2003). The nature of violence faced by lesbian women in India. Mumbai. Fernandez, B. & Gomathy, N. B. (2003).

§ Revathi, A. (2010). The truth about me: A hijra life story. (V. Geetha, Trans.). New Delhi. Penguin Books.

§ Sharma, M. (2006). Loving women: Being lesbian in unprivileged India. Yoda Press: New Delhi.

§ Stryker, S., Whittle, S. (Eds.). (2006). The transgender studies reader. New York. Routledge.